चुने हुए
राष्ट्रीय गीत

चुने हुए
राष्ट्रीय गीत



मीना अग्रवाल

विद्या विहार, नयी दिल्ली-2

प्रकाशक विद्या विहार
१६८५ कूचा दखनीराय
दरियागंज नई दिल्ली ११०००२

संस्करण: १९९२
मूल्य एक सौ रुपए
मुद्रक राधा प्रेस गांधी नगर दिल्ली

CHUNE HUE RASHTRIYA GEET
Ed. Dr. Meena Agrawal Rs. 100.00

निवेदन

भारत अपने अतीत गौरव की अमर गाथाओ के साथ आज भी एक विशाल राष्ट्र है। यहा अनेक धम, मत, सप्रदाय व जातिया के लोग निवास करते हैं। विभिन्न प्रातो की अपनी अपनी परम्पराए और भाषाए हैं किन्तु इस भिन्नता मे भी पग पग पर एकता विद्यमान है। विभिन्नताओ की तह मे व्याप्त एकता और समता विभिन्नताओ को ठीक उसी तरह पिरो लेती है और पिरोकर एक सुन्दर समूह बना देती है जसे रेशमी धागा भिन्न भिन्न प्रकार और भिन्न-भिन्न रग के पुष्पो को पिरोकर एक सुन्दर हार तैयार कर देता है। यह भाव केवल काव्य की सुन्दर कल्पना ही नही है, वरन् भारतीय सस्कृति की महानतम विशेषता का ऐतिहासिक तथ्य है।

भारत का इतिहास इस बात का साक्षी है कि जब जब आक्राताओ ने हमारी सीमाओ को पददलित करने का दुष्प्रयास किया है, तब-तब राष्ट्र का एक एक युवक अपनी स्वतन्त्रता की रक्षा के लिए प्रस्तुत हुआ है। राष्ट्रीयता की यह भावना किसी युग विशेष की देन नहीं है, वरन् प्राचीन काल से ही इस धरती के कण कण और प्रत्येक भारतीय के मन मे पल्लवित होती रही है।

राष्ट्रीयता कोई स्थूल पदाथ नहीं है जिसे देखा जा सके, यह तो आत्मिक और मनोवैज्ञानिक भावना है, जिसको अनुभूत किया जा सकता है।

भारतीय कवि और साहित्यकार प्रारम्भ से ही राष्ट्रीयता की पवित्र भावना को अपने काव्य और चिंतन का विषय बनाते रहे हैं जब जब भी आवश्यकता हुई है, कवियो ने वीरो की शिराओं मे बहते रक्त की गति को तीव्र करने के लिए ओज और वीरता के गीत गाए हैं ताकि शत्रु की ललकार को अपने लिए चुनौती मानकर वे राष्ट्रीय सीमाओ की सुरक्षा मे अपना सवस्व होम कर दें।

इस सकलन मे देश प्रेम और राष्ट्र प्रेम के ऐसे अनेक गीतो को सकलित किया गया है, जो हमारे स्वातन्त्र्य-समर का इतिहास लिखने मे सहायक हुए हैं। साथ ही ऐसी राष्ट्रीय कविताओ का सकलन भी हुआ है, जो पूणत गेय

हैं और जिन्हें विद्यालयों में वाद्यवृंद के साथ गाया जा सकता है।

उपयोगिता के दृष्टिकोण से विद्यालयों में आयोजित किए जाने वाले अन्य उत्सवों, यथा—वसंत पंचमी, होली, स्वतंत्रता दिवस, गांधी-जयन्ती तथा बाल दिवस आदि पर गान योग्य कतिपय गीत भी इस संकलन में सम्मिलित किए गए हैं।

मुझे विश्वास है कि भारत के 'गौरव गान' के लिए समर्पित इस संकलन का स्वागत होगा। मैं उन सभी गीतकारों और कवियों के प्रति विशेष रूप से आभारी हूं, जिनकी रचनाओं के पुष्प मां भारती के चरणों में अर्पित किए गए हैं।

साहित्य विहार,
बिजनौर (उ० प्र०)

—डॉ० मीना अग्रवाल

अनुक्रम

अंगार है साथी

उसे भी देख जो भीतर भरा अंगार है साथी

शिखर पर तू न तेरी राह बाकी दाहिने बाएं,
खड़ी आगे दरी यह मौत-सी विकराल मुंह बाए,
कदम पीछे हटाया तो अभी ईमान जाता है,
उछल जा, कूद जा, पल में दरी यह पार है साथी।

न रुकना है तुझे, झण्डा उड़ा केवल पहाड़ों पर,
विजय पानी है तुझको चांद सूरज पर, सितारों पर,
वधू रहती जहां नरवीर की, तलवार वालों की,
जमीं वह इस जरा से आसमां के पार है साथी।

भुजाओं पर मही का भार, फूलों-सा उठाए जा,
कंपाए जा गगन को, इन्द्र का आसन हिलाए जा,
जहां में एक ही है रोशनी, वह नाम की तेरे,
जमीं जो एक तेरी आग का आधार है साथी।

● रामधारी सिंह 'दिनकर'

अग्निपथ

अग्निपथ ! अग्निपथ ! अग्निपथ !
वृक्ष हो भले खड़े
हों घने हों बड़े
एक पत्र छाँह भी
माँग मत ! माँग मत ! माँग मत !

तू न थकेगा कभी
तू न थमेगा कभी
तू न मुड़ेगा कभी
कर शपथ ! कर शपथ ! कर शपथ !

यह महान दृश्य है
चल रहा मनुष्य है
अश्रु-स्वेद रक्त से
लथ पथ ! लथ पथ ! लथ पथ !
अग्निपथ ! अग्निपथ ! अग्निपथ !

● हरिवंशराय 'बच्चन'

अब जागा भाग्य हमारा

अब जागा भाग्य हमारा !
आज कटे माता के बन्धन, टूटी युग की कारा।
खुले द्वार हैं मातृ मन्दिर के, गूंजा भारत सारा।

अवनी अपनी, अम्बर अपना, सूरज-चांद हमारा।
गंगाजल की लहरें बोलीं, अपना हुआ किनारा।

बोल उठा भारत का कण-कण, शुभ बलिदान हमारा।
हैं स्वतन्त्र हम भारतवासी, सबने यही पुकारा।

● कविवर हंस

अभियान-गीत

चलो आज इस जीर्ण पुरातन
भव में नव निर्माण करो,
युग युग से पिसती आई
मानवता का कल्याण करो।

बोलो कब तक सडा करोगे
तुम यो गन्दी गलियो मे ?
पथ के कुत्तो से भी जीवन
अधम सभाल पसलियो मे ?

दोगे शाप विधाता को लख
धनकुबेर रगरलियो मे,
किन्तु न जानोगे अपने को
क्योकि घिरे हो छलियो मे।

कोटि कोटि शोषित पीडित तुम
उठो आज निज त्राण करो ?
बढो आज इस जीर्ण पुरातन
भव मे नव निर्माण करो ?

उठो किसानो ! देखो तुमने
जग का पोषण-भरण किया,
किन्तु तुम्ही भूखे सो रहते
हूक छिपाए, मूक हिया।

रात-रात भर दिन-दिन भर
तुमने शोणित का दान दिया,
मिट्टी तोड उगाया अकुर,
ग्राम मरा, पर नगर जिया !

तुम अगणित नगे भिखमगे
अधिक न मन म्रियमाण करो,
चलो, आज इस जीर्ण पुरातन
भव मे नव निर्माण करो।

व्यर्थ ज्ञान विज्ञान सभी कुछ
समझो अब है आज यहा,
घर मे जब यो आग लगी है
घर की जाती लाज जहा !

राज्य तत्र के यत्र बने
धनपति करते है राज जहा,
यह क्या किया पाप तुमने ?
घुटते जीवन के साज यहा !

आग फूक दो कगालों मे
ककालो मे प्राण भरो !
उठो आज इस जीर्ण पुरातन
भव मे नव निर्माण करो !

● सोहनलाल द्विवेदी

अमर रहे स्वातन्त्र्य

अमर रहे, स्वातन्त्र्य हमारा !
युग-युग मुक्त गगन मे लहरे,
विजयी विश्व तिरगा प्यारा !

महक रही धरती खुशबू से,
इन्द्र धनुष अम्बर मे फूले।
मन प्राणो मे नयी उमगें
नयन नयन मे सपने झूले।
ज्योतिमय सुख की किरणो ने,
काट दिया दुख का अँधियारा !
अमर रहे, स्वातन्त्र्य हमारा !

सिर से कफन बाध जो निकले,
सीने पर हस गोली खायी।
देश-प्रेम का प्याला पीकर,
झूम-झूम ज्वाला भडकायी।
पुण्य-पथ पर उन्हे न भूलें,
जिनने दुश्मन को ललकारा।
अमर रहे, स्वातन्त्र्य हमारा !

आजादी की खातिर जिनने,
बलिवदी पर प्राण चढाए।
पग-पग सघर्षों से जूझे
अगारो पर कदम बढाए।

श्रद्धा-सुमन समर्पित उनको,
जिनने अपना सब-कुछ वारा!
अमर रहे, स्वातन्त्र्य हमारा!

वे अब भी अज्ञात कि जिनने
केवल तिल-तिल मिटना जाना।
टूट गए, पर झुके न तिल-भर,
सदा देश को सब-कुछ माना।
उनकी याद हरी हो आयी,
उमड़ पड़ी आंसू की धारा!
अमर रहे, स्वातन्त्र्य हमारा!

अमर शहीदों की समाधियां,
बलिदानी गाथाएं गातीं।
चिर उपेक्षिता भले रही हों—
फिर भी फूली नहीं समातीं।
गीले नयन नमन उन सबको,
जिनने मिटकर देश संवारा!
अमर रहे, स्वातन्त्र्य हमारा!

● नर्मदाप्रसाद खरे

अमर शहीदो के सपने हम

तन काबा, मन पावन काशी, आखो मे हरिद्वार है।
भारत माता के चरणो मे प्यारा घर-ससार है।

त्याग तपस्या की ऋतुओ मे प्रलय-गोद मे हम फूले।
आधी मे हम पख लगाकर, बिजली के पलने झूले।
सासो की बनजारिन गाती होली, फाग, मल्हार है।

कल के नये सबेरे हम हैं, धरती के उत्थान है।
श्रम से हम तक्दीर बदलते, तूफानी अभियान है।
आजादी ही धर्म हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है।

अमर शहीदो के सपने हम, भारत के इतिहास है।
सोधी मिटटी के होठो पर गीतो के मधुमास है।
जीवन-वीणा सदा छेडती समता की झकार है।

जात-पात के बधन हमने पल-भर मे ही खोल है,
रातो की काली वशी में सूरज के स्वर घोले है।
नयी उमर की, नयी फसल की हमसे नयी बहार है।

● रमेश सोनी 'मधुकर'

आगे बढते जायेगे

हम भारत के नये सिपाही आगे बढते जाएगे।
वक्त पडा तो अगारो पर चलकर भी मुसकाएगे।

चाहे जितना अंधकार हो, या चढाव हो, या उतार हो—
हिम्मत कभी न हारेंगे हम, हसती सुबह बुलाएगे।

हमने कभी न झुकना सीखा, नही राह मे रुकना सीखा,
अपने घर मे आने वाले दुश्मन को दहलाएगे।

सच है, फूलो मे हम कोमल, पर रखते तूफानी हलचल,
मिले न हमको जब तक मजिल चैन नही हम पाएगे।

● देवप्रकाश गुप्त

आगे बढ चलेगे

यदि रक्त बूद भर भी होगा कही बदन मे,
नस एक भी फडकती होगी समस्त तन मे,
यदि एक भी रहेगी बाकी तरग मन मे,
हर एक सास पर हम आगे बढे चलेंगे।
वह लक्ष्य सामने है, पीछे नही टलेंगे।

मजिल बहुत बडी है पर शाम ढल रही है,
सरिता मुसीबतो की आगे उबल रही है,
तूफान उठ रहा है, प्रलयाग्नि जल रही है,
हम प्राण होम देंगे, हसते हुए जलेगे।
पीछे नही टलेंगे, आगे बढे चलेंगे।

अचरज नही कि साथी भग जाए छोड भय मे,
घबराए क्यो, खडे है भगवान जो हृदय मे,
धुन ध्यान मे धसी है, विश्वास है विजय मे,
बस और चाहिए क्या, दम एकदम न लेंगे।
जब तक पहुच न लेगे, आगे बढे चलेगे।

● रामनरेश त्रिपाठी

आज चुकाना है ऋण तुमको अपनी मा के प्यार का !

उठो, साथियो ! समय नही है यह शोभा-शृंगार का।
आज चुकाना है ऋण तुमको अपनी मा के प्यार का।

प्राण हथेली पर रख-रखकर, चलना है मैदान मे।
फर्क नही आने देना है देश, जाति की शान मे।
सबके आगे एक प्रश्न है सीमा के अधिकार का।
उठो, साथियो ! समय नही है यह शोभा-शृंगार का।

बच्चे-बच्चे के हाथो मे हिम्मत का हथियार दो।
जो दुश्मन चढकर आया है उसको बढकर मार दो।
समय नही है यह फूलों का, अगारो के हार का।
आज चुकाना है ऋण तुमको अपनी मा के प्यार का।

सबसे बढकर शक्ति समय की आज तुम्हारे पास है।
तुम्हें खून से अपने लिखना आज नया इतिहास है।
दुश्मन घुस आया भीतर, तो क्या होगा घर-बार का।
उठो, साथियो ! समय नही है यह शोभा-शृंगार का।
आज चुकाना है ऋण तुमको अपनी मा के प्यार का।

● निरकारदेव सेवक

आज हिमालय ने मांगी है भारत से कुर्बानी

राष्ट्र वंदना की वेला में कैसी आनाकानी,
आज हिमालय ने मांगी है भारत से कुर्बानी।

हरियाली पर किसी बड़े पतझड़ की आंख गड़ी है,
भगवी पावनता पर कोई शैतानी बिगड़ी है।
सत्य सफेदी पर दुश्मन कालिख मलने आया है,
शांति चक्र को संघर्षों का भय छलने आया है।

किन्तु तिरंगा किसी शक्ति के आगे नहीं झुका है,
नभ की छाती पर फहरा है यह झंडा अभिमानी।
आज हिमालय ने मांगी है भारत से कुर्बानी।

नादिरशाह, गजनवी, चंगेजों को लौटा देंगे,
आग बिछी है—अगर बढ़े तो लोहू ओटा देंगे।
'गौतम' के भोले भारत में 'भीम' भयंकर भी हैं,
'भस्मासुर की खातिर 'शिव शंकर'—प्रलयंकर भी हैं।

इतिहासों की गहराई में विश्वासों की जड़ है,
भारत है प्राचीन, चीन है नया, नयी नादानी।
आज हिमालय ने मांगी है भारत से कुर्बानी।

हरी-भरी फसलें वल खाती हैं मेरे खेतों में,
नहरें अठखेली करती हैं राजस्थानी रेतों में।
बाँध उगलते बिजली लोहे को भी गला रहे हैं,
शक्ति अभी छोटी है उँगली पकड़े चला रहे हैं।

उन्नति की पहली सीढ़ी पर पहला कदम पड़ा है,
प्रजातन्त्र को खोज रही है फिर सामंती वाणी।
आज हिमालय ने मांगी है भारत से कुर्बानी।

● राममनोहर त्रिपाठी

आजादी अपने देश की

सींचेंगे जीवन देकर आजादी अपने देश की।

शीश उठाये बढ़ते हैं हम अपने पथ पर शान से।
उड़ने लगी गन्ध तहजीबी मेरे हिन्दुस्तान से।
गाते हैं हम मधुर रागिनी अमन भरे सन्देश की।
सींचेंगे जीवन देकर आजादी अपने देश की।

अँधियारे को काट रहे हैं तेज किरण के तीर से।
दर्द करेंगे दूर, देश के घावों भरे शरीर से।
दे डालेंगे इसको आहुति अपनी उम्र अशेष की।
सींचेंगे जीवन देकर आजादी अपने देश की।

दैन्य-गरीबी जहां युगों से बने हुए अभिशाप हैं।
और वहीं फैले वैभव के काले क्रिया कलाप हैं।
हमें समझनी होगी कीमत समता के आदेश की।
सींचेंगे जीवन देकर आजादी अपने देश की।

प्रश्न-चिह्न यदि कोई देगा आजादी के नाम पर।
मेरे भारत का तब होगा बच्चा बच्चा लाभ पर।
क्योंकि यही पावन धरती है असुरजयी अवधेश की।
सींचेंगे जीवन देकर आजादी अपने देश की।

● विद्यानन्दन राजीव

आया फिर झूमता पंद्रह अगस्त

ऋतुओं की बाहो मे गुनगुनी हवाएं—
रंगने लगी मोरपंखी चूनरी दिशाएं।
धूप सोए किशमिशी महुआ के गांव मे,
सोंधापन लिपट गया बरखा के पांव मे।

हौसले तिमिर के आज हुए ध्वस्त।
आया फिर झूमता पन्द्रह अगस्त।

उन्नावी गीत उगे पुखराजी आंखो मे,
छंद बुने तितली ने केसर की पांखो मे।
उग आयी मेडो पर अलसायी बाहे,
कजरारी कोयलिया गजल-गीत गाए।

सम्बोधन भावो के हुए अलमस्त।
आया फिर झूमता पन्द्रह अगस्त।

हंसी लगे मुक्तक सी बहती बयार की,
सपनो मे झांक गई गन्ध एक प्यार की।
सूरज ज्यो बादल का कुमकुमी निबन्ध,
गीत-गीत भोर हुआ, किरण हुई छंद।

कुंठा को आशा ने फिर दी शिकस्त।
आया फिर झूमता पन्द्रह अगस्त।

● सुरेश नीरव

इन्कलाव आने को है

बाध ले विस्तर फिरगी राज अब जाने को है,
जुल्म काफी कर चुके, पब्लिक बिगड जाने को है।

गोलिया तो खा चुके अब तोप भी हम देख ल,
मर-मिटेगे देश पर फिर इन्कलाव आने को है।

वीर जो इस जेल मे है कौम के वो नाखुदा,[1]
जेलखाना तोड देगे यह हवा चलने को है।

कह रहे हैं बाबा गाधी मान लो शर्ते तमाम,
वरना फिर नक्शा हुकूमत का पलट जाने को है।

आ गए है अब पटल भी कारजारे-हिन्द[2] मे,
देखा तुम राज शाही बेनवाय होने को है।

लिख दो गाधी ने यह चिट्ठी आखिरी इरविन के नाम,
अब सभल जा फिरगी वरना मिटा मिटने को है।

मालवीय ने वार अपना कर दिया इग्लैण्ड पर,
देखना अब मानचेस्टर भी उजड जाने को है।

● आजाद

---

१ कर्णधार। २ भारत का स्वाधीनता-सग्राम।

इतकाम लेना है

बहादुराने-वतन, ऐ बिरादराने-वतन,
न भूलना कि तुम्हे इतकाम लेना है !

लुटे हैं जिनकी हिमाकत से देवियो के सुहाग,
फनो को अब भी उठाए हैं वही काले नाग,
उगल रहे हैं मुसलसिल कयामतो की आग,
कसम है, जोशे-जवानी की है कसम तुमको—
न भूलना कि तुम्हे इतकाम लेना है !
बहादुराने-वतन

जो दर्द हद से गुजर जाए, फिर दवा क्या है,
जो रूह तन से निकल जाए, फिर दुआ क्या है,
गनीम सामने आ जाए, फिर दया क्या है,
कसम है, गौतमो गाधी की है कसम तुमको—
न छोडना कि तुम्हे इतकाम लेना है !
बहादुराने-वतन

तुम्हारी कुव्वते-बाजू का ही सहारा है,
तुम्हे लुटे हुए बगाल ने पुकारा है,
कदम बढाओ, इलाका सभी तुम्हारा है,
भरी तफग की गोली की है कसम तुमको—
न चूकना कि तुम्हें इतकाम लेना है !
बहादुराने-वतन

जो 'कल्मा' जग का कोई पढे तो फिर न हटे,
वो सूरमा है, जो रन पर चढे तो फिर न हटे,
कदम वही है, आगे बढे तो फिर न हटे,
कसम है, हिम्मतो-मर्दी की है कसम तुमको—
न लौटना कि तुम्हे इतकाम लेना है।
बहादुराने-वतन

● बेदिल हाथरस

उठो स्वदेश के लिए

उठो स्वदेश के लिए, बने कराल काल तुम,
उठो स्वदेश के लिए, बने विशाल ढाल तुम।

उठो हिमाद्रि शृंग से, तुम्हें प्रजा पुकारती,
उठो प्रशस्त पन्थ पर, बढ़ो सुबुद्ध भारती।

जगो विराट देश के, तरुण तुम्हें निहारते,
जगो अचल मचल विकल करुण तुम्हें दुलारते।

बढ़ो नयी जवानिया, सजी कि शीश झुक गए,
बढ़ो मिली कहानिया, कि प्रेम-गीत रुक गए।

चलो कि आज स्वत्व का, समर तुम्हें पुकारता,
चलो कि देश का तुम्हें, सुमन-सुमन निहारता।

जगो, उठो, चलो, बढ़ो, लिये कलम कराल सी,
अरे जो शत्रु सैन्य को, डसे तुरत व्याल सी।

उठो स्वदेश के लिए, बने कराल काल तुम।
उठो स्वदेश के लिए, बने विशाल ढाल तुम।

● क्षेमचन्द्र 'सुमन'

एकता अमर रहे

देश है अधीर रे।
अग अग-पीर रे।
वक्त की पुकार पर,
उठ जवान वीर रे।

दिग-दिगत स्वर रहे।
एकता अमर रहे ।।
एकता अमर रहे ।।

गृह-कलह से क्षीण आज देश का विकास है,
कशमकश मे शक्ति का सदैव दुरुपयोग है।
है अनेक दृष्टिकोण, लिप्त स्वार्थ साध मे,
व्यग्य-बाण-पद्धति का हो रहा प्रयोग है।

देश की महानता,
श्रेष्ठता, प्रधानता,
प्रश्न है समक्ष आज,
कौन, कितनी जानता ?

सूत्र सब बिखर रहे है।
एकता अमर रहे ।।
एकता अमर रहे ।।

राष्ट्र की विचारवान शक्तियां सचेत हों,
है प्रत्येक पग अनीति एकता-प्रयास में।
तोड़-फोड़, जोड़-तोड़ युक्त कामना प्रवीण,
सिद्धि प्राप्त कर रही है धर्म के लिबास में।

बन न जाए धूलि कण,
स्वत्व के प्रदीप्त प्रण,
यह विभक्ति-भावना,
दे न जाए और व्रण,

चेतना प्रखर रहे!
एकता अमर रहे!!
एकता अमर रहे!!

संगठित प्रयाण से देश कीर्तिमान् हो,
आंच तक न आ सकेगी, इस धरा महान् को।
शत्रु जो छिपे हुए हैं मित्रता की आड़ में,
कर न पाएंगे अशक्त देश के विधान को।

पन्थ हो न सकरा,
यह महान उवरा,
इसलिए उठो, बढ़ो!
जगमगाएगी धरा,

हम सचेत गर रहें!
एकता अमर रहे!!
एकता अमर रहे!!

ज्योति के समान शस्य-श्यामला चमक उठे,
और लौ-से पुष्प प्राण कीर्ति की गमक उठे।
यत्न हो सदैव हो रख यथार्थ सामने,
धर्मशील भाव से नित्य नव दमक उठे।

भव्य भाव युक्त मन,
अरु प्रत्येक संगठन,
प्रण, प्रवीण साध ले,
नव भविष्य-नींव बन,

दृष्टि लक्ष्य पर रहे।
एकता अमर रहे ॥
एकता अमर रहे ॥

● ताराचन्द पाल 'बेकल'

एकता-गीत

मेरी जा न रहे मेरा सर न रहे,
सामा न रहे, न ये साज रहे।
फकत हिंद मेरा आजाद रहे,
मेरी माता के सर पर ताज रहे।

सिख, हिन्दू, मुसलमा एक रहें,
भाई-भाई-सा रस्मरिवाज रहे।
गुरु ग्रंथ कुरान पुराण रहे,
मेरी पूजा रहे ओ नमाज रहे।
मेरी जा न रहे मेरा सर न रहे,
सामा न रहे न ये साज रहे।

मेरी टूटी मड़ैया मे राज रहे,
कोई गैर न दस्तन्दाज रहे।
मेरी बीन के तार मिलें हो सभी,
इक भीनी मधुर आवाज रहे।

ये किसान मेरे खुशहाल रहे,
पूरी हो फसल सुख-साज रहे।
मेरे बच्चे वतन पे निसार रहें,
मेरी मा-बहनो की लाज रहे।
मेरी जा न रहे मेरा सर न रहें
सामा न रहे, न ये साज रहे।

मेरी गायें रहे, मेरे बैल रहें,
घर-घर मे भरा सब नाज रहे।
घी-दूध की नदिया बहती रहे,
हरसू आनन्द स्वराज रहे।

माधो की है चाह खुदा की कसम,
मेरे बाद वफात ये बाज रहे
गाढे का कफन हो मुझ पे पड़ा,
'वन्दे मातरम्' अलफाज रहे।
मेरी जा न रहे मेरा सर न रहे,
सामा न रहे न ये साज रहे।

● माधव शुक्ल

एकला चलो रे

यदि तोर डाक शुने केऊ न आसे
तबे एकला चलो रे !
एकला चलो, एकला चलो, एकला चलो रे !

यदि केउ कथा ना कोय, ओरे, ओरे, ओ अभागा,
यदि सबाई थाके मुख फिराय, सबाई करे भय—
तबे परान खुले

ओ, तुई मुख फूटे तोर मनेर कथा एकला बोलो रे !
यदि सबाइ फिरे जाय, ओरे, ओरे, ओ अभागा,
यदि गहन पथे जाबार काले केउ फिरे न जाय—
तबे पथेर काटा

ओ, तुई रक्तमाला चरन तले एकला दलो रे !
यदि आलो ना धरे ओरे, ओरे ओ अभागा—
यदि झड बादले आधार राते दुयार देय घरे—
तबे वज्रानले

आपुन बुकेर पाजर जालिये निये एकला जलो रे !

● रवीन्द्रनाथ ठाकुर

एक हमारी मंजिल

हम सब राही एक सफर के
एक हमारी मंजिल,
एक हमारी मंजिल।

साहिल-साहिल सागर-सागर
हंसते गाते जाएंगे
गीत मिलन के गाएंगे
हम सब राही एक सफर के
एक हमारी मंजिल।

नाम हमारे अलग-अलग हैं
काम हमारा एक
ठोर ठिकाने अपने-अपने
वंश हमारा एक
हम सब राही एक सफर के
एक हमारी मंजिल।

कंधा-कंधा जोड़ के हमने
पंक्ति एक बनाई
मिलकर पर्वत बन जाता है
दाना - दाना राई
हम सब राही एक सफर के
एक हमारी मंजिल।

कोई न हमको तोड सका है
कोई न हमको तोड सके
कौन थपेडा ऐसा है जो
राह हमारी मोड सके
हम सब राही एक सफर के
एक हमारी मंजिल।

● निश्तर खानकाही

ऐ हवा, ऐ हवा

ऐ हवा, ऐ हवा, ऐ हवा !

पर्वतो मे घटाओ को लाती हुई
पेड पौधो को झूला झुलाती हुई
सागरो से हिमालय की ऊचाई तक
यह अमानत कि जो हमको सौंपी गई

इसके वारिस हैं हम
इसके वारिस हैं हम
ऐ हवा, ऐ हवा, ऐ हवा !

तेरी लहरो मे खुशबू है उस खून की
जिससे इस पाक धरती को सीचा गया
नर्म झोका भी तू, तेज आधी भी तू
हमने सीखा है तुझसे सलीका तेरा

कितनी आजाद तू
कितने आजाद हम
ऐ हवा ऐ हवा, ऐ हवा !

अपने घर की हिफाजत हमारा चलन
हर पडोसी की चाहत हमारा चलन
बस्ती बस्ती है जीवन की सौगात तू
आदमी से मुहब्बत हमारा चलन
ऐ हवा, ऐ हवा, ऐ हवा !

● निश्तर खानकाही

ओ देश के मेरे जवान !

चन्द्रमा ओझल न हो जाए,
सूर्य ठंडा जल न हो जाए,
इसलिए ओ देश के मेरे जवान !
आज तो सिर पर उठा ले आसमान !

राह तेरी देखती हैं आंधियां,
बिजलियां तेरे पगों में खेलतीं,
ये भुजाएं सिंधु मथती हैं सदा—
वार कितने ही समय के झेलतीं !

वीरता वह याद हो आए,
शत्रुता बरबाद हो जाए,
इसलिए ओ देश के मेरे जवान !
फिर उड़ा संसार पर अपने विमान !

आग की जंजीर में आजाद हो—
तू चिता में मुस्कराता फूल है,
फूल है तो शीश पर चढ़, अन्यथा—
पांव के नीचे धरा की धूल है !

मृत्यु भी अभिमान बन जाए,
जन्म भी वरदान बन जाए,
इसलिए ओ देश के मेरे जवान !
तीर बनकर फोड़ दे काला निशान !

जीतकर सौन्दर्य मन का विश्व मे,
साथ ही तन की विजय भी चाहिए,
गूजता है सत्य यह इतिहास का
जन्म लेने को प्रलय भी चाहिए !

सास हर तूफान हो जाए,
देश आलीशान हो जाए,
इसलिए ओ देश के मेरे जवान !
आज फिर बन जा हिमालय-सा महान !

एक होकर भी अकेला तू नही,
साथ तेरे प्रेम ओ विश्वास है,
तू बहुत कोमल कमल-सा है, मगर—
वज्र-जैसा वक्ष तेरे पास है !

खेत ओ' खलिहान भर जाए,
देह को बलवान कर जाए,
इसलिए ओ देश के मेरे जवान !
जाग, बन मजदूर मेहनतकश किसान !

● मधुर शास्त्री

ओ नौजवान, देश के उठो

ओ नौजवान, देश के उठो, उठो, उठो !
ओ सुत महान, देश के उठो, उठो, उठो !

प्रभात की सुवर्ण रश्मियां जगा रहीं,
विहग टोलियां अरुण-विहाग गा रहीं।
सिमिट-सिमिट क्षितिज के पार जा रही निशा,
उमग से भरी जवानियां जगा रहीं।

नवीन चेतना नवीन जागरण लिये
ओ स्वाभिमान, देश के, उठो, उठो, उठो !

दे लोरियां थी गोद मे सुला रही तुम्हे,
हो त्रस्त आज मातु है बुला रही तुम्हे।
क्यों मोह मे पडे हो पुत्र, नींद ले रहे,
ये घातिनी है राह से भुला रही तुम्हे।

सुनो मयूर डाल पर हैं बैठ गा रहे—
ओ सुप्त प्राण देश के। उठो, उठो, उठो !

कंप रहा है आसमान कंप रही धरा,
है द्वेष अग्नि मे हो मानवत्व जल मरा।
कराह, आह, वेदना भरी पुकार से,
चतुर्दिगन्त विश्व-व्योम आज है भरा।

समस्त शक्तियां सुसंगठित किए हुए,
ओ शक्तिवान, देश के, उठो, उठो, उठो !

उठो स्वतन्त्र देश की लिये मशाल तुम,
रखो समुच्च गर्व से हिमाद्रि भाल तुम ।
बनो स्वदेश शत्रु के समक्ष काल तुम,
रचो सुदृढ़, सुसंगठित, अजय दिवाल तुम ।

स्वराष्ट्र भाग्य-सूत्र आज हाथ में लिये,
ओ भाग्यवान, देश के उठो, उठो, उठो !

जगा रही तुम्हें अतीत की कहानियां,
स्वतन्त्र देश-द्वीप पर मिटी निशानियां ।
पंजाब, काश्मीर, बंग भू जगा रही,
जगा रही सुहाग से लुटी जवानियां ।

स्वदेशहित शिवा, प्रताप सा विराग ले,
व्रती महान् देश के, उठो, उठो, उठो !

ओ सपूत भारती !

ओ सपूत भारती ! ओ सपूत भारती !
फिर वतन की राह पर चलो, वतन पुकारती,
यह धरा पुकारती, तुम्हे गगन पुकारता,
ओ चमन के मालियो, उठो, चमन पुकारता,

हर सुमन पुकारता कि हर कली पुकारती !
ओ सपूत भारती ! ओ सपूत भारती !

मा स्वय सहर्ष शीश पुत्र का चढा रही,
खून से बहिन खडी हुई तिलक लगा रही,
देश की सुहागिने सुहाग फिर लुटा रही,

वीर नारिया सगर्व शीश-फूल वारती !
ओ सपूत भारती ! ओ सपूत भारती !

अब न बुद्ध की दया, प्रबुद्ध जोश चाहिए,
चाहिए न शाति, ओ सपूत ! रोष चाहिए,
तू 'सुभाष' बन, सुभाषचन्द्र बोस चाहिए,

भूमि देश की, प्रवीर ! मौन पथ निहारती !
ओ सपूत भारती ! ओ सपूत भारती !

जन्म ले नवीन आज चल पडे शहीद फिर,
फिर भडक उठे युवक, मचल पडे शहीद फिर,
तोडकर समाधिया, निकल पडे शहीद फिर,

लाश हर शहीद की उठी कफन उघारती !
ओ सपूत भारती ! ओ सपूत भारती !

● वीरकुमार 'अधीर'

कलम, आज उनकी जय बोल

कलम, आज उनकी जय बोल !

जो अगणित लघु दीप हमारे,
तूफानों में एक किनारे,
जल-जलकर बुझ गए किसी दिन—
मांगा नहीं स्नेह मुंह खोल !
कलम, आज उनकी जय बोल !

पीकर जिनकी लाल शिखाएं,
उगल रही लपट दिशाएं,
जिनके सिंहनाद से सहमी—
धरती रही अभी तक डोल !
कलम, आज उनकी जय बोल !

● रामधारी सिंह 'दिनकर'

क्रान्ति-दीप

पश्चिम से घन अधकार ले
उतर पडी है काली रात,
कहती मेरा राज अकटक
होता जब तक नही प्रभात।

एक झोपडी मे उठती है
एक दिये की मद्धिम जोत,
अग्निवश की सब सतानें
सूरज हो चाहे खद्योत।

अग्निवश की आन यही है
और यही उसका इतिहास,
कितना ही तम हो, मत जाने
पाये ज्वाला मे विश्वास।

एक दिये से मिटा अधेरा
कितना, इस पर व्यर्थ विचार,
मैंने तो केवल यह देखा
नही विभा ने मानी हार।

दूर अभी किरणो की वेला
दूर अभी ऊषा का द्वार,
वाडव-दीपक शीश उठाता
कपता तम का पारावार।

हर दीपक मे द्रव विस्फोटक
हर दीपक-द्यु ति की ललकार
हर बत्ती विद्रोह पताका
हर लो विप्लव की हुकार।

● हरिवश राय 'बच्चन'

खडा हिमालय बता रहा है !

खडा हिमालय बता रहा है, डरो न आंधी पानी मे।
खडे रहो अपने ही पथ पर, कठिनाई - तूफानो मे।

डिगो न अपने पथ से तो फिर, सब कुछ पा सकते हो प्यारे।
तुम भी ऊचे हो सकते हो, छू सकते हो नभ के तारे।

अचल रहा जो अपने पथ पर, लाख मुसीबत आने मे।
मिली सफलता उसको जग मे, जीने में, मर जाने मे।

जितनी भी बाधाए आयी, उन सबसे है लडा हिमालय।
इसीलिए तो दुनिया-भर मे, हुआ सभी से बडा हिमालय।

गगन-गगन क्षितिज-क्षितिज

गगन-गगन क्षितिज-क्षितिज
हुमक हमारे गीत की,
झनक हमारे गीत की।

विजय-पताका हाथ मे लिये हुए हैं हम वहा
जहा हमारी राह मे खडा हुआ है आसमा
मगर वहा भी शाति की पुकार है जबा-जबा
गगन गगन क्षितिजि क्षितिज
हुमक हमारे गीत की,
झनक हमारे गीत की।

अधेरे युग मे रोशनी हमारे घर की धूप से
अतीत मे है दिलकशी हमारे ही स्वरूप से
यह जिन्दगी हसीनतर हमारे रग रूप से
गगन गगन क्षितिज-क्षितिज
हुमक हमारे गीत की,
झनक हमारे गीत की।

रतन है देवताओ का, ये स्वग-सी जमीन है
यह आसमा के पास से कुछ और भी हसीन है
क्षमा हमारा धम है, दया हमारा दीन है
गगन-गगन, क्षितिज-क्षितिज
हुमक हमारे गीत की
झनक हमारे गीत की।

● निश्तर खानकाही

चल रे नौजवान, चल

चल रे नौजवान चल,
चल रे नौजवान, चल।

जातियों के काफिले,
तुझने पीछे जो चले,
आगे वे गये निकल—
चल रे नौजवान, चल।

खड्ग तेरे दायें हाथ,
और विजय बायें हाथ,
मुश्किलों को कर सरल—
चल रे नौजवान, चल।

रास्ता उजाड़ है,
नदी और पहाड़ हैं,
उसमें चल सभल-सभल—
चल रे नौजवान, चल।

बन प्रताप के समान,
बैरियों को मार-मार,
दे मचा उथल-पुथल—
चल रे नौजवान, चल।

चाहे चली जाये जान,
जाने पाये नही आन,
अपनी बात से न टल—
चल रे नौजवान, चल।

चले जवान देश के

उठे जवान देश के, चले जवान देशके !

स्वदेश की पुकार पर, स्वदेश की गुहार पर,
डटे हुए है दम भरे स्वदेश-धर्म-प्यार पर—
अडे जवान देश के, बढे जवान देश के !

कि स्वाभिमान के लिए कि देश-मान के लिए,
निकल पडे है भारतीय, विश्व-त्राण के लिए—
बढे जवान देश के, चढे जवान देश के !

ससैन्य शत्रु-नाश कर, विनष्ट शत्रु-पाश कर,
अनीति-अधकार मेट, नीति-नवप्रकाश कर—
गडे निशान देश के, बढे जवान देश के !

स्ववश-सस्कार ले कि पूर्वजो का प्यार ले,
स्वधर्म-कर्म के लिए महानतम विचार ले—
बढे जवान देश के, चले जवान देश के !

● द्वारिका प्रसाद त्रिपाठी

चलो जवान देश के

चलो जवान देश के! बढ़ो महान् देश के!

युद्ध का कठिन समय, शान्ति है तुम्हें कहां?
जिधर विराट तू बढ़ा कि क्रान्ति है सतत वहां,
विजय-निशान देश के! चलो जवान देश के!

जहां रुधिर गिराएगा विजय वहीं खड़ी मिले,
तुम्हें दुलारने धरा गगन पुहुप-से खिल उठे,
अजेय प्राण देश के! चलो जवान देश के!

पहाड़ भी अगर मिले, मिला न आंख पाएगा,
भिड़ेगा यदि कुबुद्धि से, तो काल मात खाएगा,
अमर विहान देश के! चलो जवान देश के!

● गिरिराजशरण अग्रवाल

चलो जवानो ! हिमगिरि के शिखरो ने तुम्हे पुकारा है

सीमा पर है शोर, द्वार खटखटा रहा दोधारा है।
चलो जवानो ! हिमगिरि के शिखरो ने तुम्हें पुकारा है।

आज देश के गौरव को हमलावर ने ललकारा है।
बढो जवानो ! हिमगिरि के शिखरो ने तुम्हें पुकारा है।

मानसरोवर पर मोती चुगने कुछ बगुले मडराए।
सावधान ओ राजहस ! तन जाए—आन नही जाए।

धौलागिरि की हर चोटी पर अकित नाम तुम्हारा है।
बढो जवानो ! हिमगिरि के शिखरो ने तुम्हे पुकारा है।

उठो राम के वीर वशजो ! तुम्हें बुलाती रामायण।
अर्जुन की सन्तान ! उठो, करके गीता का पारायण।

पृष्ठ पलटने चला महाभारत कोई दोबारा है।
बढो जवानो ! हिमगिरि के शिखरो ने तुम्हे पुकारा है।

उठो प्रताप शिवा के बेटो ! वीर सैनिको, धनुधरो !
गुरु गोविन्दसिंह के सिक्खो ! धर्मयुद्ध मे जूझ मरो।

जाट-अहीरो ! वीर गूजरो ! अब इतिहास तुम्हारा है।
चलो जवानो ! हिमगिरि के शिखरों ने तुम्हे पुकारा है।

बचकर निकल न जाए हिमगिरि को घायल करने वाले।
खूनी चगेजो के वशज, युद्धो के जो मतवाले।

गीता का सदेश यही है, यह नेहरू का नारा है।
चलो जवाना ! हिमगिरि के शिखरो ने तुम्हे पुकारा है।

● त्रिलोकीनाथ 'रजन'

चेतावनी

जगो कि तुम हजार साल सो चुके,
जगो कि तुम हजार साल खो चुके,
जहान बस सजग-सचेत आज तो
तुम्ही रहो पड़े हुए न बेखबर !

उठो चुनौतियाँ मिली, जवाब दो
कदीम कौम-नस्ल का हिसाब दो,
उठो स्वराज्य के लिए खिराज दो,
उठो स्वदेश के लिए कसो कमर !

बढ़ो गनीम सामने खड़ा हुआ,
बढ़ो निशान जग का गढ़ा हुआ,
सुयश मिला कभी नही पड़ा हुआ,
मिटो, मगर लगे न दाग देश पर !

● हरिवंशराय 'बच्चन'

जन-गीत

जीवन मे फिर नया विहान हो,
एक प्राण, एक कठ-गान हो।

बीत अब रही विषाद की निशा,
दीखने लगी प्रयाण की दिशा,
गगन चूमता अभय निशान हो।

हम विभिन्न हो गए विनाश मे,
हम अभिन्न हो रहे विकास मे,
एक श्रेय, प्रेम अब समान हो।

शुद्ध स्वार्थ काम नीद से जगे,
लोक-कर्म मे महान् सब लगें,
रक्त मे उफान हो, उठान हो।

शोषित कोई कही न जन रहे,
पीडन अन्याय अब न मन सहे,
जीवन-शिल्पी प्रथम, प्रधान हो।

मुक्त व्यक्ति, सगठित समाज हो,
गुण ही जन-मन-किरीट, ताज हो
नव-युग का अब नया विधान हो।

जननी जन्म-भूमि

जननी जन्मभूमि स्वर्ग से महान् है।
इसके वास्ते ये तन है मन है, और प्राण है।

इसके कण-कण मे लिखा राम कृष्ण नाम है,
हुतात्माओ के रुधिर से भूमि शस्य श्याम है,
धर्म का ये धाम है सदा इसे प्रणाम है,

स्वतन्त्र है यह धरा, स्वतन्त्र आसमान है।
जननी जन्मभूमि स्वर्ग से महान् है।

इसकी आन पे अगर जो बात कोई आ पडे,
इसके सामने जो जुल्म के पहाड हो खडे,
शत्रु सब जहान हो, विरुद्ध विधि-विधान हो—

मुकाबला करेंगे जब तक जान में ये जान है।
जननी जन्मभूमि स्वर्ग से महान् है।

इसकी गोद मे हजारो गगा-यमुना झूमती,
इसके पर्वतो की चोटिया गगन को चूमती,
भूमि ये महान् है, निरालो इसकी शान है—

इसकी जय पताका ही स्वय निशान है।
जननी जन्मभूमि स्वर्ग से महान् है।

जय जय जय ! बढ़ो अभय

फूको शंख, ध्वजाएं फहरें
चले कोटि सेना, घन घहरें ।
मचे प्रलय !
बढ़ो अभय !
जय जय जय !

जननी के योद्धा सेनानी,
अमर तुम्हारी है कुर्बानी,
हे प्रणमय !
हे व्रणमय !
बढ़ो अभय !

नित पददलित प्रजा के क्रंदन
अब न सहे जाते हैं बंधन !
करुणामय !
बढ़ो अभय !
जय जय जय !

बलि पर बलि ले चलो निरंतर
हो भारत में आज युगान्तर,
हे बलमय !
हे बलिमय !
बढ़ो अभय !

कोटि-कोटि नित नत कर माथा,
जनगण गावें गौरव-गाथा,
तुम अक्षय !
अमर अजय !
जय जय जय !

जननी के मन-प्राण-हृदय !
जय जय जय !
बढ़ो अभय !

● सोहनलाल द्विवेदी

जय-जय जाग्रत हे !

जय-जय जाग्रत हे !
जय-जय भारत हे !

रण प्रण-बद्ध-विपुल सेना दल,
उठे युगों के ज्यों गौरव-बल,
आज मुखर आगन में हलचल,
जय प्रस्थान-निरत, जय ध्वनिमय,
गतिमय संयत हे !

जय-जय जाग्रत हे !
जय-जय भारत हे !

विस्मृत जातिभेद, भय-उद्‌भव,
विकसित-राष्ट्रप्रेम नववैभव,
गलित पुरातन रूढ़ि, राज्य-रव,
जनगण-सागर-उद्वव-उच्छ्वसित
विस्तृत उन्नत हे !

जय-जय भारत हे !
जय-जय जाग्रत हे !

उदित भाग्य, दुर्भाग्य तिरोहित,
दृग मन नव आलोक निमज्जित,

सबल संगठन आज मुक्तिहित,
नवनिर्माण-निरत प्रतिपद, नव
बलिपथ-उद्यत हे ।

जय-जय जाग्रत हे ।
जय-जय भारत हे ।
जय-जय तपरत हे ।

● सोहनलाल द्विवेदी

जय-जय निर्भय हे !

जय-जय निर्भय हे !
जय-जय जय-जय हे !

आत्म नियता, आत्म-तपस्वी,
सत्य सजल, दुर्भेद्य मनस्वी,
प्रण-प्रण-प्रण-मय, अमर यशस्वी,

बलमय, बलिमय हे !
जय-जय जय-जय हे !

दीन दलित जनगण के त्राता,
मृत हत जीवन-जन्म-विधाता,
जय-जय भारत भाग्य विधाता !

युग युग अक्षय हे !
जय-जय निर्भय हे !

शोषित-पीड़ित जन के नायक,
नवयुग, नवजग, राष्ट्र-विधायक,
महामुक्ति के कमठ गायक !

भव अरुणोदय हे !
जय-जय निर्भय हे !

● सोहनलाल द्विवेदी

जय-जय प्यारा भारत देश

जय-जय प्यारा भारत देश ।

जय-जय प्यारा जग से न्यारा
शोभित सारा देश हमारा
जगत मुकुट जगदीश दुलारा
जय सौभाग्य सुदेश ।

स्वर्गिक शीशफूल पृथ्वी का
प्रेम मूल प्रिय लोकत्रयी का
सुललित प्रकृति नटी का टीका
जय निशि का राकेश ।

जय-जय शुभ्र हिमाचल शृंगा
कलरव निरत कलोलिनी गंगा
भानु-प्रताप चमत्कृत अंगा
तेजो निधि तव वेश ।

जग में कोटि-कोटि युग जीवें
जीवन सुलभ अमीरस पीवें
सुखद वितान सुकृत का सीवें
रहे स्वतन्त्र हमेश ।

जय-जय राष्ट्र महान्

जय-जय राष्ट्र महान !
देव-भूमि धरती का गौरव, अपना हिन्दुस्तान !

उज्ज्वल मुकट हिमालय-जैसा, पाव पखारे सागर,
गंगा-यमुना-जैसी नदियां, वरद हस्त-सा अम्बर।
मुक्त हृदय से हमें मिले हैं, प्रकृति के वरदान !

चंदन-जैसी मिट्टी इसकी, पानी जैसे अमृत,
मलयानिल के झोंके चलते, ज्यों गुलाब का शरबत।
शाम सवेरे कुमकुम छिडके, फसलों की मुसकान !

इसके आंगन भरी पडी है, इतिहासों की गाथा,
इसके गौरव के सम्मुख ता, खुद ही झुकता माथा।
गौतम-गांधी की जननी, यह बलवीरों की खान !

हम इसकी ममता से पोषित, इसके पहरेदार,
खूनी आंख दिखाने वाले दुश्मन को ललकार।
सिर देकर भी ऊंचा रखेंगे, अपना राष्ट्र-निशान !

● प्यारेलाल श्रीमाल

जय जवान, जय किसान !

जय जवान, जय किसान !
भारती पुकारती है, रखना उनकी शान !

सैनिक तुम शान्ति के हो, जानता जहान,
खुशहाली देश की, हो गौरव महान्,
आंखों के तारे तुम, जन-जन के प्राण !

अर्जुन तुम लक्ष्यभेदी, भीम तुम्ही बाहुबली,
अंगद सा कदम धरा, जय जय बजरंगबली,
तुम अजेय, सक्षम हो, पौरुष की शान ।

कृषक नही केवल तुम, अर्थनीति की धुरी,
तुम पर है योजनाए, तुम पर उद्योगपुरी,
'सरस' तुम्ही जीवन हो, कविता, हो गान !

प्यारेलाल श्रीमाल 'सरस'

जयति भारत, जय हिन्दुस्तान

जयति भारत, जय हिन्दुस्तान !

सुरसरि सलिल सुधा से सिंचित, मंजुल मलय समीर सचरित,
सुषमा सब सुरपुर की संचित, करते सुर गुण-गान !
जयति भारत, जय हिन्दुस्तान !

पुण्य पुंज पावन पृथ्वी पर, धीर वीरवर धर्म धुरंधर,
सत्य-अहिंसा दया-सरोवर, भुक्ति-मुक्ति की खान !
जयति भारत, जय हिन्दुस्तान !

बंधा जगत में तेरा शाका, अलख कर दिया जिसको ताका,
चूम रही नभ विजय पताका, फहरा रहा निशान !
जयति भारत, जय हिन्दुस्तान !

वैरी भी तूने अपनाए, नर पशु तूने मनुज बनाए,
जग में सुयश वितान तनाए, छेड़ी सुखमय तान !
जयति भारत, जय हिन्दुस्तान !

हरकर भी तू हरा नहीं है, डरकर भी तू डरा नहीं है,
मरकर भी तू मरा नहीं है, रक्त बीज की शान !
जयति भारत, जय हिन्दुस्तान !

कटक कटक कटे अब तेरे, बाधक विघ्न हटे अब तेरे,
उठकर पुत्र डटे अब तेरे, निश्चित है उत्थान !
जयति भारत, जय हिन्दुस्तान !

ये स्वतन्त्रता के मतवाले, तेरा तौक गले मे डाले,
कहते हैं जो चाहे पाले, निकलेंगे अरमान!
जयति भारत, जय हिन्दुस्तान!

कभी पैर पीछे न पड़ेंगे, स्वत्व समर मे शूर लड़ेंगे,
बन जाएगे यदि बिगड़ेंगे, बने अगर दे जान!
जयति भारत, जय हिन्दुस्तान!

● गयाप्रसाद शुक्ल 'सनेही'

जय राष्ट्रीय निशान

जय राष्ट्रीय निशान,
जय राष्ट्रीय निशान,
जय राष्ट्रीय निशान।

लहर-लहर तू मलय पवन में,
फहर-फहर तू नील गगन में,
छहर-छहर जग के आंगन में,

सबसे उच्च महान,
सबसे उच्च महान।
जय राष्ट्रीय निशान।

बढ़ें शूर-वीरों की टोली,
खेलें आज मरण की होली

बूढ़े और जवान,
बूढ़े और जवान।
जय राष्ट्रीय निशान।

मन में [illegible] की [illegible],
हृदय में [illegible] की [illegible],
[illegible] में है [illegible],

धनी गरीब समान,
गूंजे नभ मे तान।
जय राष्ट्रीय निशान!

तेरा मेरु-दण्ड हो कर मे,
स्वतन्त्रता के महासमर मे,
वज्रशक्ति बन व्यापे उर मे,

दे दें जीवन-प्राण,
दे दें जीवन-प्राण।
जय राष्ट्रीय निशान!

जय स्वतन्त्रते !

जय स्वतन्त्रते ! भुवन-मोहिनी !
जयति विजय दे ! वर दे !

मंगल-मोद-प्रदायिनि जय हो,
पाकर तुम्हें विश्व निर्भय हो।
शक्ति-साधना युगाराधना,
अभयकरी अजेय विजय हो।

जय कल्याण मूर्ति, सुख-देनी,
ऋद्धि-सिद्धि फिर भर दे !
जय स्वतन्त्रते, भुवन-मोहिनी,
जयति विजय दे, वर दे !

सुर-नर-मुनि-साधना अमर हो,
वसुन्धरा-सौभाग्य सुघर हो।
धान्ययुता, रसयुता सुधामय,
वसुधा की वसुधा सुन्दर हो।

जय सुलक्षणे, भाग्य-विधायिनि।
फिर गौरवमय कर दे।
जय स्वतन्त्रते, भुवन-मोहिनी !
जयति विजय दे, वर दे !

पावन पुण्य-प्रभात किरण सी,
उदभव-आचल भरे सदय हो।
महासिद्धि- समृद्धि-प्रद,यिनि,
तुम्ह प्राप्त वर युग निभय हो।

जय दासत्व-नाशिनी ! सुख दे,
शीश वरद कर धर दे।
जय स्वतन्त्रते, भुवन-मोहिनी !
जयति विजय दे, वर दे।

अत्याचार-मर्दिनी जननी।
क्षमता-समता-सुधा पिलाओ।
पुन विश्व-बन्धुत्व भावना—
का, स्नेह उर दीप जलाओ।

जय कल्याणी ! दानवता का,
महातोम तम हर दे।
जय स्वतन्त्रते, भुवन मोहिनी,
जयति विजय दे, वर दे।

नव-निर्माण, सुबुद्धि विमल दो,
सत्य, आत्मबल, ध्येय-सिद्धि दो।
सार्वभौम कल्याण-भावना—
भरो, ज्ञान की विमल वृद्धि दो।

जय त्रिलोक की मुक्तकारिणी।
विघ्न अमगल हर दे।
जय स्वतन्त्रते, भुवन-मोहिनी।
ज्यति विजय दे, वर दे।

● जगमोहन नाथ अवस्थी

जय हे राष्ट्र-निशान !

जय जय, जय हे अमर तिरंगे, जय हे राष्ट्र निशान !

'सन् सत्तावन' की अंगड़ाई
'नौ अगस्त' की तू तरुणाई,
तुझमे कोटि कोटि वीरों का प्रतिबिम्बित बलिदान।

मूर्त शक्ति तू मूर्त त्याग तू
विश्वशान्ति का अमर राग तू,
तुझमे कोटि कोटि प्राणों के गुम्फित हैं अरमान।

दिशि-दिशि मे अवनी अम्बर पर,
तू अपनी आभा प्रसरित कर,
पारतन्त्र्य-तम चीर ला रहा है स्वातन्त्र्य-विहान।

ज्वालाओं मे जलते मन सा,
तप तप कर निखरा कचन सा,
तुझ पर सौ सौ बार निछावर सारा हिन्दुस्तान।

विश्व विजय करने की क्षमता,
बने सदा मानव की ममता,
तेरे तार-तार मे मुखरित मानवता के गान।

हम निज तन देंगे, मन देंगे,
तेरे हित जीवन दे देंगे,
प्राण गवाकर भी रख लेंगे, हम तेरा सम्मान।

● श्री हरि

जवान देश है

आज एक वज्र के समान देश है !
जवान देश है, अभी जवान देश है।

अभी विराट् शक्ति का निवास है यहा,
अभी प्रचड सूर्य का प्रकाश है यहा !
अभी अनेक राग हैं, असख्य गीत है,
अभी तो हर तरफ नया विकास है यहा।

आज कान तक चढा कमान देश है।
जवान देश है, अभी जवान देश है।

हर तरफ मचल रही प्रबुद्ध क्रातिया,
दिल से दूर हो रही अनेक भ्रातिया।
ध्यस्त है समाज, आज व्यस्त लोक-राज,
जन्म ले रही महान विश्व-शातिया।

आज एक जागता मकान देश है !
जवान देश है, अभी जवान देश है।

जोश मे मनुष्य का विचित्र हाल है,
गर्दनें तनी-तनी, कमाल चाल है।
आज सृष्टि और, आज दृष्टि और है,
आज एकता अनेक मे विशाल है।

आज विश्व मे यही प्रधान देश है।
जवान देश है, अभी जवान देश है।

जवानिया

नये सुरो मे शिंजिनी बजा रही जवानिया
लहू मे तैर-तैर के नहा रहीं जवानिया।

प्रभात-शृ ग घड़े सुवर्ण के उड़ेलती,
रगी हुई घटा मे भानु को उछाल खेलती,
तुषार-जाल मे सहस्र हेम-दीप बालती,
समुद्र की तरग मे हिरण्य-धूलि डालती,

सुनील चीर को सुवर्ण बीच बोरती हुई,
धरा के ताल ताल मे उसे निचोड़ती हुई,
उषा के हाथ की विभा लुटा रही जवानिया।

घनो के पास बैठ तार बीन के चढा रही,
सुमद्र नाद मे मल्हार विश्व को सुना रही,
अभी कही लटें निचोड़ती, जमीन सीचती,
अभी वही घटा मे क्रुद्ध काल खड्ग खीचती,

पड़ी व' टूट देख लो, अजस्र वारिधार मे,
चली व' बाढ बन, नही समा सकी कगार मे।
रुकावटो को तोड-फोड छा रही जवानिया।

हटो तमीचरो, कि हो चुकी समाप्त रात है,
कुहेलिका के पास जगमगा रहा प्रभात है।
लपेट मे समेटता रुकावटो को तोड के,
प्रकाश का प्रवाह आ रहा दिगन्त फोड के।

विशीर्ण डालियां महीरुहों की टूटने लगीं,
शमा की झालरें व टक्करों से फूटने लगीं।
चढ़ी हुई प्रभंजनों प' आ रहीं जवानियां।

घटा को फाड़ व्योम-बीच गूंजती दहाड़ है,
जमीन डोलती है और डोलता पहाड़ है,
भुजंग दिग्गजों से, कूर्मराज त्रस्त कोल से,
धरा उछल उठन के वात पूछती खगोल से।

कि क्या हुआ है सृष्टि को ? न एक अंग शांत है,
प्रकोप रुद्र का ? कि कल्पनाश है, युगान्त है ?
जवानियों की धूम-सी मचा रहीं जवानियां।

समस्त सूर्य लोक एक हाथ में लिये हुए,
दबा के एक पांव चन्द्र-भाल पर दिए हुए,
खगोल में धुआं बिखेरती प्रतप्त श्वास से,
भविष्य को पुकारती हुई प्रचण्ड हास से,

उछाल देव-लोक को मही से तोलती हुई,
मनुष्य के प्रताप का रहस्य खोलती हुई,
विराट रूप विश्व को दिखा रहीं जवानियां।

● रामधारी सिंह 'दिनकर'

जवानी जागा करती है

युग का करने निर्माण जवानी जागा करती है।
करने को नित बलिदान, जवानी जागा करती है।

सुख-वैभव के सपनो मे जब जग सोता रहता है,
पापो की गठरी को मानव जब ढोता रहता है।
अरमानो को पूरा करने की खातिर जब मानव,
पथ मे विपदाओ के काटे-से बोता रहता है।
तब करने को कल्याण, जवानी जागा करती है।
करने को नित बलिदान, जवानी जागा करती है।

जब धरती की मानवता का इतिहास बदलता है,
मानव के उर का चिर सचित विश्वास बदलता है।
जब एक-एक इन्सान बदल जाता है धरती का,
जब ब्रह्मचर्य भी लेकर के सन्यास बदलता है।
तब करने को उत्थान, जवानी जागा करती है।
करने को नित बलिदान, जवानी जागा करती है।

जब परिवर्तन हो जाता है, ससारी जीवन का,
जब परिवर्तन हो जाता है, मानव के तन-मन का।
जब विकट रूप मे, जीवन की यह स्वासा चलती है,
जब परिवर्तन हो जाता है जग के इस उपवन का।
तब बन करके वरदान, जवानी जागा करती है।
करने को नित बलिदान, जवानी जागा करती है।

जब कस और रावण-से अत्याचारी होते है,
दुर्योधन, दु शासन जैसे व्यभिचारी होते हैं।
अन्यायो से उत्पीडित जनता जब चिल्लाती है,
शिशुपाल सरीखे उच्छृ खल अधिकारी होते हैं।
तब बन करके भगवान, जवानी जागा करती है।
करने को नित बलिदान, जवानी जागा करती है।

जब गजनी के आक्रमणो का आतक समाया हो,
जब सोमनाथ के मन्दिर ने सम्मान लुटाया हो।
जब दुष्ट मुहम्मद गौरी से जयचन्द मिले जाकर,
जब चिता जलाकर सतियो ने शमशान रचाया हो।
तब बन करके चौहान, जवानी जागा करती है।
करने को नित बलिदान, जवानी जागा करती है।

● कृष्ण मित्र

जवानो, हो जाओ तैयार

बजी रण-भेरी, मत करो देरी—
जवानो, हो जाओ तैयार, सुनो भारत मा की ललकार।

आज देश की घरती तुमसे माग रही बलिदान,
चेतावनी गगन देता है खतरे मे है शान।
पवन झकोरे लेकर आते हिम का हाहाकार।
जवानो, हो जाओ तैयार।

सूय, चन्द्र, तारो की किरणे सहमी हुई खडी हैं,
ब्रह्मपुत्र, गगा-यमुना दुश्मन से घिरी पडी हैं।
आज हिमालय के आगन मे फूल बने अगार।
जवानो, हो जाओ तैयार।

बाघो सर पर कफन, पहन लो अब केसरिया बाना,
आगे चलो जवानो, पीछे चलने लगे जमाना।
वीरो, सदा चुनौती करना दुश्मन की स्वीकार।
जवानो, हो जाओ तैयार।

आने वाली सन्तानो के लिए जान पर खेलो,
नये नये निर्माणो की रक्षा का जिम्मा ले लो।
झेलो कष्ट हजार, प्यार का नष्ट न हो शृगार।
जवानो, हो जाओ तैयार।

● ब्रजेन्द्र गौड़

जाग उठा है आज देश का

जाग उठा है आज देश का वह सोया अभिमान।
प्राची की चचल किरणो पर आया स्वर्ण विहान।
जाग उठा है आज देश का वह सोया अभिमान।

स्वर्ण प्रभात खिला घर-घर मे जागे सोये वीर,
युद्धस्थल मे सज्जित होकर बढे आज रणधीर।
आज पुन स्वीकार किया है असुरो का आह्वान।
जाग उठा है आज देश का वह सोया अभिमान।

सहकर अत्याचार युगो से स्वाभिमान फिर जागा,
दूर हुआ अज्ञान पार्थ का, धनुष बाण फिर जागा।
पाचजन्य ने आज सुनाया ससृति को जयगान।
जाग उठा है आज देश का वह सोया अभिमान।

जाग उठी है वानर-सेना जाग उठा वनवासी,
चला उदधि को आज बाधने ईश्वर का विश्वासी।
दानव की लका पर फिर से होता है अभियान।
जाग उठा है आज देश का वह सोया अभिमान।

खुला शम्भु का नेत्र आज फिर वह प्रलयकर जागा।
ताडव की वह लपटें जागी, वह शिवशकर जागा।
ताल-ताल पर होता जाता पापो का अवसान।
जाग उठा है आज देश का वह सोया अभिमान।

ऊपर हिम से ढकी खडी है ये पर्वत मालाए,
सुलग रही हैं भीतर-भीतर प्रलयकर ज्वालाए,
उन लपटो मे दीख रहा है भारत का उत्थान।
जाग उठा है आज देश का वह सोया अभिमान।

जाग उठी लेकर अगडाई धरती हिन्दुस्तान की

राष्ट्र यज्ञ हो रहा आज, बेला आई बलिदान की,
जाग उठी लेकर अगडाई धरती हिन्दुस्तान की।

रणभेरी बज उठी, चल पडी बहादुरो की टोलिया,
गूज उठी हैं दिशा-दिशा मे जय भारत की बोलिया,
उमड चला पौरुष का पारावार न कोई रोकना,
बढने वालो का उत्साह बढाना है, मत टोकना।

चमक उठी कण-कण चिनगारी आज आत्म-सम्मान की,
जाग उठी लेकर अगडाई धरती हिन्दुस्तान की।

गगा-जमुना की माटी को, माटी कभी न मानना,
ब्रह्मपुत्र की घाटी को तुम, घाटी कभी न जानना,
अमर शहीदो के माथे का चन्दन इसकी धूल है,
मातृ-भूमि पर न्योछावर होते सब इसके फूल हैं।

तृण-तृण से आवाज यहा आती है अब अभियान की,
जाग उठी लेकर अगडाई धरती हिन्दुस्तान की।

उठो हिमालय विन्ध्याचल की गूज रही ललकार है,
भारत माता के गौरव से परिचित सब ससार है,
आज शत्रु के लिए काल है बच्चा-बच्चा देश का,
उत्तर देना है दुश्मन के अहकार, आवेश का।

स्वतन्त्रता की बलिवेदी पर, बाजी जीवन प्राण की,
जाग उठी लेकर अगडाई धरती हिन्दुस्तान की।

● बाबूलाल शर्मा 'प्रेम'

जाग, भारतवर्ष के सोए हुए अभिमान

आंख मे अंगार, सांसो मे लिये तूफान,
जाग, भारतवर्ष के सोए हुए अभिमान।

धर्म-पुत्रो ने नही देखा कपट का जाल,
फासती ही गई उनको शत्रु की हर चाल।
भीम-अर्जुन भी रहे अपमान भीषण झेल,
बहुत महगा पड रहा है, यह जुए का खेल।

द्रौपदी भी चीखती है यह धरा असहाय,
वस्त्र खीचे जा रही धृतराष्ट्र की सतान,
जाग, भारतवर्ष के सोए हुए अभिमान।

मौन बैठे भीष्म द्रोणाचार्य हैं चुप-चाप,
कर रहे नत शिर युधिष्ठिर मौन पश्चाताप।
घुम रहा दुर्योधनो-दुशासनो का झुण्ड,
भूमि का जीवन बनेगा क्या नरक का कुंड ?

'शत्रु शोणित से धुलेंगे द्रौपदी के केश'
भीम! उठकर के सभा मे यह प्रतिज्ञा ठान।
जाग, भारतवर्ष के सोए हुए अभिमान।

न्याय घायल, सत्य के मन मे व्यथा है आज,
घट रही फिर महाभारत की कथा है आज।
स्वार्थ गाते, नग्न हो पशुता रही है नाच,
पाण्डुनन्दन मोह की गाथा रहे हैं बांच।

वन्धुता रोती, सिसकते मित्रता के प्राण,
सामने कौरव खड़े हैं मागते रण दान,
जाग, भारतवर्ष के सोए हुए अभिमान।

हो रहा है शक्ति-मद मे शत्रु रक्त-पिपासु,
कौन है, केशव यहा पर न्याय का जिज्ञासु ?
हिंस्र पशुओ के नयन हर ओर आज सतृष्ण,
संधि की बातें न छेड़ो ओ कलाधर कृष्ण।

गोपियो का दल नही यह कौरवो का झुण्ड,
वासुरी फेंको उठाओ पाचजन्य महान्,
जाग, भारतवर्ष के सोए हुए अभिमान।

उठ भीम, उठ भारत महाभारत ठनेगा आज,
हम बचा करके रहेंगे द्रौपदी की लाज।
भीम का प्रण पूर्ण होने पर बधेंगे केश,
कृष्ण ! दो अविलम्ब गीता का अमर उपदेश।

बज रही भेरी नही थमते रथो के अश्व,
कहो अर्जुन से करें गाडीव का सधान,
जाग, भारत वर्ष के सोए हुए अभिमान।

● रामकुमार चतुर्वेदी

जागे जग मे मगल प्रभात !

जागे जग मे मगल प्रभात ।

करुणारुण उषा रगे अबर,
नीलोदधि पहने पीताम्बर,
उज्ज्वल हिमाद्रि हो स्वर्णगात ।

सकुचित कमल दल हो उदार,
विकसित हो पा मधु श्री अपार,
हो हरित प्रकृति के पात पात ।

हो स्नेह-स्निग्ध मानव का स्वर,
यह आत्ममिलन बन जाय अमर,
फिर, आवे कभी न दुखद रात ।

जागे जग मे मगल प्रभात ।

● सोहनलाल द्विवेदी

जागो भारत की तरुणाई

शब्ददान दे चुके बहुत अब रक्तदान की वेला आई।
नगपति तुम्हे पुकार रहा है, जागो भारत की तरुणाई।

आततायियो के दल ने फिर
सीमाओ पर कदम बढाया,
गर्वीले मस्तक को मर्दित
करने का साहस दिखलाया,
हिमशिखरो पर आग लगी है
धधक उठी है सघन वनानी,
लिए रक्त का खप्पर कर मे
नाच रही उन्मत्त भवानी,

सगीनें ले खडा शत्रु जा करनी है उस की पहुनाई।
नगपति तुम्हें पुकार रहा है, जागो भारत की तरुणाई।

यह सीमा-सघर्ष नही है
प्रश्न आज सारे भारत का,
पली सदा जो बलिदानो मे
उस आजादी की अस्मत का,
आजादी पाने से मुश्किल
लू-लपटों से उसे बचाना,
लिये हथेली पर सिर अपना
बढकर उसका मोल चुकाना,

आख निकालो उस दुश्मन की, जिसने तुमको आख दिखाई।
नगपति तुम्हें पुकार रहा है, जागो भारत की तरुणाई।

भारत पर आक्रमण न केवल
पावन संस्कृति पर हमला है,
समता, सत्य, न्याय, करुणा को
शत्रु आज रौंदने चला है,
उपकारों का तलवारों की
भाषा में प्रतिदान मिला है,
दुनिया देखे दिया मित्र ने
मैत्री का कैसा बदला है।

मानवता के शान्ति सदन पर, दानवता की हुई चढ़ाई।
नगपति तुम्हें पुकार रहा है, जागो भारत की तरुणाई।

जागो राम-कृष्ण के वंशज,
चन्द्रगुप्त के अभिव्रतधारी,
जागो ओ अशोक के अविजित
प्रबल पराक्रम के अधिकारी,
राणा की दुर्धर्ष वीरता—
और शिवा के कौशल जागो,
शेरशाह अकबर के तेवर,
कुंवर सिंह के भुजबल जागो,

हो प्रतिकार अनय का ऐसा, पास न फटके फिर अन्यायी।
नगपति तुम्हें पुकार रहा है, जागो भारत की तरुणाई।

● आनन्दनारायण शर्मा

जागो हे समाधिस्थ, जागो हे कामदहन

जागो हे! दीप्त किरण! जागो!
जागो हे! दीप्त सूर्य! जागो!!

विघ्नों के काले ये बादल मंडराए हैं
खुली-सी दिशाओं पर कालिख ले आए हैं

अंधकार पीने को—जागो हे! दीप्त सूर्य!
जागो हे! दीप्त किरण जागो!!

जागो हे! समाधिस्थ! जागो!
जागो हे! कामदहन! जागो!!

हिमगिरि के प्रांगण में तृष्णा जो नाच रही
साधना डिगाने को बाधा जो व्याप रही

भस्म वही करने को—जागो हे! समाधिस्थ!
जागो हे! काम दहन जागो!!

जागो हे! दिव्य शक्ति! जागो!
जागो हे! महाशक्ति! जागो!!

लोलुप-सी हिंसा के जन्मे जो रक्त-बीज
पुण्यमयी धरती को छलते जो रक्त-बीज

आज उन्हें पीने को जागो हे! दिव्य शक्ति!
जागो हे! महाशक्ति! जागो!

● [illegible]

झण्डा ऊचा सदा रहेगा

झण्डा ऊचा सदा रहेगा, ऊचा सदा रहेगा।
हिंद देश का प्यारा झण्डा ऊचा सदा रहेगा।
झण्डा ऊचा सदा रहेगा।

तूफानो से और बादलो मे भी नही झुकेगा,
नही झुकेगा, नही झुकेगा, झण्डा नही झुकेगा।
झण्डा ऊचा सदा रहेगा।

केसरिया बल भरने वाला, सादा है सच्चाई,
हरा रग है हरी हमारी, धरती की अगडाई।
और चक्र कहता कि हमारा, कदम कभी न रुकेगा।
झण्डा ऊचा सदा रहेगा।

शान हमारी ये झण्डा है, ये अरमान हमारा,
ये बल पौरुष है सदियो का, ये बलिदान हमारा।
जीवन-दीप बनेगा, ये अधियारा दूर करेगा।
झण्डा ऊचा सदा रहेगा।

आसमान मे लहराए ये, बादल मे लहराए,
जहा-जहा जाए ये झण्डा, ये सन्देश सुनाए।
है आजाद हिंद, ये दुनिया को आजाद करेगा।
झण्डा ऊचा सदा रहेगा।

नही चाहते हम दुनिया को, अपना दास बनाना,
नही चाहते औरो के मुह की रोटी खा जाना।
सत्य न्याय के लिए हमारा लोहू सदा बहेगा।
झण्डा ऊचा सदा रहेगा।

हम कितने सुख सपने लेकर, इसको फहराते हैं,
इस झण्डे पर मर मिटने की, कसम सभी खाते हैं।
हिन्द देश का है ये झण्डा, घर-घर मे लहरेगा।
झण्डा ऊचा सदा रहेगा।

● रामदयाल पाण्डेय

झण्डा-गायन

विजयी विश्व तिरंगा प्यारा।
झण्डा ऊंचा रहे हमारा।

सदा शक्ति सरसाने वाला,
प्रेम सुधा बरसाने वाला,
वीरों को हरषाने वाला,
मातृ-भूमि का तन मन सारा।
झण्डा ऊंचा रहे हमारा।

स्वतन्त्रता के भीषण रण में,
लखकर जोश बढ़े क्षण-क्षण में,
कांपे शत्रु देखकर मन में,
मिट जाए भय संकट सारा।
झण्डा ऊंचा रहे हमारा।

इस झण्डे के नीचे निर्भय,
रहें स्वाधीन हम अविचल निश्चय,
बोलो भारत माता की जय,
स्वतन्त्रता हो ध्येय हमारा।
झण्डा ऊंचा रहे हमारा।

आओ, प्यारे वीरों ! आओ,
देश धर्म पर बलि-बलि जाओ,
एक साथ सब मिलकर गाओ,

प्यारा भारत देश हमारा।
झण्डा ऊंचा रहे हमारा।

इसकी शान न जाने पाए,
चाहे जान भले ही जाए,
विश्व-विजय करके दिखलाए,

तब होवे प्रण पूर्ण हमारा।
झण्डा ऊंचा रहे हमारा।
विजयी विश्व तिरंगा प्यारा।

● श्यामलाल पार्षद

झंडा न्यारा, सबको प्यारा

शान हमारी, प्राण हमारा।
झंडा न्यारा, सबको प्यारा।

लहर लहरकर, फहर-फहरकर,
देश-भक्ति का भरता नव-स्वर,
मंदिर-मस्जिद है गुरुद्वारा।
झंडा न्यारा, सबको प्यारा।

कभी न डरता, साहस भरता,
मस्तक हर पल ऊंचा करता,
रूप तिरंगा इसने धारा।
झंडा न्यारा सबको प्यारा।

● सूर्यकुमार पांडेय

डरो नहीं, बढ़े चलो !

न हाथ एक शस्त्र हो,
न साथ एक अस्त्र हो,
न अन्न, नीर वस्त्र हो,

हटो नहीं,
डटो वहीं,
बढ़े चलो,
बढ़े चलो !

रहे समक्ष हिमशिखर,
तुम्हारा प्रण उठे निखर,
भले ही जाए तन बिखर,

रुको नहीं
झुको नहीं,
बढ़े चलो,
बढ़े चलो !

घटा घिरी अटूट हो,
अधर में कालकूट हो,
वही अमृत का घूंट हो,

जिए चलो,
मरे चलो,
बढ़े चलो,
बढ़े चलो !

गगन उगलता आग हो,
छिड़ा मरण का राग हो,
लहू का अपने फाग हो,

अड़ो वहीं,
गड़ो वहीं,
बढ़े चलो,
बढ़े चलो।

चलो नयी मिसाल हो,
जलो नयी मशाल हो,
बढ़ो नया कमाल हो,

रुको नहीं,
झुको नहीं,
बढ़े चलो,
बढ़े चलो।

अशेष रक्त तोल दो
स्वतन्त्रता का मोल दो,
कड़ी युगों की खोल दो,

डरो नहीं,
मरो वहीं,
बढ़े चलो!
बढ़े चलो।

● सोहनलाल द्विवेदी

तरान'-ए-आजाद

देशहित पैदा हुए हैं, देश पर मर जाएगे।
मरते मरते देश को जिन्दा मगर कर जाएगे।

हमको पीसेगा फलक[1], चक्की मे अपनी कब तलक,
खाक बनकर आख मे उसकी बसर कर जाएगे।

कर रही बर्गे-खिजा[2] को बादे-सरसर[3] दूर क्यो,
पेशवा ए-फस्ले गुल[4] हैं खुद समर कर जाएगे।

खाक मे हमको मिलाने का तमाशा देखना,
तुख्म रेजो[5] से नये पैदा शजर[6] कर जाएगे।

नौ-नौ आसू जो रुलाते हैं हमे, उनके लिए,
अश्क के सैलाब[7] से बरपा हशर कर जाएगे।

गर्दिशे-गिरदाब[8] मे डूबे तो कुछ परवा नही,
बहरे-हस्ती[9] मे नयी पैदा लहर कर जाएगे।

क्या कुचलते हैं समझकर वो हमे बर्गे हिना[10]
अपने खू से हाथ उनके तर-बतर कर जाएगे।

नक्शे-पा[11] से क्या मिटाता तू हमे पीरे-फलक,
रहबरी[12] का काम देंगे जो गुजर कर जाएगे।

● आजाद

---

१ आसमान, भाग्य २ पतझड की पीली पत्तिया, ३ पछवा हवा, ४ बसत के अगुआ, ५ बीजवपन ६ पेड, ७ आसुओ का तूफान, ८ भवर, ९ जीवन-सागर, १० मेहदी की पत्ती, ११ पदचिह्न, १२ नेतृत्व।

थाम लो सभाल कर देश की मशाल को

हिन्द के बहादुरो शूरवीर बालको !
थाम लो सम्भाल कर देश की मशाल को !

अन्धकार का गरूर आन बान तोड दो,
बालको भविष्य के लिए मिसाल छोड दो,
दो नयी-नयी दिशा वर्तमान काल को।

शूरवीर बालको !
थाम लो सभाल कर देश की मशाल को !

देश मागता कि खून से रगा गुलाब दो,
तुम उठो सिपाहियो ! शत्रु को जवाब दो,
झूम-झूम कर मलो युद्ध के गुलाल को।

शूरवीर बालको !
थाम लो सम्भाल कर देश की मशाल को !

दूर तक जमीन पर शानदार जय लिखो
तुम विशाल सिन्धु पर खून से विजय लिखो,
तोड दो पिशाच के तुम हरेक जाल को।

शूरवीर बालको !
थाम लो सम्भाल कर देश की मशाल को !

दुश्मन के लोहू की प्यासी भारत की तलवार है

अरे ! तुम्हारे दरवाजे पर दुश्मन की ललकार है
भारत की रणमत्त जवानो, चल क्या सोच विचार है।

राणा के वशजो, शिवा के पूतो, मा के लाडलो !
समर-भूमि में बढो, शत्रु को रोको और पछाड लो,
तुम्हें कसम है अपनी मा के पावन गाढे दूध की,
चलो चीन से अपनी चौकी, वादी मढे पहाड लो,
सुन, उजडे तवाग की कैसी करुणा भरी पुकार है।

जिसने घोटा गला शान्ति का उस बेहूदे चीन से,
कह दो, दुश्मन को दलने के है हम कुछ शौकीन से,
ज्हा दोस्त को दिल देने मे अपना नही जवाब है,
वहा शत्रु को पाठ पढाया करते हम सगीन से,
दुश्मन के लोहू की प्यासी भारत की तलवार है।

कहो शम्भू से आज तीसरा लोचन अपना खोल दे,
हरबोलो से कहो आज हर, हरहर-हरहर बोल दे,
जाग उठी है दुर्गा लक्ष्मी और पद्मिनी नीद से,
कहो कि अपने भाले पर हर दुश्मन का बल तोल दे,
आज देश की आजादी को प्राणो की दरकार है।

● रवि दिवाकर

देवता नव राष्ट्र के

देवता नव राष्ट्र के नव राष्ट्र की नव अर्चना लो !
विश्ववंद्य वरेण्य बापू, विश्व की नव वंदना लो ।

पा तुम्हारा स्नेह-धागा,
यह अभागा देश जागा,
जागरण के देवता ! नव जागरण की गर्जना लो !
विश्ववंद्य वरेण्य बापू, विश्व की नव वन्दना लो ।

यह तुम्हारी ही तपस्या,
युगों की सुलझी समस्या,
कोटि शीशों की अयाचित नव समर्पण साधना लो ।
विश्ववंद्य वरेण्य बापू, विश्व की नव वन्दना लो ।

हे अहिंसा के पुजारी,
प्रणति हो कैसे तुम्हारी ?
मौन प्राणों की निरंतर स्नेहमय नीराजना लो ।
विश्ववंद्य वरेण्य बापू, विश्व की नव वंदना लो ।

लहरता नभ में तिरंगा,
लहरती है मुक्ति-गंगा,
हे भगीरथ, मक्ति भागीरथी की आराधना लो ।
विश्ववंद्य वरेण्य बापू, विश्व की नव वंदना लो ।

● सोहनलाल द्विवेदी

देवधाम तक उड़े तिरंगा !

देवधाम तक उड़े तिरंगा !

इंद्रधनुष का मुकुट पहनकर,
विद्युत की वरमाल पहनकर—
घन-अंचल सतरंगा ! देवधाम तक उड़े तिरंगा !

मस्तक उन्नत करे हिमालय,
गहराई भर दे वरुणालय,
पावन कर दे गंगा ! देवधाम तक उड़े तिरंगा !

फूलों-सी मुस्कान बिखेरे,
भ्रमरों के-से गीत घनेरे,
कलरव करे सुरंगा ! देवधाम तक उड़े तिरंगा !

राजहंस बन मुक्ता चुन ले,
शतदल पर्णों से घर बुन ले,
बन ऊषा उत्तुंगा ! देवधाम तक उड़े तिरंगा !

● परमेश्वर द्विरेफ

देश की एक पग, भूमि देंगे नहीं

प्राण देंगे मगर स्वप्न में भी कभी,
देश की एक पग भूमि देंगे नहीं।

शत्रुओ! यदि बढ़े अम्ब के शीश का,
शुभ मणि-मय मुकुट लूटने के लिए।
तो समझ लो कलश भर गया पाप का,
और तैयार है फूटने के लिए।

शिष्य सिद्धार्थ के हो नयन खोल लो
मत लगाओ अरे! आग विश्वास में।
हलचलें ये तुम्हारी कहीं भूल से,
कुछ मचा दें उपद्रव न कैलाश में।

खुल गया यदि—हमारा नयन तीसरा,
प्राण तन में तुम्हारे बचेंगे नहीं।
प्राण देंगे मगर स्वप्न में भी कभी,
देश की एक पग भूमि देंगे नहीं।

नाग बन तुम चले आ रहे रेंगते,
मानसर में गरल घोलने के लिए।
कर रहे हो विवश क्यों हमें इस तरह,
पृष्ठ पिछले अरे! खोलने के लिए?

सर्प को भी सदा मीत हम मान कर
पूजते, शम्भु सिर पर चढ़ाते रहे।
किन्तु उत्पात से हो विवश, नाथ कर,
शीश पर श्याम वंशी बजाते रहे।

सिंह के दल न सोए सुनो, हैं सजग,
धर्मकियों से तुम्हारी डरेंगे नहीं।
प्राण देंगे मगर स्वप्न मे भी कभी,
देश की एक पग भूमि देंगे नहीं।

शान्ति हैं चाहते, किन्तु तन मे अभी,
रक्त है, रक्त मे उष्णता शेष है।
म्यान मे है सही, किन्तु करवाल मे,
धार है, धार मे तीक्ष्णता शेष है।
चाहते हैं यही, बन न जाए कहीं,
कण्ठ का हार यह धार तलवार की।
जुड़ न जाए कहीं विश्व-बन्धुत्व के,
ग्रन्थ मे, भूमिका शिष्य-सहार की।

सह चुके हैं बहुत कह चुके हैं बहुत,
धृष्टता अब तुम्हारी सहेंगे नहीं।
प्राण देंगे मगर स्वप्न मे भी कभी,
देश की एक पग भूमि देंगे नहीं।

पृष्ठ इतिहास के खोल कर देख लो,
हम किसी से झगड़ने नहीं है गए।
किन्तु देता चुनौती हमे जो कभी,
पीठ पर वार उसके नहीं है सहे।
इस धरा पर हुए हैं नहीं बुद्ध ही,
नोक राणा के भाले की चमकी यहीं।

देश की एक पग, भूमि देंगे नही

प्राण देंगे मगर स्वप्न मे भी कभी,
देश की एक पग भूमि देंगे नही।

शत्रुओ! यदि बढे अम्ब के शीश का,
शुभ मणि-मय मुकुट लूटने के लिए।
तो समझ लो कलश भर गया पाप का,
और तैयार है फूटने के लिए।

शिष्य सिद्धार्थ के हो नयन खोल लो
मत लगाओ अरे! आग विश्वास मे।
हलचलें ये तुम्हारी कही भूल से,
कुछ मचा दें उपद्रव न कैलाश मे।

खुल गया यदि—हमारा नयन तीसरा,
प्राण तन मे तुम्हारे बचेंगे नही।
प्राण देंगे मगर स्वप्न मे भी कभी,
देश की एक पग भूमि देंगे नही।

नाग बन तुम चले आ रहे रेंगते,
मानसर मे गरल घोलने के लिए।
कर रहे हो विवश क्यो हमे इस तरह,
पृष्ठ पिछले अरे! खोलने के लिए?

सर्प को भी सदा मीत हम मान कर
पूजते, शम्भु सिर पर चढाते रहे।
किन्तु उत्पात से हो विवश, नाथ कर,
शीश पर श्याम वशी बजाते रहे।

सिंह के दल न सोए सुनो, हैं सजग,
धर्मकियो से तुम्हारी डरेंगे नही।
प्राण देंगे मगर स्वप्न मे भी कभी,
देश की एक पग भूमि देंगे नही।

शान्ति हैं चाहते, किन्तु तन मे अभी,
रक्त है, रक्त मे उष्णता शेष है।
म्यान मे है सही, किन्तु करवाल मे,
धार है, धार मे तीक्ष्णता शेष है।
चाहते हैं यही, बन न जाए कही,
कण्ठ का हार यह धार तलवार की।
जुड न जाए कही विश्व-बन्धुत्व के,
ग्रन्थ मे, भूमिका शिष्य-सहार की।

सह चुके हैं बहुत कह चुके हैं बहुत,
धृष्टता अब तुम्हारी सहेंगे नही।
प्राण देंगे मगर स्वप्न मे भी कभी,
देश की एक पग भूमि देंगे नही।

पृष्ठ इतिहास के खोल कर देख लो,
हम किसी से झगडने नही हैं गए।
किन्तु देता चुनौती हमे जो कभी,
पीठ पर वार उसके नही हैं सह।
इस धरा पर हुए हैं नही बुद्ध ही,
नोक राणा के भाले की चमकी यही।

तेग गोविन्द का, तीर रघुनाथ का,
असि शिवाजी की बिजली-सी दमकी यही ।

हो गए पूर्ण अप-शब्द शिशुपाल के,
चक्र तो क्या मुरारी गहेंगे नहीं ?
प्राण देंगे मगर स्वप्न में भी कभी,
देश की एक पग भूमि देंगे नहीं ।

खोल कर केश, खप्पर लिये हाथ में,
सिंह पर चढ भवानी निकल आएगी ।
तो भरेंगे उसे शत्रु के रक्त से,
प्यास जल से बुझाई नहीं जाएगी ।
इस धरा की अरे, धूल में से हजारों,
करोड़ों शिवाजी पड़ेंगे निकल ।
तेज कुरुक्षेत्र का, मान चित्तौड़ का,
शौर्य झाँसी का फिर से उठेगा मचल ।

लग गए दाग जो मित्रता में कभी वे—
छुटाए तुम्हारे छुटेंगे नहीं ।
प्राण देंगे मगर स्वप्न में भी कभी,
देश की एक पग भूमि देंगे नहीं ।

● शांति अग्रवाल

देश कीर्तिमान हो

देश कीर्तिमान हो,
स्वाभिमान गान हो,
स्वावलम्ब नीति हो,
हर किसी से प्रीति हो,
इस विशाल देश की,
शान्ति के सन्देश की,
आत्म ज्योति भावना दे रही नवीन क्रम।
है नवीन चेतनायुक्त क्रान्ति का नियम।

स्वच्छ हर नगर बने,
अरु डगर-डगर बने,
हर किसी का घर बने,
अपनी भूमि पर बने,
शिष्टता — समानता,
कर्म की प्रधानता,
सत्यमेव जय कहे साथ मे सजा के श्रम।
है नवीन चेतनायुक्त क्रान्ति का नियम।

अन्य देश देखते,
निर्निमेष देखते,
सामयिक युक्ति को,
और देशभक्ति को,

भारतीय — प्राण की,
इस सफल प्रयाण की,
तोडता बढा है जो स्वार्थवाद का भरम!
है नवीन चेतनायुक्त क्रान्ति का नियम!

ऐक्य सूत्र में पिरो,
देश के समाज को,
दे रहा प्रकाश है,
आत्म-बल विश्वास है,
मानवीय तन्त्र को,
कार्ययुक्ति मन्त्र को,
पूर्ण दृढ विचार से सजा रहा प्रद्योतसम!
है नवीन चेतनायुक्त क्रान्ति का नियम!

निर्धनों के वास्ते,
ज्योत्स्ना के रास्ते,
खोलता बजा बिगुल,
निर्बलों का बल विपुल,
स्वयं सिद्ध दक्ष है,
एक कल्पवृक्ष है,
वाछनीय प्राप्ति का सदुपाय योग्यतम!
है नवीन चेतनायुक्त क्रान्ति का नियम!

● ताराचन्द पाल 'बेकल'

देश के हम सैनिक है वीर

हम सैनिक हैं वीर, देश के हम सनिक है वीर !
पवत से ऊचे गौरव में, सागर से गम्भीर,
हम अजेय हैं, सुदृढ, साहसी, हम निर्भय, रणधीर।

प्राण हमारे ज्योति पुज हैं, शक्ति-समृद्ध शरीर,
हम सैनिक हैं वीर, देश के हम सैनिक हैं वीर !

जय-पथ पर हम चरण बढाते, बाधाए कर पार,
घन गर्जन लज्जित होता, जब हम करते हुकार।
कभी न पीछे हटे समर मे, कभी न सीखी हार,
करता है सम्मान हमारे, पौरुष का ससार।

हमसे रक्षित सस्कृति, भू गिरि, सिधु, अम्न, नभ, नीर,
हम सैनिक हैं वीर, देश के हम सैनिक हैं वीर !

कष्ट-सहन मे भी रखते हम अधरो पर मुसकान,
उसमे दृढ सकल्प, स्फूर्ति-पद कठो मे जय-गान।
लक्ष्य सिद्धि के लिए किए जो प्राणो के बलिदान,
उनसे हमने सदा बढाया भारत का सम्मान।

अनुशासन-रत रहे निरन्तर, हुए न कभी अधीर,
हम सैनिक है वीर, देश के हम सैनिक हैं वीर !

● जगन्नाथप्रसाद 'मिलिन्द'

इस धरती के कण कण पर है, चित्र खिंचा कुरबानी का,
एक-एक कण छन्द बोलता, चढी शहीद जवानी का।
इसके कण-कण नही वरन् ज्वालामुखियो के शोले हैं,
किया किसी ने दावा इस पर, यह दावा-से डोले हैं।
इसे मिटाने बढा उसी ने, धूल धरा की चाटी है,
खून दिया है, मगर नही दी कभी देश की माटी है।

● अज्ञात

देश-गौरव

युगो-युगों से यही हमारी बनी हुई परिपाटी है,
खून दिया है, मगर नही दी कभी देश की माटी है।

इस धरती पर जन्म लिया है, यही पुनीता माता है,
एक प्राण, दो देह सरीखा, इससे अपना नाता है।
यह धरती है पार्वती मा, यही राष्ट्र शिव शकर है,
दिग्मडल सापो का कुण्डल, कण-कण रुद्र भयकर है।
यह पावन माटी ललाट पर पल मे प्रलय मचाती है,
खून दिया है, मगर नही दी कभी देश की माटी है।

इस भू की पुत्री के कारण भस्म हुई लका सारी,
सुई नोक-भर भू के पीछे, हुआ महाभारत भारी।
पानी सा वह उठा लहू था, पानीपत के प्रागण मे,
बिछा दिए पुग्यण-से शत्रु वे, इसी तरायण के रण मे।
शीश चढाया काट गर्दनें या अरि गरदन काटी है,
खून दिया है, मगर नही दी कभी देश की माटी है।

सिक्ख, मराठे, राजपूत, क्या बगाली, क्या मद्रासी,
इसी मन्त्र का जाप कर रहे, युग-युग से भारतवासी।
बु-देले अब भी दोहराते, यही मन्त्र है झासी मे,
देंगे प्राण न दगे माटी गूज रहा है रग-रग मे।
पृष्ठ बाचती इतिहासो के अब भी हल्दीघाटी है,
खून दिया है, मगर नही दी कभी देश की माटी है।

इस धरती के कण कण पर है, चित्र खिंचा कुरबानी का,
एक-एक कण छन्द बोलता, चढी शहीद जवानी का।
इसके कण-कण नही वरन् ज्वालामुखियो के शोले हैं,
किया किसी ने दावा इस पर, यह दावा-से डोले हैं।
इसे मिटाने वढा उसी ने, धूल धरा की चाटी है,
खून दिया है, मगर नही दी कभी देश की माटी है।

● अज्ञात

धनुष पर अग्निज बाण चढाओ !

श्वेत कमल-मंडित मानस मे
रक्तिम कमल खिलाओ !
हरित श्याम-शवाल-जाल पर
अगारे सुलगाओ !

इन कमलो का प्रहरी हिमगिरि
खडित आज हुआ है,
बने कलम खुद अपने प्रहरी,
दल दल खड्ग उगाओ !

आज बरफ से भी ज्वाला
की लपटे फट रही है,
देव ! कुसुम-शर त्याग धनुष पर
अग्निज बाण चढाओ !

भौरो की चिर मधुर
प्रभाती, मारू राग बनी है,
कली कली की चितवन मे
रणचडी-जोत जगाओ !

उचित नही आराध्य देव का
श्वेत कमल से पूजन,
अरे व्रती अरि-मुण्ड सुमन की
जयमाला पहनाओ !

● चिरजीत

नये समाज के लिए

नये समाज के लिए नया विधान चाहिए।

असंख्य शीश जब कटे
स्वदेश-शीश तन सका,
अपार रक्त-स्वेद से,
नवीन पथ बन सका।
नवीन पथ पर चलो, न जीर्ण मद चाल से,
नयी दिशा, नये कदम, नया प्रयास चाहिए।

विकास की घड़ी मे अब,
नयी-नयी कलें चलें,
वणिक स्वनामधन्य हो,
नयी-नयी, मिलें चलें।
मगर प्रथम स्वदेश मे, सुखी वणिक-समाज से,
सुखी मजूर चाहिए, सुखी किसान चाहिए।

विभिन्न धर्म पथ है,
परन्तु एक ध्येय के।
विभिन्न कर्मसूत्र है,
परन्तु एक श्रेय के।
मनुष्यता महान धर्म है, महान कर्म है,
हमे इसी पुनीत ज्योति का वितान चाहिए।

हमे न स्वर्ग चाहिए,
न वज्रदंड चाहिए,
न कूटनीति चाहिए,
न स्वर्गखंड चाहिए।
हमे सुबुद्धि चाहिए, विमल प्रकाश चाहिए,
विनीत शक्ति चाहिए, पुनीत ज्ञान चाहिए।

● रामकुमार चतुर्वेदी

नवीन कल्पना करो

तुम कल्पना करो, नवीन कल्पना करो।
तुम कल्पना करो।

अब घिस गई समाज की तमाम नीतियां,
अब घिस गईं मनुष्य की अतीत रीतियां,
हैं दे रही चुनौतियां तुम्हें कुरीतियां,
निज राष्ट्र के शरीर के सिंगार के लिए—
तुम कल्पना करो, नवीन कल्पना करो।
तुम कल्पना करो।

जंजीर टूटती कभी न अश्रु धार से,
दुख-दर्द दूर भागते नहीं दुलार से,
हटती न दासता पुकार से, गुहार से,
इस गंग-तीर बैठ आज राष्ट्र शक्ति की—
तुम कामना करो, किशोर, कामना करो।
तुम कामना करो।

जो तुम गए, स्वदेश की जवानियां गईं,
चित्तौर के प्रताप की कहानियां गईं,
आजाद देश रक्त की रवानियां गईं,
अब सूर्य चन्द्र की समृद्धि ऋद्धि-सिद्धि की—
तुम याचना करो, दरिद्र, याचना करो।
तुम याचना करो।

जिसकी तरंग लोल हैं अशान्त सिन्धु वह,
जो काटता घटा प्रगाढ वक्र ! इन्दु वह,
जो मापता समग्र सृष्टि दृष्टि-बिन्दु वह,
वह है मनुष्य, जो स्वदेश की व्यथा हरे,
तुम यातना हरो, मनुष्य, यातना हरो।
तुम यातना हरो।

तुम प्रार्थना किए चले, नहीं दिशा हिली,
तुम साधना किए चले, नहीं निशा हिली,
इस आर्त्त दीन देश की न दुर्दशा हिली,
अब अश्रु दान छोड आज शीश-दान से—
तुम अर्चना करो, अमोघ अर्चना करो।
तुम अर्चना करो।

आकाश है स्वतन्त्र है स्वतन्त्र मेखला,
यह श्रृंग भी स्वतन्त्र ही खडा बना ढला,
है जल प्रपात काटता सदैव श्रृंखला,
आनन्द, शोक, जन्म और मृत्यु के लिए—
तुम योजना करो, स्वतन्त्र योजना करो।
तुम योजना करो।

● गोपालसिंह

निश्चय विजय हमारी है

खौल रहा है खून हमारा, आखो मे चिनगारी है,
अपनी इच-इच धरती भी हमे जान से प्यारी है।

पहले मीठी बोली बोले,
चुपके से दागे फिर गोले,
जहा गिरे दो, वहा देख लो—
पहुचे हम टोले के टोले।
झुकने दी न पताका हमने, हाथो हाथ उबारी है।

हम हैं जलते अगारो से,
तेज कृपाणो की धारो-से
मा का दूध पिया है हमने
खेले हैं हम तलवारो से।
मा का दूध चुकाने वाले वीरो की अब बारी है।

जो भी हमसे टकराएगा,
आखिर मे मुह की खाएगा,
जितना तीर खिचेगा पीछे,
उतना ही आगे जाएगा।
स्यार, सिंह के घर आया है—निश्चय विजय हमारी है।

अपनी इच इच धरती भी
हमे जान से प्यारी है।

● राजनारायण बिसारिया

प्यारा देश महान्

देश हमारा, सबसे न्यारा, प्यारा देश महान्!
सब जग की आखो का तारा अपना हिन्दुस्तान!

वीर सिपाही हम इसके, पग पीछे नही हटाते,
साहस के पुतले, आगे बढ सबको राह दिखाते।

भारत मा के लिए करेंगे बडे-बडे बलिदान!
देश हमारा सबसे न्यारा प्यारा हिन्दुस्तान!

उत्तर-दक्षिण, पूरब-पश्चिम चारो दिशा हमारी,
किन्तु वहा भी रखनी होगी पूरी पहरेदारी।

माटी नही देश की यह है माथे का वरदान!
देश हमारा सबसे न्यारा प्यारा देश महान्!

● बाबूलाल शर्मा

प्यारा भारत देश

प्यारा भारत देश !
उन्नत सिर गिरिराज हिमालय,
पग पखारता सागर अक्षय,
जिसका एक एक कण निर्भय,
देता शुभ सदेश ! प्यारा भारत देश !

प्रात-किरण सोना बरसाती,
सध्या तारक-दीप जलाती,
रात चादनी जिसे सजाती,
नैसर्गिक परिवेश ! प्यारा भारत देश !

लहराती मजुल हरियाली,
नदिया सोम-सुधारस वाली,
वीरो की यह धरा निराली,
ममता-भरी अशेष ! प्यारा भारत देश !

भूमि स्वर्ग की यह परिणीता,
यहा धूलि बन जाती सीता,
मुरलीधर ने गाई गीता,
देने नवल निदेश ! प्यारा भारत देश ।

● आनन्दनारायण शर्मा

प्रगति-गीत

चले चलो चले चलो ! बढे चलो बढे चलो !

समुद्र गर्जना करे,
हिमाद्रि वर्जना करे,
प्रलय खड़ा मना करे,
सुनो नही, मुड़ो नही, बढे चलो, बढे चलो !

चलो अजर, चलो अमर,
निरस्त्र ही करो समर,
बढो प्रकाश पथ पर,
भिडो घनान्धकार से, लडे चलो, बढे चलो !

● रामदयाल पाडेय

प्रयाण-गीत

चल मरदाने, सीना ताने,
हाथ हिलाते, पाव बढाते।
मन मुसकाते गाते गीत!

एक हमारा देश हमारा,
वेश, हमारी कौम, हमारी,
मंजिल, हम किससे भयभीत?

चल मरदाने, सीना ताने,
हाथ हिलाते, पाव बढाते।
मन-मुसकाते गाते गीत!

हम भारत की अमर जवानी,
सागर की लहरें लासानी,
गग-जमुन के निर्मल पानी
हिमगिरि की ऊची पेशानी,
सबके प्रेरक, रक्षक मीत।

चल मरदाने, सीना ताने,
हाथ हिलाते, पाव बढाते।
मन मुसकाते गाते गीत!

जग के पथ पर जो न रुकेगा,
जो न झुकेगा, जो न मुडेगा,
उसका जीवन, उसकी जीत।

चल मरदाने, सीना ताने,
हाथ हिलाते पाव बढाते।
मन-मुसकाते गाते गीत!

● बच्चन

प्रयाण-गीत गाए जा !

प्रयाण-गीत गाए जा ! स्वर मे स्वर मिलाए जा
यह जिन्दगी का राग है—जवान जोश खाए जा
प्रणाय-गीत गाए जा

तू कौम का सपूत है, स्वतन्त्रता का दूत है
निशान अपने देश का उठाए जा, उठाए जा
प्रयाण-गीत गाए जा

ये आधियां पहाड़ क्या ? ये मुश्किलो की बाढ़ क्या
दहाड़ शेरे-हिन्द, आसमान को हिलाए जा
प्रयाण गीत गाए जा

तू मातृभूमि के लिए, जला के प्राण के दिए
नयी किरण प्रकाश की जगाए जा, जगाए जा
प्रयाण-गीत गाए जा

तू बाहुओ मे आन भर, सगर्व वक्ष तान कर
गुमान मा के दुश्मनो का धूल मे मिलाए जा
प्रयाण-गीत गाए जा

प्रयाण गीत गाए जा ! तू स्वर में स्वर मिलाए जा
यह जिन्दगी का राग है, जवान गुनगुनाए जा

● गोपालप्रसाद

प्रलयकर नृत्य रचाएगे

हम ले सगीने हाथो मे, दुश्मन पर चढते जायेंगे।
भारत माता के चरणो मे तन मन-धन भेंट चढायेंगे।

हिम-मुकुट हिमालय पर चोटें, आघात हमारे सीने पर,
दुश्मन का शीश न नत कर दे, लानत है उसके जीने पर।
हम मृत्युंजय हैं, सत्य-पथी, हम विजय केतु फहरायेंगे।

राणा-रानी की तलवारें, रण-कौशल आज दिखायेंगी,
वैरी के धड औ' मुडो की, काली को भेंट चढायेंगी।
दुश्मन की पत्थर छाती पर, अपनी बरछी पैनायेंगे।

स्वर्णिम वेला की किरणें अब, चिनगारी बनकर धधकेंगी,
हिम-सरिता की क्रोधित लहरें लपटें बन करके लिपटेंगी।
यह शीत नही है, ग्रीष्म प्रखर, तेजी को और बढायेंगे।

हम दिल से ठडे हो चाहे, लेकिन गर्मी मे पलते है,
हैं दुनिया के शुभचिंतक, पर दुश्मन को देख मचलते हैं।
हम भोले हैं, हम शकर हैं, प्रलयकर नृत्य रचायेंगे।

● गिरिराजशरण अग्रवाल

प्रलय-सगीत

आज तो हुकार कर स्वर,
जोर से ललकार कर स्वर,
जागरण-वीणा बजा, उन्मुक्त भरव-राग से, मैं,
गीत गाने को चला हू ।

शीघ्र तोडे बधनो को,
तीव्र कर दे धडकनो को,
वेग से विप्लव मचाकर, सृष्टि कर दे और नूतन,
प्रेरणा दे, वह कला हू ।

प्यार का ससार लाने,
शाति का उपहार लाने,
है युगो से व्यस्त जीवन, ध्येय को कर पूर्ण अर्पण,
साधना मे ही पला हू ।

जो विघातक नीति जग की,
स्वार्थ की जो प्रीति जग की,
आज इनको नष्ट करने का किया है प्रण हृदय से,
ज्वाल रक्षा हित जला हू ।

● महेन्द्र भटनागर

फिर प्यारा त्योहार आ गया

नाचो, गाओ, धूम मचाओ,
फिर प्यारा त्योहार आ गया।

घर-घर उड़ने लगे तिरंगे,
लगते कैसे रंग-बिरंगे ?
सौ-सौ इंद्रधनुष निकले हों
एक साथ जैसे उमग ले,
बजते हैं बाजे-शहनाई,
नयी खुशी का ज्वार छा गया।
नाचो, गाओ, धूम मचाओ,
फिर प्यारा त्योहार आ गया।

डगर-डगर में है उजियाली,
जगर-मगर फैली दीवाली।
चहल-पहल है, खेल तमाशे,
चमक रही है मुख पर लाली।
सूरज-चांद उतर आए ज्यों,
उनको भी त्योहार भा गया।
नाचो, गाओ, धूम मचाओ,
फिर प्यारा त्योहार आ गया।

नन्हे-मुन्ने आओ-आओ,
नन्हे-नन्हे कदम बढ़ाओ।
स्वतन्त्रता के नये पर्व पर,
भारत मां की जय-जय गाओ।
सभी दिनों से यह दिन सुंदर,
सबके मन का प्यार पा गया।
नाचो, गाओ धूम मचाओ,
फिर प्यारा त्योहार आ गया।

● सोहनलाल द्विवेदी

बज उठी रण-भेरी

मा कब से खडी पुकार रही,
पुत्रो निज कर मे शस्त्र गहो।
सेनापति की आवाज हुई,
तैयार रहो, तैयार रहो।
आओ तुम भी दो आज विदा, अब क्या अडचन, अब क्या देरी?
लो, आज बज उठी रण-भेरी।

अब बढे चलो अब बढे चलो,
निर्भय हो जय के गान करो।
सदियो मे अवसर आया है,
बलिदानी, अब बलिदान करो।
फिर मा का दूध उमड आया बहने देती मगल-फेरी।
लो, आज बज उठी रण-भेरी।

जलने दो जौहर की ज्वाला,
अब पहनो केसरिया बाना।
आपस की कलह डाह छोडो,
तुमको शहीद बनने जाना।
जो बिना विजय वापस आये मा आज शपथ उसको तेरी।
लो, आज बज उठी रण-भेरी।

● शिवमगलसिह 'सुमन'

बढे चलो

सिर ऊचा रखो हिमालय-सा, सीना ताने हस बढे चलो !
हा बढे चलो, हा बढे चलो !

तुम नन्हे एक सिपाही हो, बचपन से ही उत्साही हो।
काटो पर भी चलना सीखो, तुम भोले-भाले राही हो।
इतिहास न तुमको भूल सके, इस तरह स्वय को गढे चलो !
हा गढे चलो, हा गढे चलो !

मा की आखो के तारे हो, सारे घर के उजियारे हो।
सब की आशाए तुम पर हैं, तुम उगते हुए सितारे हो।
तुम वीर बनो, गुणवान् बनो, वीरो की गाथा पढे चलो।
हा पढे चलो, हा पढे चलो !

⊛ नर्मदाप्रसाद खरे

बढ़े चलो, बढ़े चलो

(१)

बढ़े चलो, बढ़े चलो, यही जनम, यही मरण !

चलें हजार आंधियां
न पांव डगमगा सके,
दुश्मनी — प्रहार से
न आग डबडबा सके !
शक्ति का पहाड़ हो, नहीं रुके बढ़ा चरण !

शपथ तुम्हें गरीब की
शपथ तुम्हें समाज की,
तुम 'भरत' के देश के—
शपथ तुम्हें रिवाज की !
लड़ो भिड़ो, कटो मरो, अगर बचा सका चमन !

बिजलियां हजार बार
गिर चुकी हैं नीड पर,
किन्तु दुश्मनों न आज
वार किया रीढ़ पर !
युद्ध वीर के लिए, कायरों को है शरण !
बढ़े चलो, बढ़े चलो, यही जनम, यही मरण !

● नरेन्द्र चंचल

(२)

न हाथ एक शस्त्र हो,
एक साथ एक अस्त्र हो,
न अन्न, नीर, वस्त्र हो,
हटो नही ! डटो वही !
बढे चलो ! बढे चलो !

रहे समक्ष हिम शिखर,
तुम्हारा प्रण उठ निखर,
भले ही जाय तन बिखर,
रुको नही ! झुको नही !
बढे चलो ! बढे चलो !

घटा घिरी अटूट हो,
अधर मे कालकूट हो,
वही अमृत का घूट हो,
जिये चलो ! बढे चलो !
बढे चलो ! बढे चलो !

गगन उगलता आग हो,
छिडा मरण का राग हो,
लहू का अपने फाग हो,

अडो वही ! गडो वही !
बढे चलो ! बढे चलो !

चलो नयी मिसाल हो,
जलो नयी मशाल हो,
बढो नया कमाल हो,
रुको नही ! झुको नही !
बढे चलो ! बढे चलो !

बढ़े चलो, बढ़े चलो, सदर्प वीर भारती

बढ़े चलो ! बढ़े चलो !! सदर्प वीर भारती ।

तुम बढ़ो परम प्रलय-पवन प्रबल प्रचण्ड हो,
तुम तपो महामरण निदाघ-मार्तण्ड हो ।
वज्र चरण चाप से पिसें पहाड़ पथ के,
शीघ्र शत्रु-वाहिनी विखण्ड खण्ड-खण्ड हो ।
मातृभूमि को प्रसन्न आरती उतारती ।
बढ़े चलो, बढ़े चलो, सदर्प वीर भारती ।

सर्वनाश नृत्य-मग्न कालिका करालिका,
कर उठी निनाद अट्टहास मुण्ड-मालिका ।
तुम करो प्रसन्न शीशदान रक्तदान दे,
सद्यरक्त-तृषित दनुज-दुष्ट-गव-घालिका ।
भयकरा खड़ी विनाश पथ पर पुकारती ।
बढ़े चलो, बढ़े चलो, सदर्प वीर भारती ।

युद्धनाद से गगन, दिशा, धरा प्रकम्पिता,
शत्रु-सैन्य-ध्वस्त-अस्त-व्यस्त प्राण-शंकिता ।
विदीर्ण तीव्र वार से सगर्व शत्रु-वक्ष हो,
दिगन्त पर विजय रहे अराति-रक्त-अंकिता ।
देव बालिकाएं विजयमाल लें निहारतीं ।
बढ़े चलो, बढ़े चलो, सदर्प वीर भारती ।

● नलिन

बोलो जय-जय भारती

एक हाथ मे दीपक लेकर, एक हाथ मे आरती।
अन्तर मे ले प्यार विश्व का, बोलो जय-जय भारती।

कण-कण से आवाज आ रही, हमे चाहिए एकता,
नही चाहिए मदिर-मसजिद, गिरजाघर के देवता।
धिक्कारो उस ताकत को, जो नही किसी को तारती।
बोलो जय-जय भारती।

कह दो, हम गगा के बेटे, ब्रह्मपुत्र के प्राण हैं,
रक्षा का हथियार हमारा, बासुरिया की तान हैं।
हम उस मा के लाल, जो जग पर तन-मन अपना वारती।
बोलो जय-जय भारती।

हमने तो सिंगार किया है, अपना नित बलिदानो से,
गौरव पनपा नही हमारा, महलो से, मयखानो से।
हम उस मिट्टी के बन्दे, जो गिरते प्राण उबारती।
बोलो जय-जय भारती।

हमने मानव को सासो का बख्शा शाश्वत प्यार है,
हमे विश्व को कुछ कहने का इसीलिए अधिकार है।
हम उस वाणी के स्वर हैं जो विमल मत्र उच्चारती।
बोलो जय जय भारती।

● वल्लभेश दिवाकर

भारत के हम बाल-वीर हैं

देश-भाल के हम अबीर हैं, भारत के हम बाल-वीर हैं।

हमे न समझो केवल बच्चे, हिम्मत के हम कभी न कच्चे,
काम सदा करते हैं, अच्छे, अपने वादे होते सच्चे।
समझो, पत्थर की लकीर हैं, भारत के हम बाल-वीर हैं।

आगे-ही-आगे हम बढते, अपना भाग्य स्वय ही गढते,
आधी आती, पर्वत अडते, सारी बाधाओ से लडते।
कठिन राह के राहगीर हैं, भारत के हम बाल-वीर हैं।

घोर निराशा दूर भगाते, सास-सास में आस जगाते,
बुझी हुई हर ज्योति जलाते, हसी-खुशी के फूल खिलाते।
नयी उमगो के अमीर हैं, भारत के हम बाल-वीर हैं।

● बालकृष्ण गर्ग

भारत देश महान है

श्रम की पूजा करने वाला, धीरज से धनवान् है।
भारत देश महान् है।

खानो मे चल रही कुदाली, खेतो मे हल चलता है,
रोज सुबह सबकी आखो से सूरज नया निकलता है।
गगाजल-सा बहे पसीना, हिमगिरि-सा ईमान है।
भारत देश महान् है।

लगा हुआ है गढने मे यह, अब अपनी तकदीर को,
आज नही, कल देखेंगे सब, एक नयी तस्वीर को।
बना रहा सारी दुनिया मे, यह अपनी पहचान है।
भारत देश महान है।

हाथो पर है इसे भरोसा, पावो पर विश्वास है,
इसको अपनी मजिल की हो रहती सदा तलाश है।
कठिन रास्तो पर चलने का, इसे मिला वरदान है।
भारत देश महान् है।

● नारायणलाल परमार

भारत भूमि पुकारती

आया समय जवानो जागो, भारत भूमि पुकारती।
उठो शत्रु की सेना देखो, सीमा पर ललकारती।

वरी भारत की धरती पर करता कितना मनमानी,
आज दिखा दो उन दुष्टों को, कितना है हममें पानी,
कैसे चुप बैठे हो भाई, जननी बाट निहारती।

मत भूलो राणाप्रताप को, और झांसी की महारानी,
मत भूलो शमशेर शिवा को, तात्याटोपे सेनानी,
बतला दो कैसे भारत की—सेना है हुंकारती।

शपथ तुम्हें है मातृभूमि की, अरिदल को जो संहारो,
निश्चय विजय तुम्हारी होगी, हिम्मत को तुम मत हारो,
यह तलवार उठाओ वीरो, रिपुदल का शीश उतारती।

भगतसिंह, सुखदे , राजगुरु, शेखर भी बलिदान हुए,
मातृभूमि की खातिर ये सब, अमर शहीद महान हुए,
भारत के जीवन की ताकत—दुश्मन का मद झारती।

आओ सब मिल करें प्रतिज्ञा, मा का कष्ट मिटाएंगे,
जैसे भी होगा रिपु-दल को हम सब मार भगाएंगे,
समय आ गया अब बढने का—बोलो जय-जय भारती ।

भारत देश हमारा है

देश-भक्ति की दीप-शिखा के हम दीवाने परवाने,
बलिपथ के मतवाले राही, चलते है सीना ताने,
तन देंगे, धन देंगे इस पर प्राण निछावर कर देंगे,
काली रणचडी का आगन अरि-मुडो से भर देंगे।

तन की हर हड्डी चमकेगी, मानो तेज दुधारा है,
कदम बढेंगे, नही रुकेंगे, दुश्मन ने ललकारा है,
हम को अपनी धरती प्यारी, भारत देश हमारा है।

जगो देश की प्यारी बहनो, जगो देश की माताओ,
वीर-पत्नियो उठो कि रण के सब सामान सजा लाओ।
बहा हमारा जगर पसीना, शस्त्रो की तैयारी हो,
एक खून की बूद हमारी, सौ दुश्मन पर भारी हो।

वीर सैनिको उठो कि तुमको मा ने आज पुकारा है,
कदम बढेंगे, नही रुकेंगे, दुश्मन ने ललकारा है,
हमको अपनी धरती प्यारी, भारत देश हमारा है।

वह कैसे सोयेगा सुख से, जिसका दुश्मन जीता है ?
'जागो, उठो, शत्रु को मारो', गाती अपनी गीता है।
सासो मे तूफान बसा है, बोली मे पलती आधी,
हमने तो अपने पैरो में, महाप्रलय की गति बाधी।

'मरो देश के लिए सपूत', यही हमारा नारा है,
कदम बढेंगे, नही रुकेंगे, दुश्मन ने ललकारा है,
हमको अपनी धरती प्यारी, भारत देश हमारा है।

● शिवप्रकाश दीक्षित 'बटुक'

भारत महान्

उठ उठ ओ मेरे वन्दनीय,
अभिनन्दनीय भारत महान्।

आलोकित जग में आज हुआ,
तेरी विद्या का विभा-दान,
ओ मुक्ति-मन्त्र धाता! स्वतन्त्र,
गौरव निधान ओ महाप्राण।
उठ जाग-जाग मेरे महान्—
अभिनन्दनीय भारत महान्।

जागो अशोक! वह स्वर्ण मुकुट,
पश्चिम दिशान्त में हुआ अस्त।
जागो विक्रम वह सिंहासन,
वह छत्र तुम्हारा हुआ ध्वस्त।

जागो मोहन लो पाचजन्य,
अब धर्म हो गया पाप-ग्रस्त।
जागो पुरुषोत्तम! है मानव,
दानव से शंकित, भीत, त्रस्त।

जागो गौतम! धरणी पर फिर,
कर रहा मनुज है रक्त-स्नान,
जागो-जागो हे महावीर,
होता है नर बलि का विधान।

जागो जागो हे वन्दनीय,
अभिनन्दनीय, भारत महान्।

● सुघोष

भारत राष्ट्र महान्

भारत राष्ट्र महान !
महा मोह को त्याग जगे, चिर-सुप्त भारत-सन्तान !

सिद्ध यशस्वी सत्य सनातन—
भर दे कण-कण में नव-जीवन,
जन-जन मे नव स्फूर्ति जगा दे—
पुण्य पुरातन गान !

भ्रान्ति-ग्रस्त मानवता जागे,
अन्तर की शठ पशुता भागे,
दानव-सत्ता नष्ट कर जगे—
दैवी शक्ति महान् !

भेद तमिस्रा भौतिकता की—
जगे ज्योति आध्यात्मिकता की,
अणु-अणु ज्योतिर्मय कर जागे !
संस्कृति का सुविहान ।

शोषण, उत्पीडन, निर्वासन,
भयातक, विद्वेष, प्रतारण,
अन्त पूर्णत ही कर छोडें—
यह प्रण लें हम ठान !

अति विराट् अतिदिव्य, अखडित,
सत्य शिव-सुन्दरम्-मडित,
जागे निर्भय राष्ट्र-पुरुष—
हो सर्व-लोक कल्याण !
भारत राष्ट्र महान् !

भारत-वन्दना

यह मातृभूमि मेरी, यह पितृभूमि मेरी।

ऊँचा ललाट जिसका हिमगिरि चमक रहा है।
सुवरण किरीट जिस पर आदित्य रख रहा है।
साक्षात् शिव की मूरत जो सब प्रकार सुन्दर।
बहता है जिसके सिर से गंगा का नीर निर्मल।
यह मातृभूमि ।

पूरी हुई सदा से जहाँ धर्म की पिपासा।
सत्संस्कृत निराली जहाँ की थी मातृभाषा।
सुरलोक से भी अनुपम ऋषियों ने जिसको गाया।
देवेश को जहाँ पर अवतार लेना भाया।
यह मातृभूमि ।

आरसीप्रसाद सिंह

भारतवर्ष

वह महिमामय अपना भारत
वह गरिमामय सुंदर स्वदेश !
युग-युग से जिसका उन्नत शिर
है किये खड़ा हिमगिरि नगेश !

जिसके मन्दिर के शंखो से
गूंजा अजेय बन ब्रह्मवाद,
भूले नश्वर तन का प्रमाद
अमरात्मा का पाया प्रसाद।

हैं अमर कीर्ति, हैं अमर प्राण
अमरों का अद्‌भुत अमिट देश।

इतिहास पटल पर संसृति के
जो स्वर्ण-वर्ण मे लिखा नाम,
वह है रघुपति की जन्मभूमि
वह है यदुपति का जन्म धाम।

जिसके तृण-तृण मे, कण-कण में
वंशी बजती रहती अशेष।

युग-युग से जो पृथ्वीतल पर
है भासमान बन गगन दीप,
कितने ही राष्ट्र-यान उबरे
पाकर प्रकाश जिसके समीप।

भवसागर के अपार तट का
जो कर्णधार कौशल निवेश

रण वरण किया धर चरण सुदृढ
तब मरण बना निज स्वर्गद्वार,
पुरुषों ने रण-कंकण पहना
रमणी ने जौहर का श्रृंगार।

आमरण बनाया गौरव को
आवरण हटा सुख के अशेष।

कितने ही राष्ट्र उठे जग में
कितने ही राष्ट्र हुए विलीन,
जो महाकाल की छाती पर
आरूढ़ आज बन चिर-नवीन।

विश्वंभर के करुणा-बल पर
युग-युग दुर्जय देशेश देश।

● सोहनलाल द्विवेदी।

भारतवर्ष महान् !

हमारा भारतवर्ष महान् !

खड़ा हिमगिरि ज्यों पहरेदार ।
चरण धोता है सिंधु अपार ।
आरती करते सूरज चांद,

पवन बहता सुधा-समान !
हमारा भारतवर्ष महान् ।

सुनाती गंगा-यमुना गीत ।
गूंजता झरनों का संगीत ।
यहां शोभित वन-उपवन-बाग,

सुमन करते सौरभ का दान ।
हमारा भारतवर्ष महान् ।

यहीं है राम-कृष्ण का लोक ।
यहीं जन्मे हैं बुद्ध-अशोक ।
शिवाजी, राणा वीर प्रताप,

आज भी पाते सबसे मान ।
हमारा भारतवर्ष महान् ।

हुए गांधी-से अमर सपूत ।
शांति के बने जवाहर दूत ।
भगत, आजाद, सुभाष, पटेल,
सभी पर है हमको अभिमान ।
हमारा भारतवर्ष महान् ।

करें हम इसका ऊंचा भाल ।
नित्य ही पहनाएं जयमाल ।
इसी की रक्षा में हम लोग,

करें तन-मन धन सब बलिदान ।
हमारा भारतवर्ष महान् ।

● विनोदचंद्र पांडेय 'विनोद'

भारत से टकराने वाला मिट्टी मे मिल जाएगा

हम सबको रक्षा करनी है, लडते हुए जवानो की,
और हमे रखवाली करनी, अन्न-भरे खलिहानो की,

तभी योजनाओ का रथ आगे-आगे बढ पाएगा।
तभी मुक्ति-अभिमन्यु हमारा, विजयकेतु फहराएगा।

भूखे हाथो से मशीन का पहिया नही चला करता,
भूखे प्यासे हाथो मे हल, बार-बार उछला करता,

भूखे सैनिक के स्वर से, कब अरि का उर दहला करता।
भूखे देशो का अम्बर मे केतु नहीं मचला करता।

हमको फसल नही कटवानी, सरहद पर इन्सानो की,
रक्त-वृष्टि से हमे सृष्टि सुलगानी है शैतानो की—
तभी हमारी सत्यकथा को सारा जग पढ पाएगा।
देश हमारा गौरव के सोपानो पर चढ पाएगा।

सगीनो की नोक, कथाए कब लिखती अनुराग की,
हिम-शिखरो पर चला बहाने को अरि सरिता आग की,

हम पद्मिनियो के बेटे हैं, आदत रण के फाग की।
अपनी धरती पर उगती है फसल हमेशा त्याग की।

कफन बाधहम घर से निकले, होड लगी बलिदानो की,
जन्मभूमि हित तन, मन, धन देने वाले दीवानो की,

देखें कौन खोलकर सीना, भारत से भिड पाएगा।
हिमगिरि से टकराने वाला मिट्टी में मिल जाएगा।

● सरस्वतीकुमार 'दीपक'

भारति, जय विजय करे

भारति, जय विजय करे !
कनक शस्य कमल धरे !

लका पतदल-शतदल,
गर्जितोर्मि सागर-जल,
धोता शुचि चरण युगल,
स्तव कर बहु अथ भरे !

तरु-तृण-वन-लता वसन,
अचल में खचित सुमन,
गगा ज्योतिर्जल-कण,
धवल-धार हार गले !

मुकुट शुभ्र हिम तुषार,
प्राण प्रणव ओंकार,
ध्वनित दिशाए उदार,
शतमुख- शतरव मुखरे !

● सूर्यकात त्रिपाठी 'निराला'

भू को करो प्रणाम

बहुत नमन कर चुके गगन को, भू को करो प्रणाम !
भाइयो, भू को करो प्रणाम !

नभ में बैठे हुए देवता पूजा ही लेते हैं,
बदले मे निष्क्रिय मानव को भाग्यवाद देते हैं।
निर्भर करना छोड नियति पर, श्रम को करो सलाम।
साथियो, श्रम को करो सलाम।

देवालय यह भूमि कि जिसका कण-कण चदन-सा है,
शस्य-श्यामला वसुधा, जिसका पग-पग नदन-सा है।
श्रम-सीकर बरसाओ इस पर, देगी सुफल ललाम,
बन्धुओ, देगी सुफल ललाम !

जोतो, बोओ, सींचो, मेहनत करके इसे निराओ,
ईति, भीति, दैवी विपदा, रोगो से इसे बचाओ।
अन्य देवता छोड धरा को ही पूजो निशि याम,
किसानो, पूजो आठों याम।

● जगदीश बाज

मगल गीत गाओ

आज किरणो की सुनहरी बासुरी पर,
जागरण का एक मगल-गीत गाओ।

छन्द रचना हो नयी, स्वर भी नया हो,
व्यजनाए हो नयी, नव कल्पना हो।
फूक दो नव प्राण कण-कण मे धरा के,
और जन-जन मे नयी युग चेतना हो।

स्वप्न-शय्या पर अभी जो हैं विनिद्रित,
जागरण की भैरवी उनको सुनाओ।

बाहुओ मे हैं तुम्हारे चाद तारे।
और हैं तुमसे प्रकृति के दूत हारे।
पर मनुजता तक अभी पहुचे नही हो,
क्या हुआ शशि-लोक तक यदि पर पसारे?

बाघ लो तुम विश्व का हर एक कोना,
डोर कुछ बन्धुत्व की इतनी बढाओ।

मानता हू कौरवो का बल चढा है।
पाच ही हम, शत्रु का शतदल खडा है।
पर जहा है सारथी भगवान अपना,
विश्व कुरु मे डर तुम्हें किसका पडा है?

है विजय निश्चित, तुम्हारी सफलता है,
विश्व के सघर्ष मे मत डगमगाओ।

● दिनेशचद्र शर्मा

मधुमय देश हमारा

अरुण यह मधुमय देश हमारा।
जहा पहुच अनजान क्षितिज को मिलता एक सहारा।

सरसतामरस गर्भ विभा पर, नाच रही तरुशिखा मनोहर,
छिटका जीवन हरियाली पर, मगल कुकुम सारा।

लघु सुरधनु-से पख पसारे, शीतल मलय समीर सहारे,
उडते खग जिस ओर मुह किए समझ नीड निज प्यारा।

बरसाती आखो के बादल, बनते जहा भरे करुणाजल,
लहरें टकरातीं अनन्त की पाकर जहा किनारा।

हेमकुम्भ ले उषा सवेरे भरती ढुलकाती सुख मेरे,
मदिर ऊघते रहते जब जग कर रजनीभर तारा।
अरुण यह मधुमय देश हमारा।

● जयशकर प्रसाद

माग रहा है देश जवानो ! तुमसे फिर कुर्बानिया

माग रहा है देश जवानो ! तुमसे फिर कुर्बानिया,
तुम को अपना खून बहा कर लिखनी नयी कहानिया ।

फिर तलवारो की धारो पर तुम को नाच दिखाना है,
अगारो पर चलना है और आगे बढते जाना है ।
सागर से लोहा लेना औ' पर्वत से टकराना है,
कर दो तुम भारत-हित अर्पण अपनी खोल जवानिया ।
मांग रहा है देश जवानो ! तुम से फिर कुर्बानिया !

सुन लो मेरी बहिनो ! तुमसे भी मुझको कुछ कहना है,
सोने के गहनो से बेहतर बन्दूको का गहना है ।
सगीनों के साये मे तुम को दुश्मन से कहना है,
गूज रही हैं घर-घर मे, फ़ासी की अमर कहानियां ।
माग रहा है देश जवानो ! तुम से फिर कुर्बानिया !

आज हमे अपनी माता के पय का मोल चुकाना है,
हमे शान्ति का गीत भुलाकर रण का बिगुल बजाना है ।
जालिम हमलावर को अब करनी का मजा चखाना है,
आज नहीं करने देंगे हम दुश्मन की मन-मानियां ।
मांग रहा है देश जवानो [illegible] फिर कुर्ब[illegible]
तुमको अपना खून बहा[illegible]

९

मा ने तुम्हे पुकारा है

जाग उठो, जाग उठो, जाग उठो !
जाग उठो, भारत के वीरो, मा ने तुम्हे पुकारा है !
आज हिमालय के सिर पर, अरि ने तुमको ललकारा है ।

यह धरती है राम-कृष्ण की, इसने अर्जुन-भीम दिए,
इसी भूमि पर वीर प्रताप, शिवाजी-से रणधीर हुए ।
जिसे बुद्ध ने ज्ञान दिया औ' गान्धी ने आजादी दी,
उसी हिन्द को आज छेडता, क्रूर नीच हत्यारा है ।

सदियो से प्रहरी बन जिसने, भारत की रखवाली की,
आज उसी के लिए लगा देंगे, बाजी हम प्राणो की ।
श्वेत हिमालय श्वेत रहेगा, लाल न होने देंगे हम,
जिसकी पावन देन हमें गगा-यमुना की धारा है ।

आज समझ ले दुश्मन, उसने अपनी मौत बुलाई है,
और हिन्द के हाथो उसने, अपनी कबर खुदाई है ।
हर बच्चा है कुवरसिंह, हर नारी लक्ष्मीबाई है,
फौलादी हर भुजा देश की, हर निगाह अगारा है ।

● महेशनारायण सक्सेना

मा, मुझे सैनिक बना दो

मा मुझे सैनिक बना दो।
चाहता रण-भूमि मे जाना, मुझे तलवार ला दो।
मा, मुझे सैनिक बना दो।

आज सुनना चाहता हू मैं न परियो की कहानी।
आज मुझसे मत कहो मा, 'एक राजा एक रानी'।
वीर राणा की, शिवा की शक्ति तुम मुझमे जगा दो।
मा, मुझे सैनिक बना दो।

जो उठाए भूलकर भी आख मेरी मातृ-भू पर।
जो बढाए भूलकर भी पैर वीरो की प्रसू पर।
मैं उडा दू शीश उसका, वह मुझे कौशल सिखा दो।
मा, मुझे सैनिक बना दो

शत्रु-दल के प्रबल बादल, देश के नभ पर रहे घिर।
आसुओं से राह मेरी, तुम न रोको आज मा फिर।
सजाकर रण-साज, मगल-तिलक मस्तक पर लगा दो।
मा, मुझे सैनिक बना दो।

मेरा देश महान्

मेरा देश महान् !
प्राणो से भी प्यारा मुझको मेरा हिंदुस्तान !

इसने मुझको जन्म दिया है, इसने मुझको पाला है !
इसकी पूजा करता हू, मैं, मेरा यही शिवाला है।
अवतारो का देश, यहा की धरती स्वर्ग-समान।

इसके सोने-जैसे दिन हैं, चादी-जैसी राते है।
शीत-ग्रीष्म हैं सुखद, यहा की मनभावन बरसाते है।
इसकी बडी सुहानी सध्या, इसके स्वर्ण-विहान।

सतत जागता रहता हू बन, इसका पहरेदार सदा।
इसकी खातिर तन-मन अर्पण करने को तैयार सदा।
मिट जाऊगा, मगर रखूगा ऊचा राष्ट्र निशान।

● चन्द्रसेन विराट्

मेरा रग दे बसती चोला

मेरा रग दे बसती चोला।
जिसे पहनकर वीर शिवा ने मा का बन्धन खोला।

यह चोला टीपू ने पहना, हसकर दी कुर्बानी,
इसे पहन भासी की रानी, खूब लडी मर्दानी,
पहन इसे मेवाड का राणा, जै जै भारत वाला।
इन्कलाब जिन्दाबाद, इन्कलाब जिन्दाबाद।

इसी रग मे रगा गया है सारा हिन्दुस्तान,
रग बसन्ती ऐ मैं बताऊ, क्या है तेरी शान,
देख के फासी का तख्ता भी दिल न हमारा डोला।
इन्कलाब जिन्दाबाद, इन्कलाब जिन्दाबाद।

मौत से पहले यही दुआ है, हो भारत आजाद,
ओ भारत के वीर, कभी जो आये हमारी याद,
मौत को गले लगाकर गाना 'रग दे बसन्ती चोला'!
इन्कलाब जिन्दाबाद, इन्कलाब जिन्दाबाद।

मेरे प्यारे वतन

मेरे प्यारे वतन, मेरे प्यारे वतन !

मेरे होठो पे हर दम तराना तेरा
मेरी चाहत से बढकर खजाना तेरा
मेरे जीवन का सुख दाना-दाना तेरा
मेरे प्यारे वतन !

मैं हू अनमोल पुतला तेरे चाक का
मेरे माथे पे टीका तेरी खाक का
मेरी आखों में सुरमा तेरी राख का
मेरे प्यारे वतन !

पाक मन्दिर यहा, गुरुद्वारे यहा
मस्जिदों के चमकते मिनारे यहा
दीन-दुखियो को हासिल सहारे यहा
मेरे प्यारे वतन !

शांति की अहिंसा की पहचान तू
नित नये रंग फूलो का गुलदान तू
सबका सम्मान मैं, सबका सम्मान तू
मेरे प्यारे वतन !

मेरे होठो पर हरदम तराना तेरा
मेरी चाहत से बढकर खजाना तेरा
मेरे माथे पे टीका तेरी खाक का
मेरी आखो मे सुरमा तेरी आस का—
मेरे प्यारे वतन !

● निश्तर खानकाही

मै उनके गीत गाता हू

मैं उनके गीत गाता हू, मैं उनके गीत गाता हू।

जो शाने पर बगावत का अलम लेकर निकलते हैं,
किसी जालिम हुकूमत के धडकते दिल पे चलते हैं,
मैं उनके गीत गाता हू, मैं उनके गीत गाता हू।

जो रख देते हैं सीना गर्म तोपो के दहानो पर,
नजर से जिनकी बिजली कौंधती है आसमानो पर,
मैं उनके गीत गाता हू, मैं उनके गीत गाता हू।

जो आजादी की देवी को लहू की भेंट देते है,
सदाकत[1] के लिए जो हाथ मे तलवार लेते हैं,
मैं उनके गीत गाता हू, मैं उनके गीत गाता हू।

जो पर्दे चाक करते हैं हुकूमत की सियासत के,
जो दुश्मन है कदामत[2] के, जो हामी हैं बगावत के,
मैं उनके गीत गाता हू, मैं उनके गीत गाता हू।

कुचल सकते हैं जो मजदूर जर के आस्तानो को,
जो जलकर आग दे देते है जगी कारखानो को,
मैं उनके गीत गाता हू, मैं उनके गीत गाता हू।

झुलस सकते हैं जो शोलो से, कुफ्रो-दीं की बस्ती को,
जो लानत जानते हैं मुल्क मे, फिरका-परस्ती को,
मैं उनके गीत गाता हू, मैं उनके गीत गाता हू।

वतन के नौजवानो मे नये जज्बे जगाऊगा,
मैं उनके गीत गाऊगा, मैं उनके गीत गाऊगा,
मैं उनके गीत गाऊगा, मै उनके गीत गाऊगा।

● जाँनिसार अख्तर

---

१ सत्य २ प्राचीनता, रूढ़िवादिता।

मैं सैनिक बन जाऊंगा

मैं सैनिक बन जाऊंगा।

सेनानी वर्दी पहनूंगा, बूट करेंगे ठक-ठक-ठक।
कंधे से बन्दूक लगेगी, मुन्नी देखेगी इक-टक।
दुश्मन का मैं दमन करूंगा, जय की जोत जगाऊंगा।
मैं सैनिक बन जाऊंगा।

चुन्नू-मुन्नू तुम भी आओ, सेना एक सजाएंगे।
हिंद देश के प्रहरी हैं हम, सीमा पर डट जाएंगे।
तुम रिपु-दल की थाह लगाना, मैं बंदूक चलाऊंगा।
मैं सैनिक बन जाऊंगा।

मुन्नी हमको तिलक करो तुम, आज जा रहे हम रण में।
दुश्मन को पीछे पटका दें, यही लालसा है मन में।
तन मन का मैं अर्घ्य चढ़ा कर, मां का मान बढ़ाऊंगा।
मैं सैनिक बन जाऊंगा।

हिम-मंडित यह शुभ्र हिमालय, ऊंचा भाल हमारा है।
नीच शत्रु ने मलिन आंख से, इसको आज निहारा है।
अरि-मर्दन कर उसी रक्त से, मां को तिलक चढ़ाऊंगा।
मैं सैनिक बन जाऊंगा।

● सत्यवती शर्मा

यह भारत-भूमि हमारी

यह भारत भूमि हमारी है यह हमको जी से प्यारी है।
हम इसे जन्म भू कहते है, हम सब इसमे ही रहते हैं।

इसने हमको उपजाया है, गोदी मे सदा खिलाया है।
नित अपना दूध पिलाया है, सोते में थपक सुलाया है।

हम इसके बालक प्यारे हैं, इसके हम सभी दुलारे हैं।
बस यही हमारी माता है, इससे ही सच्चा नाता है।

इसका गुण नित हम गाएगे, चाहे जिस देश मे जाएगे।
सेवा मे इसके तन मन-धन, कर देंगे सब कुछ अपण।

● बद्रीनारायण सिंह राठौर

यह हमारा वतन

यह हमारा वतन है, हमारा वतन,
है हमे जान से भी यह प्यारा वतन।
यह हमारा वतन।

इसके हर फूल मे ताजगी देख लो,
इसके हर पात मे जिन्दगी देख लो।
इसकी कलियो मे जीवन का सगीत है,
इसकी हर शाख पे चादनी देख लो।

यह हमारा चमन है, हमारा चमन,
हर तरह के गुलो से सवारा चमन।
यह हमारा वतन।

इसके पूरब मे टैगोर का बग है
इसके पश्चिम मे मेवाड का रग है,
इसके उत्तर मे कश्मीर की वादिया,
इसके दक्खन मे मदरास का ढग है।

वह रहे जिसके दामन मे गगो-जमन,
जिनकी लहरो से भीगे सभी का बदन।
यह हमारा वतन।

है ये मोती की धरती, जवाहर का घर,
है ये गाधी की बस्ती, अमर का नगर।
और बहादुर से इसके कई लाल हैं,
ये भगतसिंह जैसे शहीदो का दर।

दुर्गा लक्ष्मी व इन्दिरा का है ये सपन,
इसकी आजाद नदिया हैं, आजाद वन ।
यह हमारा वतन !

कृष्ण ने कर्म का गीत गाया जहा,
राम की जिसमे मर्यादा का है निशा ।
जिसके कण-कण मे गौतम की तासीर है,
स्वर्ग मे जिसको कहते हैं हिंदोस्ता ।

जिसकी माटी को करते हैं हम सब नमन,
जन्म लें फिर इसी मे, सभी का है मन ।
यह हमारा वतन !

ईद, होली, दिवाली मनाता है जो,
गीत पोंगल बिसारति के गाता है जो ।
जिसको क्रिसमस मे हो बूढ़े-बच्चे-जवा,
मिलके रहना सभी को सिखाता है जो ।

एक होने की जिसमे सभी को लगन,
अपने-अपने त्योहारो मे जो है मगन ।
यह हमारा वतन !

दोस्तो के लिए जो मददगार है,
दुश्मनो के लिए तेज तलवार है ।
यह तो मजलूमो-दुखियों का है पासबा,
सरहदो पे हमेशा ये हुशियार है ।

हर सिपाही-जवामर्द जिसका है धन,
जिसका मशहूर है जौहरो बाकपन !
यह हमारा वतन !

● नाज कश्मीरी

यहा हर जन बलिदानी है

हमारी यही कहानी है,
राष्ट्र की यही कहानी है।

यहा हाथो मे पलता त्याग,
हृदय मे लुटता है अनुराग,
मरण का पर्व मनाते हम,
यहा हर जन बलिदानी है।

अहिंसा की ही शक्ति प्रसार,
सत्य का हम करते व्यवहार,
किन्तु यदि कोई दे व्यवधान,
कला-रण की भी जानी है।

साधना हम करते चुप-चाप,
छेड़ने पर देते हैं शाप,
न सह सकते हम अत्याचार,
शीश देने की ठानी है।

देश की यही कहानी है।
यहा हर जन बलिदानी है, राष्ट्र की यही कहानी है।

● सुमित्राकुमारी सिन्हा

रण-भेरी

फिर से गूंज उठी रण-भेरी।

शान्त दृगो मे धधक उठी फिर यहा क्रान्ति की ज्वाला,
प्यासी धरती माग उठी फिर हृदय-रक्त का प्याला।
समग स्वय जपने बैठा फिर महामृत्यु की माला,
इन्कलाब की बाट जोहते क्या अदना, क्या आला,।
जनता के आवाहन पर नव युग ने करवट फेरी,
फिर से गूंज उठी रण-भेरी।

पूर्व आज स्वीकार कर उठा, पश्चिम का रण-न्योता,
पराधीनता औ' स्वतन्त्रता मे कैसा समझौता।
हमे राह से डिगा न सकते, अरि के दमन-दुधारे,
आजादी या मौत यही बस, दो प्रस्ताव हमारे।
शूर बाधते कफन शीश से, कायर करत देरी,
फिर से गूंज उठी रण भेरी।

● बलवीरसिंह 'रग'

राष्ट्र-ध्वज तना रहे

ज्योति-नग बना रहे ।
राष्ट्र-ध्वज तना रहे ॥

वीर हर जवान हो,
सिंह के समान हो,
कार्य क्रम-देश के,
देश के सदेश के,

हो सफल प्रत्येक पल,
राष्ट्र कार्य मे अटल,
चेतना नवीन हो,
हर कोई प्रवीण हो,
वक्ष तान-तान कर,
वायु के समान स्वर
जय कहें स्वदेश की,
देश के सदेश की,

सत्य पथ प्रयाण हो,
भव्य भावना रहे।

ज्योति-नग बना रहे ।
राष्ट्र-ध्वज तना रहे ।।

कर्म के सकेत पर,
छाए खेत-खेत पर,
शस्य की विभा नयी,
स्वर्ण-सी प्रभा नयी,

प्राण मे पुलक भरे,
एक नव झलक भरे,
मजिलो के गीत हो,
प्रेरणा सगीत हो,

शान से बढे चलो,
गिरि-शिखर चढे चलो,
काफिला रुके नही,
और ध्वज झुके नही,

शक्ति साधना रहे।
नव्य कामना रहे॥
ज्योति नग बना रहे।
राष्ट्र-ध्वज तना रहे॥

● ताराचन्द पाल 'बेकल'

राष्ट्रध्वजा

नगाधिराज शृंग पर खड़ी हुई,
समुद्र की तरंग पर अड़ी हुई,
स्वदेश में जगह-जगह गड़ी हुई,
अटल ध्वजा
हरी, सफेद,
केशरी !

न साम-दाम के समक्ष यह रुकी,
न दण्ड-भेद के समक्ष यह झुकी,
सगर्व आज शत्रु शीश पर ठुकी,
निडर ध्वजा
हरी, सफेद,
केशरी !

चलो उसे सलाम आज सब करें,
चलो उसे प्रणाम आज सब करें,
अमर सदा इसे लिये हुए मरें,
अजय ध्वजा
हरी सफेद,
केशरी !

● हरिवंशराय 'बच्चन'

राष्ट्र-मुक्ति पर्व

ले सकल्प नयी आशा का,
त्यागें झगडा, हम भाषा का।
एक ध्वजा के नीचे आकर,
जन-गण-मगल गाए।
राष्ट्र-मुक्ति पर्व हम मनाए !

हमे मनुष्यता जाति हमारी,
श्रम से दूर करें बेकारी।
आपस के भाईचारे से,
जग को स्वर्ग बनाए।
राष्ट्र-मुक्ति पव हम मनाए !

हिम्मत ताकत-मेहनत अपनी,
प्रगति करेंगे हम दिन-दूनी।
बिना 'आर्यभट', 'भास्कर', 'रोहिणि'
क्षितिज — पार पहुचाए।
राष्ट्र-मुक्ति पर्व हम मनाएं।

स्वच्छ प्रशासन, राज काज हो,
समतावादी ये समाज हो।
भूख, गरीबी, महगाई को।
मिलकर सभी मिटाए।
राष्ट्र-मुक्ति पर्व हम मनाएं।

● दिनेश रस्तोगी

राष्ट्र-सुरक्षा के हित सोया देश जगाते बढे चल

यह अपनी मगलमय धरनी
जहा राम ने जन्म लिया।
जहा पूर्ण अवतार कृष्ण ने
गीता का उपदेश दिया।
जिसके एक-एक कण मे
देवो का नित्य निवास है।
'गगा, गय्या, गायत्री'-सी
सम्पत्ति जिसके पास है।।

पुण्यभूमि यह, इस धरती को शीश झुकाते बढे चलो।
इसकी रज का निज मस्तक पर तिलक लगाते बढे चलो।।

देखो, इसकी सीमाओ पर
कौन बटा वह आ रहा।
बुरी नियत से जल्दी-जल्दी
अपने पैर बढा रहा।
इधर देश मे जयचन्दो की
लम्बी खडी कतार है।
भारत की रक्षा का युवको।
अब तुम पर ही भार है।

अपनी निश्चित सीमाओं पर दृष्टि चढाते बढे चलो।
लक्ष्मण-रेखा-सी उन सब मे अनिल बसाते बढे चलो।

जो अपनी सीमाएं लांघे
उन पैरों को तोड दो।
जो भी तुमसे आंख मिलाए
उसकी आंखें फोड दो॥
मां पर हाथ उठाए जो, तुम
उनके हाथ मरोड दो।
शिव के मुण्डमाल मे उन
सबके मुण्डों का जोड दो॥

हर हर महादेव के रव से व्योम गुंजाते बढे चलो।
एकलिंग की, महाकाल की जय चिल्लाते बढे चलो॥

सोने वाले! राणा की—
तुमको हुंकार जगा रही।
शिव राजा की खड्ग भवानी
की झंकार जगा रही।
सिक्खो! जागो गुरुओं की
तुमको ललकार जगा रही।
जाग जाग सोने वालों को
बारम्बार जगा रही।

जागो, विघ्न और बाधाएं दूर हटाते बढे चलो।
सिन्धु पाटते और हिमालय-शिखर झुकाते बढे चलो।

जागो रजपूतो! निद्रा की
उठो खुमारी छोड दो।
धरी सिरहाने यह अफीम की
प्याली अपनी छोड दो।
बप्पा, सांगा, कुम्भा, चण्ड—
राणा प्रताप लो।
जग हटाकर प्रखर मे
को हाथो मे

अपनी रण-हुकारो से तुम भूमि कपाते बढे चलो
बढने वालो के कदमो से कदम मिलाते बढे चलो।

तुलाधरो ! अब तुला हाथ से
धर दो शस्त्र सभाल लो।
रणचण्डी के आवाहन पर
हाथो में करवाल लो।
यह अवसर फिर नही मिलेगा
थैली के मुह खोल दो।
राष्ट्रदेव के साथ-साथ जय
भामाशाह की बोल दो।

मा की सेवा मे अपना, सर्वस्व लुटाते बढे चलो।
उठो, देश के कण-कण को तुम शीश नवाते बढे चलो॥

रे शिल्पी ! आलस्य छोड दो
मत पल भर विश्राम लो।
हाथो मे तुम अस्त्र बनाने
का पावनतम काम लो।
आज युद्ध की इस वेला मे
'है आराम हराम' रे।
'काम, काम, बस काम करो'
इस युग का यह पैगाम रे।

बढने वालो की राहो मे फूल बिछाते बढे चलो।
सभी सैनिको के हाथो मे शस्त्र थमाते बढे चलो।

माताओ ! आरती उतारो
हमको अन्तिम प्यार दो।
बहनो ! आगे बढो हमारे
हाथो मे तलवार दो।
यह युग-युग की रीति पुरानी
इसे भूल मत जाना री !
देख हमे मरने को जाना
नयन-नीर मत लाना री।

हसते-हसते ये ही कहना——"रे मुसकाते बढ़े चलो।"
कवच हमारी आशीषें हैं तुम तो गाते बढ़े चलो।

इसका रखना ध्यान सदा तुम
वीरों की सन्तान हो।
देखो कभी न जीवित रहते
खंडित मा का मान हो।
बढ़ते जाना सम्मुख चाहे
फौलादी चट्टान हो।
कदम न पीछे पड़ने देना
अंधड़ या तूफान हो॥

बढ़ो, बढ़ो, जन-जन के मन में ज्योति जलाते बढ़े चलो।
राष्ट्रसुरक्षा के हित सोया देश जगाते बढ़े चलो॥

● मदनगोपाल सिंहल

रुको नहीं, बढ़े चलो

रुको नहीं, झुको नहीं, बढ़े चलो, बढ़े चलो !

उठो कि तुम जवान हो, महान तेजवान हो !
कि अन्धकार के लिए, मशाल ज्योतिमान हो !
कि हर निशा नवीन स्वप्न आंख मे बसा रही,
कि हर उषा नवीन सिद्धि जिंदगी मे ला रही।
बढ़ा कदम रुके नहीं, समुद्र हो भले अड़ा—
कि पर्वतो की चोटियो को रौंदते बढ़े चलो, बढ़े चलो।

मनुष्य है वही कि जो थमा नही, थका नही,
झुका गगन भले मगर स्वयं कभी झुका नही।
कि जो गिरे हुओं को थाम कर उठा, चला सके,
कि जो महान् स्वर्ग को, जमीन पर बुला सके।
कि तुम मनुष्य हो, उठो, बढ़ो ! कि वक्ष तान लो !
कि अन्धकार में प्रकाश बाटते बढ़े चलो !
रुको नहीं, झुको नही, बढ़े चलो, बढ़े चलो !

नयी सुबह जगा रही, नया विकास हो रहा,
जगी नवीन जिन्दगी, विनाश मौन सो रहा।
कि बाह आज खोलती, नवीन राह लक्ष्य की।
कि भाग्यवाद की फिजा गुजर चुकी, सिमट चुकी।
उठो कुदाल थाम लो कि श्रम नवीन धर्म है—
उठो ! जवा बढ़ चलो कि भाग्य खुद गढ़े चलो।
रुको नहीं, झुको नहीं, बढ़े चलो, बढ़े चलो।

लहर तिरंगे

सबसे ऊपर रंग बलिदानी, याद दिलाता वह कुर्बानी,
भारत के कण-कण के अन्दर, अंकित जिनकी अमर कहानी।
ले उससे नित नयी प्रेरणा, उर्मिल गति से फहर तिरंगे।
लहर-लहर कर लहर तिरंगे।

श्वेत रंग हमको बतलाता, सत्य सदा है शिव का दाता,
इस जीवन का सार यही है, जियो और जीने दो भ्राता,
सुधा जगत् को पिला प्रेम की, पलभर भी मत ठहर तिरंगे।
लहर-लहर कर लहर तिरंगे।

श्रम की सूचक हरियाली, दे वह अनुपम शक्ति निराली,
खेत और खलिहानों में जो, भर दे अगर अमर हरियाली,
है अशोक, हर शोक विश्व के निशिदिन आठों पहर तिरंगे।
लहर लहर कर लहर तिरंगे।

लाज मा की बचाना तुम्हे है कसम

देश है साथ मे हर समय, हर कदम।
तुम अकेले नही, तुम अकेले नही॥

शीत मे प्रीति की आग को ताप लो,
इन पहाडो से मा का हृदय माप लो,
राष्ट्ररक्षा सदा वीरता का नियम।
देश है साथ मे हर समय, हर कदम।
तुम अकेले नही, तुम अकेले नही॥

स्वर्ण देंगे कि तुम अस्त्र से सज सको,
रक्त देंगे कि तुम मृत्यु भय तज सको,
त्याग-बलिदान का टूट पाये न क्रम।
देश है साथ मे हर समय, हर कदम।
तुम अकेले नही, तुम अकेले नही॥

कौन तुम को सका जीत है आज तक,
हार हिम्मत गये हैं सिकन्दर तलक,
लाज मा की बचाना तुम्हे है कसम।
देश है साथ मे हर समय, हर कदम।
तुम अकेले नही, तुम अकेले नही॥

● विद्यावती मिश्र

वदना के स्वर

वदना के इन स्वरो मे, एक स्वर मेरा मिला लो।

बदिनी मा को न भूलो,
राग मे जब मत्त झूलो,
अर्चना के रत्न कण मे, एक कण मेरा मिला लो।

जब हृदय का तार बोले,
शृखला के बन्द खोले,
हो जहा बलि शीश अगणित, एक सिर मेरा मिला लो।

● सोहनलाल द्विवेदी

वतन

हरइक शमअ है, अन्जुमन के लिए।
सब अहले-वतन है, वतन के लिए।

न रख पास कौडी, कफन के लिए,
खजाने लुटा दे, वतन के लिए।

वतन की गरीबी पे नाला नहो,
खजाना है तू खुद, वतन के लिए।

वही नब्ज है जिन्दगी का निशा,
तडपती रहे जो वतन के लिए।

इसी मौत मे है मसीहाइया,
मुबारक है मरना, वतन के लिए।

● 'ओश' मल्सियानी

वतन की आबरू खतरे मे है

वतन की आबरू खतरे मे है, होशियार हो जाओ,
हमारे इम्तहा का वक्त है, तैयार हो जाओ।

हमारी सरहदो पर खून बहता है, जवानो का,
हुआ जाता है दिल छलनी हिमालय की चट्टानो का।
उठो रुख फेर दो दुश्मन की तोपो के दहानो का,
वतन की सरहदो पर आहिनी दीवार हो जाओ।

वह जिनको सादगी मे हमने आखो पर बिठाया था,
वह जिनको भाई कहकर हमने सीने से लगाया था।
वह जिनकी गरदनो मे हार बाहो का पहनाया था,
अब उनकी गरदनो के वास्ते तलवार हो जाओ।

न हम इस वक्त हिन्दू हैं, न मुस्लिम हैं, न ईसाई,
अगर कुछ हैं तो हैं इस देश इस धरती के शैदाई।
इसीको जिन्दगी देंगे इसी से जिन्दगी पाई,
लहू के रग से लिक्खा हुआ इकरार हो जाओ।

खबर रखना, कोई गद्दार साजिश कर नही पाये,
नजर रखना, कोई जालिम तिजोरी भर नही पाये,
हमारी कौम पर तारीख तोहमत धर नही पाये,
वतन दुश्मन दरिन्दो के लिए ललकार हो जाओ।

● साहिर लुधियानवी

वतन की राह मे

वतन की राह मे, वतन के नौजवां शहीद हो।
पुकारते हैं ये जमीनो-आसमां शहीद हो।

शहीद! तेरी मौत ही, तेरे वतन की जिन्दगी।
तेरे लहू से जग उठेगी, इस चमन की जिन्दगी।
खिलेंगे फूल उस जगह पै, तू जहा शहीद हो।

तू आज उठ वतन के दुश्मनो से इन्तकाम ले।
इन अपने दोनो बाजुओ से, खजरो का काम ले।
चमन के वास्ते चमन के बागबा, शहीद हो।

पहाड तक भी कापने लगे तेरे जुनून से।
तू आसमा पै इन्कलाब, लिख दे अपने खून से।
जमी नही, तेरा वतन है आसमा, शहीद हो।

वतन की लाज जिसको थी, अजीज अपनी जान से।
वो नौजवान जा रहा है, आज कितनी शान से।
इक जवा की खाक पर, हर इक जवां शहीद हो।

है कौन खुशनसीब मा, कि जिसका ये चिराग है?
वो खुशनसीब है कहा, ये जिसके सर का ताज है।
अमर वो देश क्यो न हो, कि तू जहा शहीद हो।

वतन पर कटने-मरने के लिए तैयार हो जाओ

जवानो ! सो चुके जागो, उठो, बेदार हो जाओ,
वतन पर कटने-मरने के लिए तैयार हो जाओ।

समझते हो जमाना साफ हमसे खुलके कहता है,
हिमाला का है दिल छलनी हमारा खून बहता है,

इसी मे रात-दिन दुख सहके भी खामोश रहता है,
मजा आ जाए तुम लोहे की जब दीवार हो जाओ।

न हिन्दू हैं, न ईसाई, न हम देखो मुसलमा हैं,
वतन पर, देश पर, सौ दिल से अब सौ जा से कुर्बा है,

हमी तो देश भारत के सिपाही है, निगहबा हैं,
जमा दो रग अपना खजरे खूखार हो जाओ।

बडे गद्दार हैं, इन दुश्मनो पर अब नजर रखना,
हमेशा हर घडी बस इनकी साजिश की खबर रखना,

जहा तक हो सके हर बात मे अपना असर रखना,
यह है बिस्मिल का कहना हर तरह होशियार हो जाओ।

● बिस्मिल इलाहाबादी

वह देश कौन-सा है ?

मनमोहिनी प्रकृति की जो गोद मे बसा है,
सुख स्वर्ग-सा जहा है, वह देश कौन-सा है ?
जिसका चरण निरन्तर रत्नेश धो रहा है,
जिसका मुकुट हिमालय, वह देश कौन-सा है ?

नदिया जहा सुधा की धारा बहा रही हैं,
सींचा हुआ सलोना, वह देश कौन सा है ?
जिसके बडे रसीले फल कन्द, नाज, मेवे,
सब अग मे सजे हैं, वह देश कौन सा है ?

जिसमे सुगन्ध वाले सुन्दर प्रसून प्यारे,
दिन-रात हस रहे हैं, वह देश कौन-सा है ?
मदान, गिरि, वनो मे हरियालिया लहकती
आनन्दमय जहा है, वह देश कौन-सा है ?

जिसकी अनन्त धन से धरती भरी पडी है,
ससार का शिरोमणि, वह देश कौन-सा है ?
सबसे प्रथम जगत मे, जो सभ्य था यशस्वी,
जगदीश का दुलारा, वह देश कौन-सा है ?

पृथ्वी निवासियो को जिसने प्रथम जगाया
शिक्षित किया, सुधारा, वह देश कौन-सा है ?
जिसमे हुए अलौकिक तत्वज्ञ ब्रह्मज्ञानी,
गौतम, कपिल, पतजलि वह देश कौन-सा है ?

छोड़ा स्वराज्य तृणवत्, आदेश से पिता के,
वह राम थे जहाँ पर, वह देश कौन सा है ?
नि:स्वार्थ शुद्ध प्रेमी भाई भले जहाँ थे,
लक्ष्मण-भरत सरीखे, वह देश कौन-सा है ?

देवी पतिव्रता श्री सीता, जहाँ हुई थी,
माता पिता जगत् का, वह देश कौन-सा है ?
आदर्श नर जहाँ पर थे बाल ब्रह्मचारी,
हनुमान, भीष्म, शंकर वह देश कौन-सा है ?

विद्वान, वीर, योगी, गुरु राजनीतिकों के
श्रीकृष्ण थे जहाँ पर, वह देश कौन सा है ?
विजयी, बली जहाँ के बेजोड़ शूरमा थे,
गुरु द्रोण, वीर अर्जुन, वह देश कौन सा है ?

जिसमें दधीचि दानी, हरिश्चन्द्र, कर्ण से थे
सब लोक का हितैषी, वह देश कौन सा है ?
वाल्मीकि, व्यास ऐसे, जिसमें महान कवि थे,
श्री कालिदास वाला, वह देश कौन-सा है ?

निष्पक्ष न्यायकारी जन जो पढ़े-लिखे हैं,
वे सब बता सकेंगे, वह देश कौन-सा है ?
हैं कोटि कोटि भाई सेवक सपूत जिसके
भारत सिवाय दूजा, वह देश कौन-सा है ?

● रामनरेश त्रिपाठी

वही देश है मेरा

वही देश है मेरा,
देश है मेरा, वही देश है मेरा।

वेद-ऋचाओ म गूजा है, जिसका अम्बर नीला।
जहा राम घनश्याम कर गए, युग युग अदभुत लीला।
जहा बासुरी बजी ज्ञान की, जागा स्वर्ण सवेरा।
वही देश है मेरा।

जहा बुद्ध ने सत्य-अहिंसा का था अलख जगाया।
गुरु नानक ने विश्वप्रेम का राग जहा सरसाया।
मेरे-तेरे भेद-भाव का मन से मिटा अधेरा।
वही देश है मेरा।

जहा विवेकानन्द सरीखे हुए तत्त्व के ज्ञानी।
रामतीर्थ के अधरो पर थी जिसकी अमर कहानी।
जिसके कण-कण मे लेता है सूरज नित्य बसेरा।
वही देश है मेरा।

विद्रोह करो, विद्रोह करो !

आओ वीरोचित कर्म करो
मानव हो तो कुछ धर्म करो
यों कब तक सहते जाओगे, इस परवशता के जीवन से
विद्रोह करो, विद्रोह करो !

जिसने निज स्वार्थ सदा साधा,
जिसने सीमाओं में बांधा,
आओ उससे, उसकी निर्मित, जगती के अणु-अणु कण-कण से
विद्रोह करो, विद्रोह करो !

विप्लव-गायन गाना होगा,
सुख-स्वर्ग यहां लाना होगा,
अपने ही पौरुष के बल पर, जर्जर जीवन के क्रन्दन में
विद्रोह करो, विद्रोह करो !

क्या जीवन व्यर्थ गवाना है,
कायरता पशु का बाना है,
इस निरुत्साह मुर्दा दिल से, अपने तन से, अपने मन से
विद्रोह करो, विद्रोह करो !

● शिवमंगलसिंह 'सुमन'

वीर तुम्हे ही विजय सजोना

वीर, तुम्हें ही विजय सजोना।

जो भी हो सत् ध्येय तुम्हारा,
कुछ भी हो पाथेय सहारा,
बढते जाना, पथ-दूरी से—
वीर-धीर कब थककर हारा ?
यम-जैसे दृढ कदम बढाना,
समय नही सशय मे खोना।
वीर, तुम्हे ही विजय सजोना।

गडड-गडड घन-घोर-घोष हो,
तडड तडड तडिता सरोष हो,
शक्रायुध-टकार भयकर—
प्रलयकर-सा भरा जोश हो।
बढते जाना समर-साहसी,
व्याघातो से, व्यग्र न होना।
वीर, तुम्हें ही विजय सजोना।

तुग-शृग मग-मध्य खडा हो,
उग्र उदधि मे ज्वार अडा हो,
तीव्र तमिस्रा, झझानिल मे—
साहस भी लगता उखडा हो।
क्रूर बने हो महाभूत, पर
पराभूत, ओ शूर, न होना।
वीर, तुम्हे ही विजय सजोना।

● बालकृष्ण गर्ग

वीर-वेश धार लो

सुदूर शृंग से सुनो पुकार आज आ रही।
सपूत देश के उठो सु वीर वेश धार लो।

चढो दुरूह शृंग पर प्रचंड वायु-वेग से,
जवाब आज शत्रु को मिले सुतीक्ष्ण तेग से।
बढा के प्रीति हस्त जो—कि भूल की सुधार लो।
सपूत देश के उठो, सु-वीर-वेश धार लो।

गुह का देश रौंदती जो आ रही हैं टोलियां,
विशुद्ध बुद्ध भूमि पर चला रही हैं गोलियां।
उठे कुदृष्टि, शत्रु-मुण्ड देह से उतार लो,
सपूत देश के उठो, सु-वीर-वेश धार लो।

बहिन के नेह, प्रेयसी के राग की शपथ तुम्हें,
पवित्र मातृ-भूमि के सुहाग की शपथ तुम्हें,
रुको न, इंच-इंच भूमि देश को उबार लो।
सपूत देश के उठो मु-वीर-वेश धार लो।

विभिन्न जाति धर्म, बोल चाल भिन्न वेश है,
मगर सभी की मातृ-भूमि एक हिन्द देश है।
विजय का सिंहनाद एक कण्ठ से उचार लो,
सपूत देश के उठो सु-वीर-वेश धार लो।

● शान्ति अग्रवाल

वीर शिवा के वशज है हम

वीर शिवा के वशज हैं हम, राणा की सतान हैं।
फूल महकते मधुवन वाले, तारो की मुस्कान हैं।

यह धरती वलिदानो की,
भीड लगी वरदानो की,
गिनती क्या मधुगानो की,

चन्द्रगुप्त के अनुयायी हम, विक्रम के जयगान है,
वीर शिवा के वशज हैं हम, राणा की सन्तान हैं।

हमको वढना आता है,
रिपु से लडना आता है,
रण मे अडना आता है,

गाधी तिलक-जवाहर माली मधु वीणा की तान हैं,
वीर शिवा के वशज हैं हम, राणा की सन्तान हैं।

कोई जाल बिछाओ ना,
अगुली इधर उठाओ ना,
मधु मे जहर मिलाओ ना,

नही झुके हम, नही झुकेंगे, शक्तिपुज द्युतिमान हैं,
वीर शिवा के वशज हैं हम, राणा की सन्तान हैं।

सिन्धु इधर लहराता है,
हिमगिरि उधर लुभाता है,
प्यारी भारत माता है,

गंगा-यमुना की स्वर लहरी, नूतन स्वप्न वितान हैं,
वीर शिवा के वंशज हैं हम, राणा की संतान हैं।

हम जीवन छलकायेंगे,
शान्ति-अहिंसा लायेंगे,
मिलकर प्यार सिखायेंगे,

पंचशील का मंत्र नया लाता अभिनव निर्माण है,
वीर शिवा के वंशज हैं, हम राणा की सन्तान हैं।

● अज्ञात

वीरो का कैसा हो बसंत

वीरो का कैसा हो बसंत ?

आ रही हिमाचल से पुकार
है उदधि गरजता बारबार,
प्राची पश्चिम भू-नभ अपार,
सब पूछ रहे हैं दिग्-दिगन्त,
वीरो का कैसा हो बसन्त ?

फूली सरसो ने दिया रग,
मधु लेकर आ पहुंचा अनग,
वधु वसुधा पुलकित अग-अग
हैं वीर वेश मे किन्तु कन्त,
वीरो का कैसा हो बसन्त ?

भर रही कोकिला इधर तान,
मारू बाजे पर उधर गान,
है रग और रण का विधान,
मिलने आए हैं आदि अन्त,
वीरो का कैसा हो बसन्त ?

गलबाहें हो या हो कृपाण,
चल चितवन हो या धनुषबाण,
हो रस-विलास या दलित-त्राण,
अब यही समस्या है दुरन्त,
वीरो का कैसा हो बसन्त ?

कह दे अतीत अब मौन त्याग,
लके तुझमे क्यो लगी आग ?
ऐ कुरुक्षेत्र ! अब जाग जाग,
बतला अपने अनुभव अनन्त !
वीरो का कैसा हो बसन्त ?

हल्दी घाटी के शिला खड,
ऐ दुर्ग सिंहगढ के प्रचड,
राणा सागा का कर घमड,
दे जगा आज स्मृतिया ज्वलन्त,
वीरो का कैसा हो बसन्त ?

भूषण अथवा कवि चन्द नही,
बिजली भर दे वह छद नही,
है कलम बधी स्वच्छद नही,
फिर हमे बतावे कौन हत !
वीरो का कैसा हो बसन्त ?

● सुभद्राकुमारी चौहान

वेला है बलिदान की

झूम-झूम कर आयी पावन
वेला है बलिदान की।
ओ भारत के वीर, लगा दो!
बाजी अपने प्राण को। वेला है बलिदान की।

सीमा से ललकार उठी है,
घाटी आज पुकार उठी है।
टकराने दो तुम तलवारें।
शपथ तुम्हें भगवान की! वेला है बलिदान की।

मातृ भूमि की आन बचाओ!
रणचण्डी की प्यास बुझाओ!
मर-मिट जाओ, अगर जरा भी,
लाज तुम्हे अपमान की! वेला है बलिदान की।

ओ भारत के वीर! लगा दो बाजी अपने प्राण की।
वेला है बलिदान की, वेला है बलिदान की।

● आरसी प्रसाद सिंह

कह दे अतीत अब मौन त्याग,
लंके तुझमे क्यो लगी आग ?
ऐ कुरुक्षेत्र ! अब जाग जाग,
बतला अपने अनुभव अनन्त !
वीरो का कैसा हो बसन्त ?

हल्दी घाटी के शिला खड,
ऐ दुर्ग सिहगढ के प्रचड,
राणा सागा का कर घमड,
दे जगा आज स्मृतिया ज्वलन्त,
वीरो का कैसा हो बसन्त ?

भूषण अथवा कवि चन्द नही,
बिजली भर दे वह छद नही,
है कलम बधी स्वच्छद नही,
फिर हमे बतावे कौन हृत !
वीरो का कैसा हो बसन्त ?

● सुभद्राकुमारी चौहान

वेला है बलिदान की

झूम-झूम कर आयी पावन
वेला है बलिदान की।
ओ भारत के वीर, लगा दो!
बाजी अपने प्राण को। वेला है बलिदान की।

सीमा से ललकार उठी है,
घाटी आज पुकार उठी है।
टकराने दो तुम तलवारें।
शपथ तुम्हें भगवान की! वेला है बलिदान की।

मातृ भूमि की आन बचाओ!
रणचण्डी की प्यास बुझाओ!
मर-मिट जाओ, अगर जरा भी,
लाज तुम्हें अपमान की! वेला है बलिदान की।

ओ भारत के वीर! लगा दो बाजी अपने प्राण की।
वेला है बलिदान की, वेला है बलिदान की।

● आरसी प्रसाद सिंह

शुभ सुख-चैन की बरखा बरसे

शुभ सुख चैन की बरखा बरसे, भारत भाग्य है जागा।
पंजाब, सिंधु, गुजरात, मराठा, द्राविड, उत्कल, बंगा,
चंचल सागर, विंध्य, हिमाचल, नीला यमुना गंगा।
तेरे नित गुण गायें, तुझसे जीवन पाए,
सब जन पायें आशा।

सूरज बनकर जग पर चमके, भारत नाम सुभागा।
जय हो, जय हो, जय हो, ज्य जय जय, जय हो,
भारत नाम सुभागा।

सबके दिल मे प्रीति बसाये, तेरी मीठी वाणी,
हर सूबे के रहने वाले, हर मजहब के प्राणी,
सब भेद व फर्क मिटाके सब गोदी मे तेरी आके,
गूथें प्रेम की माला।

सूरज बनकर जग पर चमके भारत नाम सुभागा।
जय हो, जय हो, जय हो, जय जय जय, जय हो,
भारत नाम सुभागा।

सुबह सवेरे पंख पखेरू तेरे ही गुण गाए,
बास भरी भरपूर हवाएं, जीवन मे ऋतु लायें,
सब मिलकर हिंद पुकारे, जय आजाद हिंद के नारे
प्यारा देश हमारा।

सूरज बनकर जग पर चमके, भारत नाम सुभागा।
जय हो, जय हो, जय हो, जय जय जय, जय हो,
भारत नाम सुभागा

श्रम के देवता किसान

जाग रहा है सैनिक वैभव, पूरे हिन्दुस्तान का,
गीता और कुरान का।

मन्दिर की रखवारी मे बहता 'हमीद' का खून है,
मस्जिद की दीवारो का रक्षक 'त्यागी' सम्पूर्ण है।
गिरजेघर की खडी बुर्जियो को 'भूपेन्द्र' पर नाज है,
गुरुद्वारो का वैभव रक्षित करता 'कीलर' आज है
धर्म भिन्न हैं, किंतु एकता का आवरण न खोया है,
फर्क कही भी नही रहा है, पूजा और अजान का।
गीता और कुरान का,
पूरे हिन्दुस्तान का।

दुश्मन ने इन ताल-तलैयो मे बारूद बिछाई है,
खेतो-खलियानो की पकी फसल मे आग लगाई है।
खेतो के रक्षक पुत्रो को, मा ने आज जगाया है
सावधान रहने वाले सैनिक ने बिगुल बजाया है।
पतझर को दे चुके विदाई, बुला रहे मधुमास हैं,
गाओ मिलकर गीत सभी, श्रम के देवता किसान का।
गीता और कुरान का,
पूरे हिंदुस्तान का।

सीमा पर आतुर सैनिक हैं, केसरिया परिधान मे,
सगीनो से गीत लिख रहे हैं, रण के मैदान मे।
माटी के कण-कण की रक्षा मे जीवन को सुला दिया,
लगे हुए गहरे घावो की पीडा तक को भुला दिया।

सिर्फ तिरंगे के आदेशों का निर्वाह किया जिसने,
पूजन करना है 'हमीद' जैसे हर एक जवान का।
गीता और कुरान का,
पूरे हिंदुस्तान का।

खिलने हर गुलाब का सौरभ, मधुवन की जागीर है,
कलियो और कलम से लिपटी, अलियो की तकदीर है।
इसके फूल-पात पर, दुश्मन ने तलवार चला डाली,
शायद उसको ज्ञान नहीं था, जाग गया सोया माली।
गदे और गुलाबो से मत छेड़छाड़ करना छोडो,
बेटा-बेटा जागरूक है, मेरे देश महान का।
गीता और कुरान का,
पूरे हिन्दुस्तान का।

● वीरेंद्र शर्मा

श्रम-गीत

समय नही खोने का भाई, पूरे करना काम।

गगा-यमुना की कल कल से, हिमगिरि पर होती हलचल से,
खलिहानो-खेतो-जगल मे आती है आवाज—
समय एक होने का भाई, सुधरें सारे काम।

बाहो से इस्पात ढला हो, सासो मे बारूद भरा हो,
नस-नस मे ताडव होता हो, दुश्मन करे सलाम।
समय नही रोने का भाई, हिम्मत से लो काम।

श्रम जीवन का सजीवन है, कामचोर का धिक् जीवन है,
श्रम से विकसित 'सरस' सुमन है, लाओ नया प्रभात।
समय नही सोने का भाई, अब 'आराम हराम'।

● मधुबाला सब

सबोधन गीत

कर चले हम फिदा जान-तन साथियो।
अब तुम्हारे हवाले वतन साथियो।

सास थमती गई, नब्ज जमती गई,
फिर भी बढते कदम को न रुकने दिया।
कट गए सिर हमारे तो कुछ गम नही,
सिर हिमालय का हमने न झुकने दिया।
मरते मरते रहा बाकपन साथियो।

जिन्दा रहने के मौसम बहुत है मगर,
जान देने की रुत रोज आती नही।
हुस्न और इश्क दोनो को रुसवा करे,
वह जवानी जो खू मे नहाती नही।
आज धरती बनी है दुल्हन साथियो।

राह कुर्बानियो की न वीरान हो,
तुम सजाते हो रहना नये काफिले।
जीत का जश्न इस जश्न के बाद है,
जिन्दगी मौत से मिल रही है गले।
बाध लो अपने सिर से कफन साथियो।

खैच दो अपने खू से जमी पर लकीर,
इस तरफ आने पाये न रावण कोई।
तोड दो हाथ गर हाथ उठने लगे,
छूने पाये न सीता का दामन कोई।
राम ही तुम, तुम्ही लक्ष्मण साथियो।

सवारने चलो वतन

सवारते चलो वतन, दुलारते चलो वतन,
मुसीबतें हजार हो, रुकें नही बढे चरण।
सवारते चलो वतन।

निखर रहा शबाब है, ये वक्त लाजवाब है,
जिधर बढे कदम, उधर जानो कि इकलाब है।
समाज के सडे-गले विचार को करो दफन,
सवारते चलो वतन।

ये देश तो हसीन है, विहस रही जमीन है।
मगर यहा का आदमी, अभी नही जहीन है।
बिखेर दो विकास की चमक दमक-भरी किरन।
सवारते चलो वतन।

उठो खुदा का नाम लो व बाजुओ से काम लो,
गिरे हुए समाज को बढाके हाथ थाम लो।
अगर न बुलबुलें चहक उठी, फिजूल है चमन।
सवारते चलो वतन।

● एन्थोनी दीपक

सबोधन गीत

कर चले हम फिदा जान-तन साथियो।
अब तुम्हारे हवाले वतन साथियो।

सास थमती गई, नब्ज जमती गई,
फिर भी बढते कदम को न रुकने दिया।
कट गए सिर हमारे तो कुछ गम नही,
सिर हिमालय का हमने न झुकने दिया।
मरते मरते रहा बाकपन साथियो।

जिन्दा रहने के मौसम बहुत हैं मगर,
जान देने की रुत रोज आती नही।
हुस्न और इश्क दोनो को रुसवा करे,
वह जवानी जो खू मे नहाती नही।
आज धरती बनी है दुल्हन साथियो।

राह कुरबानियो की न वीरान हो,
तुम सजाते हो रहना नये काफिले।
जीत का जश्न इस जश्न के बाद है,
जिन्दगी मौत से मिल रही है गले।
बाध लो अपने सिर से कफन साथियो।

खैच दो अपने खू से जमी पर लकीर,
इस तरफ आने पाये न रावण कोई।
तोड दो हाथ गर हाथ उठने लगे,
छूने पाये न सीता का दामन कोई।
राम ही तुम, तुम्ही लक्षमण साथियो।

सपनों को साकार करें

आओ, हम सब भारत मां की माटी से शृंगार करें।

यह वह धरती, जिसने हमको निज उत्सर्ग सिखाया है,
यह वह धरती, जिसने हमको अपना अमिय पिलाया है।
आज उसी धरती की रक्षा में अपने उद्गार करें।

इस जीवन-धन से भी प्यारा हमको अपना देश है,
अलग-अलग हैं पथ हमारे, किन्तु एक परिवेश है।
आओ, हम-सब राष्ट्र-धर्म के सपनों को साकार करें।

स्वतन्त्रता से बड़ा जगत् में और कौन-सा आभूषण,
स्वतन्त्रता से बड़ा जगत में और कौन-सा संघर्षण।
इसीलिए अब स्वतन्त्रता के चरणों में उपहार धरें।

● प्रेमशंकर रघुवंशी

सर-फरोशी की तमन्ना

सरफरोशी[1] की तमन्ना अब हमारे दिल मे है,
देखना है जोर कितना बाजु-ए-कातिल[2] मे है।

रहबरे-राहे-मुहब्बत[3] रह न जाना राह मे,
लज्जते-सहरा नवर्दी[4] दूरि-ए-मंजिल मे है।

वक्त आने दे बता देंगे तुझे ऐ आस्मा,
हम अभी से क्या बताए, क्या हमारे दिल मे है।

ऐ शहीदे-मुल्को मिल्लत[5] तेरे जज्बो के निसार[6],
तेरी कुरबानी की चर्चा गैर की महफिल मे है।

अब न अगले वलवले[7] हैं, और न अरमानो की भीड,
एक मिट जाने की हसरत अब दिले-'बिस्मिल' मे है।

● रामप्रसाद 'बिस्मिल'

---

१ सिर कटाने की। २ हत्यारे की भुजा। ३ प्रेम मार्ग का पथिक।
४ जंगल में घूमने का आनन्द। ५ देश और राष्ट्र पर न्योछावर होने वाले।
६ न्योछावर। ७ जोश, उत्साह।

सारे जहा से अच्छा

सारे जहा से अच्छा हिन्दोस्ता हमारा,
हम बुलबुलें हैं इसकी, यह गुलिस्ता हमारा।
गुरबत मे हो अगर हम, रहता है दिल वतन मे,
समझो वही हमे भी, दिल हो जहा हमारा।

परवत वो सबसे ऊचा, हमसाया आसमा का,
वह सन्तरी हमारा, वह पासबा हमारा।
गोदी मे खेलती हैं, जिसकी हजारो नदिया,
गुलशन है जिनके दम से रश्केजिना हमारा।

मजहब नही सिखाता आपस मे बैर रखना,
हिन्दी हैं हम, वतन है हिन्दोस्ता हमारा।
यूनान, मिस्रो, रूमा सब मिट गये जहा से,
अब तक मगर है बाकी नामोनिशा हमारा।

कुछ बात है कि हस्ती मिटती नही हमारी,
सदियो रहा है दुश्मन दौरे-जमा हमारा।
'इकबाल' कोई महरम अपना नही जहा मे,
मालूम क्या किसी को दर्देनिहा हमारा।

● अल्लामा इकबाल

सीमा के सिपाही के नाम !

मा का प्यार, बहिन की ममता,
शिशुओं का सुख छोड कर !
यौवन मे यौवन के सपनो
से अपना मुख मोड कर !

आधी-सा चल पडा हिमानी
घाटी मे भूचाल-सा !
तन कर खडा राष्ट्र-रक्षा को
तू फौलादी ढाल सा !

ऊबड-खाबड पथ राह का
तू अनजाना आज है
लाघ रहा हिम-शिखर हाथ
मे तेरे मा की लाज है !
सर पर कफन, कफन वाला सर
लिये हथेली पर अपने
नेफा की धरती पर करने
चला सत्य मा के सपने !

शोणित- का अभिषेक आज
करने पर्वत कैलाश पर
प्रलयकर को चला जगाने
मन के दृढ विश्वास पर !

बलि पन्थी ! तू आज प्रलय के
पर्दे स्वयं हटाता चल !
हिमगिरि के प्राणों में सोया
ज्वालामुखी जगाता चल !

अगर विरह की आग भड़क कर
जले उसे जल, जाने दे।
अगर मिलन की वेलाएं भी
टलें आज, टल जाने दे।

आज गरजती तोपों से
करना तुझको आलिंगन है।
आगे बढ़कर महामृत्यु को
देना विष का चुम्बन है।

आज मरण त्यौहार राष्ट्र ने
युग-युग बाद मनाया है।
आज जवानी को जौहर
दिखलाने का दिन आया है।

● सुमनेश जोशी

स्वतन्त्र गान है

घोर अंधकार हो,
चल रही बयार हो,
आज द्वार-द्वार पर यह दिया बुझे नहीं,
यह निशीथ का दिया ला रहा विहान है।

शक्ति का दिया हुआ,
शक्ति को दिया हुआ,
भक्ति से दिया हुआ,
यह स्वतन्त्रता — दिया,
रुक रही न नाव हो,
जोर का बहाव हो,
आज गंग-धार पर यह दिया बुझे नहीं,
यह स्वदेश का दिया प्राण के समान है।

यह अतीत कल्पना,
यह विनीत प्रार्थना,
यह पुनीत भावना,
यह अनन्त साधना,
शान्ति हो, अशान्ति हो,
युद्ध, सन्धि, क्रान्ति हो
तीर पर, कछार पर, यह दिया बुझे नहीं,
देश पर, समाज पर, ज्योति का वितान है।

तीन-चार फूल हैं,
आस-पास धूल हैं,
बास हैं—बबूल हैं,
घास के दुकूल हैं,
वायु भी हिलोर दे,
फूक दे, चकोर दे,
कब्र पर, मजार पर, यह दिया बुझे नहीं,
यह किसी शहीद का पुण्य-प्राण दान है।

झूम-झूम बदलिया
चूम चूम बिजलिया,
आंधियां उठा रहीं,
हलचलें मचा रहीं,
लड रहा स्वदेश हो,
यातना विशेष हो,
क्षुद्र जीत-हार पर, यह दिया बुझे नहीं,
यह स्वतंत्र भावना का स्वतन्त्र गान है।

● गोपालसिंह नेपाली

स्वतन्त्र देश यह, सदा स्वतन्त्र रहेगा

अछोर-सिन्धु-से बहो, अडिग हिमाद्रि-से रहो,
अजेय आस्था लिये, अकम्प-कण्ठ से कहो—
स्वतन्त्र देश यह, सदा स्वतन्त्र ही रहेगा।
प्रत्येक व्यक्ति 'जय महान् हिन्द' ही कहेगा।

शौर्य का प्रतीक यह तिरंग-ध्वज झुके नहीं,
कीर्ति का उदीयमान सूर्य-रथ रुके नहीं।
प्रशस्त वक्ष पर प्रचण्ड वज्र यदि गिरे, सहो—
मगर प्रत्येक क्षण यही अकम्प-कंठ से कहो—
स्वतन्त्र देश यह सदा स्वतन्त्र ही रहेगा।
प्रत्येक व्यक्ति 'जय महान् हिन्द' ही कहेगा।

प्राण-मोह त्याग दो, स्वदेश की पुकार पर—
अभीत शीश दो, मगर अनेक सिर उतार कर।
बनो अदम्य अग्नि-ज्वाला, शत्रु वश को दहो।
दिशा दिशा गुंजार दो, अकम्प कंठ से कहो—
स्वतन्त्र देश यह, सदा स्वतन्त्र ही रहेगा,
प्रत्येक व्यक्ति 'जय महान् हिंद' ही कहेगा।

अतीत कह रहा— भविष्य के सिंगार बन जियो।
महान् देश के महान् कर्णधार बन जियो।
शकारि देश के सपूत, शत्रु-दश मत सहो।
अडोल एक लक्ष लो, अकम्प-कंठ से कहो—
स्वतन्त्रत देश यह, सदा स्वतन्त्र ही रहेगा।
प्रत्येक व्यक्ति 'जय महान हिंद' ही कहेगा।

● शैलेश मटियानी

स्वतन्त्रता पुकारती !

हिमाद्रि तुग श्रृ ग से,
प्रबुद्ध शुद्ध भारती ।
स्वयप्रभा समुज्वला—
स्वतन्त्रता पुकारती—
अमर्त्य वीर पुत्र हो, दृढ प्रतिज्ञ सोच लो,
प्रशस्त पुण्य पन्थ है—बढे चलो ! बढे चलो !

असख्य कीर्ति-रश्मिया,
विकीर्ण दिव्य दाह-सी ।
सपूत मातृ-भूमि के,
रुको न शूर साहसी !
अराति-सैन्य सिंधु मे सुवाडवाग्नि-से जलो,
प्रवीर हो, जयी बनो—बढे चलो ! बढे चलो !

● जयशकर प्रसाद

स्वतन्त्र भारत

जय स्वतन्त्र भारत, जय जननी,
जय नव भारत हे।

जय नवीन आकाश, धरा नव,
चचल अचल, हर्ष भरा भव,
जय विमुक्त विहगो के कलरव,

नव-जीवनमय नव-चेतनमय,
जय नव जाग्रत हे।
जय स्वतन्त्र भारत, जय जननी,
जय नव भारत हे।

जय नवीन ऊषा, नव सध्या,
नव स्वप्नो की रजनीगधा,
जय हिमाद्रि नव, जय नव विध्या,

जय नवीन रथ, जय नवीन पथ,
जय नवगति-रत हे।
जय स्वतन्त्र भारत, जय जननी,
जय नव भारत हे।

जय नव स्वर की नवल गजना
जय नव कर की नवल सर्जना,
जय नव शिर की नवल अर्चना,

जय नव जन-मन, जय नव पल क्षण,
तन-मन-उन्नत हे।
जय स्वतन्त्र भारत, जय जननी,
जय नव भारत हे।

क्षेत्र मे बढो।
का सदा पढो।

स्वराज्य पा सुखी

यत्न कीजिए।
शान दीजिए।

उठो! स्वदेश के सपूत क कष्ट भी सहो।
विसार द्वेष-दम्भ, पाठ प्रेम ा सुखी रहो।
स्वराज्य प्राप्ति के लिए विशेष
स्वदेश के सुधार मे सहर्ष • दु ख को सहे।
स्वजन्मभूमि के लिए अनन्त जनता यहा रहे।
बलिष्ठ धीर वीर हो, स्वराज्य प्रभा-प्रकाश हो।
श्री निवास हो।

स्वतन्त्र देश हो न दास, दैन्य मे सदा बहो।
समृद्धि-युक्त हो सभी, न दी पा सुखी रहो।
सदैव शान्ति, सत्य-शील का ऽ
परावलम्ब नाश हो, स्वदेश , साहसी बनो।
अनन्य देश-प्रेम की तरग गर को हनो।
बलिष्ठ धीर वीर हो, स्वराज्य नही हृदं हिले।
मोद मे मिलें।

मनुष्य-जन्म पा उदार योग्य मे पुन लहो।
अनीति अधकार वैर के विव पा सुखी रहो।
विपत्ति विघ्न व्यूह नीति से
समस्त भारतीय वृन्द नित्य कसान रो रहे।
विलुप्त भारतीय शक्ति विश्व हाय सो रहे।
बलिष्ठ धीर वीर हो, स्वराज्य की जला रहे।
हैं सता रहे।

निरन्न वस्त्रहीन हैं दुखी देश को कहो।
विचारते न सभ्य, नेत्र मूद पा सुखी रहो।
दुकाल रोग शोक लूट घूस
बचाइए प्रभो अनन्त कष्ट
दुखावसान हो स्वराज्य के ऽ
बलिष्ठ धीर वीर हो, स्वराज्य

हरिश्चन्द्रदेव वर्मा 'चातक'

हम अपना देश सजाएगे

हम भारत मा के वीर पुत्र, हम अपना देश सजाएगे ।

हम नही किसी से डरते हैं, मानव की पीडा हरते हैं।
अपने साहस से हम अपना, नूतन इतिहास बनाएगे ।
हम अपना देश सजायेंगे ।

हो काटो वाली कठिन डगर, पग-पग पर फैले हो पतझर,
तव हम आगन मे उपवन के, वैभव वसत बिखरायेंगे ।
हम अपना देश सजायेंगे ।

प्रतिदिन श्रम-सुमन खिलाते हैं, सुरभि सुगध फैलाते हैं,
हम श्रेष्ठ पसीने से अपने, धरती को नित नहलायेंगे ।
हम अपना देश सजायेंगे ।

हम करते प्यार उजाला से, टकराते काल करालो से,
हमने सकल्प उठाया है, समता का सूरज लायेंगे ।
हम अपना देश सजायेंगे ।

● रामभरोसे गुप्त 'राकेश'

हमने डरना कभी न जाना

हमने डरना कभी न जाना, आंधी से, तूफ़ान से।
देखो, हम बढ़ते जाते हैं कैसे अपनी शान से।

कांटे आते, उन्हें हटाते, तुरन्त बनाते राह,
बड़े-बड़े रोड़ों की भी करते न कभी परवाह।
सिर अपना ऊंचा रखते हैं, हरदम हम अभिमान से,
हमने डरना कभी न जाना आंधी से, तूफ़ान से।

दिन में राह बताता सूरज, फिर जब आती रात,
चांद-चांदनी बिखराता है, करता हमसे बात।
हम ऐसे हरदम चलते हैं, राह देखते ध्यान से,
हमने डरना कभी न जाना आंधी से, तूफ़ान से।

मंजिल पर ही रुकना हमको, हो कितनी भी दूर,
लम्बी राह नहीं कर सकती हमें कभी मजबूर।
हमको अपनी मंजिल प्यारी, ज्यादा अपनी जान से,
हमने डरना कभी न जाना आंधी से, तूफ़ान से।

पैरों में छाले पड़ते हैं, पर न टूटता ध्यान,
हमें प्रेरणा हरदम देता है, मंजिल का ज्ञान।
जहां पहुंच जाएंगे हम, यों चलते-चलते आन से,
हमने डरना कभी न जाना आंधी से, तूफ़ान से।

● श्रीप्रसाद

हम भारत के वीर सिपाही

हम भारत के वीर सिपाही जन्मभूमि की शान हैं,
देश-जाति पर मर मिटने वालो की हम सन्तान हैं।

उत्तर मे ये खडा हिमालय, जिसके सर पर ताज है,
दक्षिण का सागर जिसके पग, छूने को मोहताज है।
पूरब मे बगाल, जहा गीतो के खिलते फूल है,
पश्चिम मे पजाब कि जिसमे पाच सुरो का साज है।
काश्मीर वैभव जिसका, वह भारतवर्ष महान् है।

यह वह पावन देश कि जिसमे जन्म लिया बलराम ने,
आदर्शों का पाठ पढाया राघव राजा राम ने।
जिसे खून से सीचा अपने चन्द्रगुप्त बलधाम ने
जिससे ज्ञान-अहिंसा पाया चीन, मलाया, श्याम ने।
महावीर, गौतम के उपदेशो का तना वितान है।

इस मिट्टी मे गूज रही है, गौरव की गाथावली,
इस धरती पर इतिहासो की, अमर दीपिका है जली।
यह वह धरती जिस पर, दवो का भी मन ललचा गया,
यह वह प्यारा देश की जिसके सम्मुख जग शरमा गया।
वीरो ने इसकी पूजा की, दे-देकर बलिदान हैं।

गाधी के आदश, हमारे सपनो का आधार हैं,
वीर जवाहर की आशा के, हम सपने साकार हैं।
आजादी की क्यारी के हम रग-बिरगे फूल हैं,
वरदानो से भरी नदी के हम लहराते कुल हैं।
सुख से जिओ और जीने दो यही हमारा गान है।

हम मस्तो मे

हम मस्तो मे आन मिले, कोई हिम्मत वाला रे,
दल बादल-सा निकल चला यह दल मतवाला रे।
हम मस्तों मे आन मिले, कोई हिम्मत वाला रे।

बिजली-सी तड़पन नस-नस मे, आज नही हम अपने बस मे,
बहुत दिनो अन्याय का हमने बोझ सम्भाला रे।
हम मस्तो मे आन मिले कोई हिम्मत वाला रे।

तूफानो से टक्कर लें हम, पर्वत के दो टूक करें हम,
नये रक्त मे लहर ले रही, जीवन ज्वाला रे।
हम मस्तो मे आन मिले कोई हिम्मत वाला रे।

हम सब भारतवासी है !

हम पजाबी, हम गुजराती, बगाली, मदरासी हैं,
लेकिन हम इन सबसे पहले केवल भारतवासी है।
हम सब भारतवासी है !

हमे प्यार आपस मे करना, पुरखो ने सिखलाया है,
हमे देश-हित, जीना-मरना, पुरखो ने सिखलाया है।
हम उनके बतलाये पथ पर, चलने के अभ्यासी है।

हम बच्चे अपने हाथों से, अपना भाग्य बनाते हैं,
मेहनत करके बजर धरती से सोना उपजाते हैं।
पत्थर को भगवान बना दें, हम ऐसे विश्वासी है।

वह भाषा हम नही जानते, बैर-भाव सिखलाती जो,
कौन समझता नही, बाग मे बैठी कोयल गाती जो।
जिसके अक्षर देश-प्रेम के, हम वह भाषा भाषी है।

● निरकारदेव 'सेवक'

हम होंगे कामयाब

होंगे कामयाब,
होंगे कामयाब,
हम होंगे कामयाब एक दिन,
मन मे है विश्वास, पूरा है विश्वास,
हम होंगे कामयाब एक दिन।

होगी शान्ति चारो ओर,
होगी शान्ति चारो ओर,
होगी शान्ति चारो ओर एक दिन,
मन मे है विश्वास, पूरा है विश्वास,
होगी शान्ति चारो ओर एक दिन।

नही डर किसी का आज,
नही भय किसी का आज,
नही डर किसी का आज एक दिन,
मन मे है विश्वास, पूरा है विश्वास,
नही डर किसी का आज एक दिन।

हम चलेंगे साथ साथ,
डाल हाथो मे हाथ,
हम चलेंगे साथ-साथ एक दिन।
मन मे है विश्वास, पूरा है विश्वास,
हम चलेंगे साथ-साथ एक दिन।
हम होंगे कामयाब,
हम होंगे कामयाब,
हम होंगे कामयाब, एक दिन।

● गिरिजाकुमार माथुर

हमारा ऊंचा रहे निशान

वीरो की सन्तान,
हमारा ऊंचा रहे निशान।
ऊंचा रहे निशान,
हमारा ऊंचा रहे निशान।

आगे बढना काम हमारा,
ऊपर चढना धर्म हमारा,
टकराते हैं महाकाल से अपना सीना तान!
हमारा ऊंचा रहे निशान!
ऊंचा रहे निशान, हमारा ऊंचा रहे निशान!

जब कोई आगे आएगा,
चूर-चूर वह हो जाएगा,
हाथो मे है बिजली आखो मे आंधी तूफान।
हमारा ऊंचा रहे निशान।
ऊंचा रहे निशान, हमारा ऊंचा रहे निशान!

सीमा पर चढ आने वालो,
सोया शेर जगाने वालो,
भारत का बच्चा बच्चा है फौलादी चट्टान।
हमारा ऊंचा रहे निशान।
ऊंचा रहे निशान, हमारा ऊंचा रहे निशान।

● विनोद रस्तोगी

हर व्यक्ति हिमालय बन जाए !

हर शक्ति हिमालय बन जाये !

हर व्यक्ति हिमालय बन जाये।
किस किस को लाघेगा दुश्मन ?
हम खडे हुए, दुश्मन आए,
हर व्यक्ति हिमालय बन जाए।

भारत पर रिपु की लगी दीठ,
जब हर घर होगा शक्ति पीठ
हर नर का सीना तन जाए,
हर व्यक्ति हिमालय बन जाए।

कैसी क्षण दो क्षण की देरी ?
हर सास बने अब रणभेरी।
सैनिक को रण ककड भाये,
हर व्यक्ति हिमालय बन जाए।

कस कमर करे अभिमान देश,
हम सबका तन-मन प्राण देश।
यह देश रहे, जीवन जाये,
हर व्यक्ति हिमालय बन जाये।

● नरेन्द्र शर्मा

हिन्द का जवान, लाख-लाख के समान है

हिन्द का जवान, लाख-लाख के समान है।

आंधियो से, बिजलियो-बवडरो से यह बना,
बाढ से अगार से, ममदरो से यह बना,
देश की कमान से
चला अमोघ वाण है।

यह चला कि जलजलो का एक काफिला चला,
दमित-शौर्य जय विजय का एक सिलसिला चला
यह हमारे रक्त का
प्रलयभरा उफान है।

यह हसा बहार मुस्करा उठी, सहर हुई,
कि भौं तनी गई सो मौत दुश्मनो के सर हुई,
हिन्द का झुके न जो
बुलन्द वह निशान है।

हमको इस पै नाज है, सपूत यह महान है,
इसकी गोद मे खिला गुलाब-सा जहान है,
यह हमारी आन-बान-
शान-स्वाभिमान है।

● गिरिधर गोपाल

हर व्यक्ति हिमालय बन जाए !

हर शक्ति हिमालय बन जाये !

हर व्यक्ति हिमालय बन जाये !
किस किस को लाघेगा दुश्मन ?
हम खड़े हुए, दुश्मन आए,
हर व्यक्ति हिमालय बन जाए।

भारत पर रिपु की लगी दीठ,
जब हर घर होगा शक्ति-पीठ
हर नर का सीना तन जाए,
हर व्यक्ति हिमालय बन जाए।

कैसी क्षण दो क्षण की देरी ?
हर सास बने अब रणभेरी।
सैनिक को रण ककड भाये,
हर व्यक्ति हिमालय बन जाए।

कस कमर करे अभिमान देश,
हम सबका तन-मन-प्राण देश।
यह देश रहे, जीवन जाये,
हर व्यक्ति हिमालय बन जाये।

● नरेन्द्र शर्मा

हिन्द का जवान, लाख-लाख के समान है

हिन्द का जवान, लाख-लाख के समान है।

आंधियों से, बिजलियों-बवंडरों से यह बना,
बाढ़ से अंगार से, समंदरों से यह बना,
देश की कमान से
चला अमोघ बाण है।

यह चला कि जलजलों का एक काफिला चला,
शक्ति-शौर्य जय-विजय का एक सिलसिला चला
यह हमारे रक्त का
प्रलयभरा उफान है।

यह हंसा बहार मुस्करा उठी, सहर हुई,
कि भौं तनी गई सो मौत दुश्मनों के सर हुई,
हिन्द का झुके न जो
बुलन्द वह निशान है।

हमको इस पै नाज है, सपूत यह महान है,
इसकी गोद में खिला गुलाब-सा जहान है,
यह हमारी आन-बान-
शान-स्वाभिमान है।

● गिरिधर गोपाल

हिमगिरि पुकार उठा

स्वतन्त्रता की अमर ज्योति है—
हिमगिरि उठा पुकार !

आजादी की रजत जयंती,
स्वागत है, आओ गुणवती ।

आज हमारे मधु सपने सब—
खड़े सत्य के द्वार !

कंठ-कंठ जीवन का गायन,
सांस-सांस युग का आवाहन ।

छलक छलक उठता अन्तर-घट—
रिमझिम सरस फुहार !

आज फले बलिदान हमारे,
मन्त्र-पूत अभियान हमारे ।

काल-जयी संकल्पों का रथ—
सिद्धि बनी अधिकार !

● चन्द्रप्रकाश वर्मा

हिमालय खडा रहेगा

सबसे ऊंची विजय पताका लिये, हिमालय खडा रहेगा।
मानवता का मानबिन्दु यह, भारत सबसे बडा रहेगा।

विन्ध्या के चट्टानी पथ पर, रेवा की यह गति तूफानी,
शत-शत वर्षों तक गाएगी, जीवन की संघर्ष-कहानी,
इसके चरणो मे नत होकर, हिन्द महोदधि पडा रहेगा।
भारत सबसे बडा रहेगा।

गगा-यमुना घर से निकली, जहा एक होकर बहने को,
जहा प्रकृति के पास रहा है, सदा पुरुष से कुछ कहने को
उस भारत मे पराक्रमो का प्यारा झण्डा गडा रहेगा।
भारत सबसे बडा रहेगा।

जिसकी मिट्टी मे पारस है, स्वर्ण-धूलि उस बगभूमि की,
पचनदो के फव्वारे से, सिंची बहारे पुण्य भूमि की,
शीर्ष-बिन्दु श्रीनगर सिन्धु तक, सेतुबन्ध भी अडा रहेगा।
भारत सबसे बडा रहेगा।

जिस धरती पर चन्दा सूरज, साझ-सकारे नमन चढाते,
षड्-ऋतु के सरगम पर पछी, दीपक और मल्हार सुनाते,
वही देश-मणि मा-वसुधा के हृदय-हार मे जडा रहेगा।
भारत सबसे बडा रहेगा।

हे जन्म-भूमि भारत

हे जन्म भूमि भारत, हे कर्मभूमि भारत,
हे वन्दनीय भारत, अभिनन्दनीय भारत,
जीवन सुमन चढ़ाकर, आराधना करेंगे,
तेरी जनम जनम भर, हम वन्दना करेंगे।
हम अर्चना करेंगे।

महिमा महान तू है, गौरव निधान तू है,
तू प्राण है हमारी जननी समान तू है,
तेरे लिए जिएगे, तेरे लिए मरेंगे,
तेरे लिए जनम भर, हम साधना करेंगे।
हम अर्चना करेंगे।

जिसका मुकुट हिमालय, जग जगमगा रहा है,
सागर जिसे रतन की, अंजलि चढा रहा है,
वह देश है हमारा, ललकार कर कहेंगे,
उस देश के बिना हम, जीवित नहीं रहेंगे।
हम अर्चना करेंगे।

जो संस्कृति अभी तक, दुर्जय-सी बनी है,
जिसका विशाल मन्दिर, आदर्श का धनी है,
उसकी विजय ध्वजा ले, हम विश्व में चलेंगे,
संस्कृति सुरभि पवन बन, हर कुंज मे बहेंगे।
हम अर्चना करेंगे।

शाश्वत स्वतन्त्रता का जो दीप जल रहा है
आलोक का पथिक जो अविराम चल रहा है,
विश्वास है कि पलभर, रुकने उसे न देंगे,
उस ज्योति की शिखा को, ज्योतित सदा रखेंगे।
हम अर्चना करेंगे।

● अज्ञात

हे पथिक ! संभलकर

यह है तुलसी की जन्म-भूमि,
यह है तुलसी की धराधाम।
जिसकी रजकण के अणु-अणु मे,
बिखरी उनकी गाथा प्रकाम।

हे पथिक ! संभलकर चलो यहा,
हे पथिक ! चलो निज पाव थाम।
धूमिल न कहीं पड जाय धूलि,
से उनकी कोई स्मृति ललाम।

उन चरणो पर जो चले सदा,
खोजा न कही पथ पर विराम।
उन चरणों पर जो चले सदा,
जब तक न मिल गया इष्ट राम।

उन चरणो पर, जी करता है,
लोटू बनकर पतदल प्रणाम।
आश्चर्य नही मेरा वदन,
महके चदन बन याम-याम।

● सोहनलाल द्विवेदी

हे भारत माता, नमस्कार

हे भारत माता, नमस्कार ! तेरे कण कण से हमे प्यार !

तेरी नदिया गगा, यमुना, कृष्णा औ' कावेरी,
चबल, ब्रह्मपुत्र-सब मिलकर गाती हैं जय तेरी।
धवल हिमालय मुकुट और विन्ध्याचल तेरा कठहार !

तेरा जल अमृत-जसा है, तेरी मिट्टी है सोना।
तेरे हित ही जीना हमको, तुझ पर हो बलि होना !
तेरे चरणो को सदियो से सागर रहा पखार !

● शकरलाल सक्सेना

जनगणमन-अधिनायक जय हे

जनगणमन-अधिनायक जय हे भारत-भाग्य-विधाता।
पंजाब सिंधु गुजरात मराठा द्राविड उत्कल बंग,
विंध्य हिमाचल यमुना गंगा उच्छल जलधि तरंग।
तव शुभ नामे जागे, तव शुभ आशिष मागे,
गाहे तव जयगाथा।
जनगण मंगलदायक जय हे भारत-भाग्य-विधाता।
जय हे, जय हे, जय हे, जय जय जय, जय हे।

अहरह तव आह्वान प्रचारित, शुनि तव उदार वाणी
हिंदू, बौद्ध, सिख, जैन, पारसी, मुसलमान, क्रिस्टानी,
पूरब पश्चिम आसे, तव सिंहासन-पाशे,
गाहे तव जयगाथा।
जनगण-ऐक्यविधायक जय हे, भारत-भाग्य-विधाता।
जय हे, जय हे, जय हे, जय जय जय, जय हे।

पतन अभ्युदय-बंधुर पन्था, युग-युग धावित यात्री,
हे चिरसारथि, तव रथचक्रे मुखरित पथ दिन रात्री।
दारुण-विप्लव माझे, तव शंखध्वनि बाजे,
संकट-दुःखत्राता।
जनगणमन पथपरिचायक जय हे भारत भाग्य विधाता।
जय हे, जय हे, जय हे, जय जय जय, जय हे।

घोर तिमिर घन निविड निशीथे पीड़ित मूर्च्छित देशे।
जाग्रत छिल तव अविचल मगल नतनयने अनिमेषे।
दु:स्वप्ने आतके, रक्षा करि ले अके,
स्नेहमयी तुमि माता।
जनगण दु:खत्रायक जय हे भारत-भाग्यविधाता।
जय हे, जय हे, जय हे, जय जय जय, जय हे।

रात्रिप्रभातिल, उदित रविच्छवि पूर्व-उदयगिरिभाले,
गाहे विहगम, पुण्य समीरण नवजीवन रस ढाले।
तव करुणारुण-रागे, निद्रित भारत जागे।
तव चरणे नत माथा।
जय जय जय हे, जय राजेश्वर, भारत-भाग्यविधाता।
जय हे, जय हे, जय हे, जय जय जय, जय हे।

● रवीन्द्रनाथ ठाकुर

वन्दे मातरम्

सुजला सुफला मलयज शीतलाम्
शस्यश्यामला मातरम् ।

शुभ्र- ज्योत्सना पुलकित- यामिनीम्
फुल्लकुसुमित- द्रुमदलशोभिनीम्
सुहासिनी सुमधुर भाषिणीम्
सुखदा वरदा मातरम् ।

त्रिंशकोटिकण्ठ-कलकल-निनाद कराले
द्वित्रिंशकोटिभुजैधृ्त खरकरवाले,
अबला केन मा एत बले
बहुबलधारिणी नमामि तारिणीम्
रिपुदल वारिणी मातरम् ।

तुमि विद्या तुमि धर्म्म,
तुमि हृदि तुमि मर्म्म,
त्वं हि प्राणा शरीरे ।
बाहुते तुमि मा शक्ति,
हृदये तुमि मा भक्ति ।
तोमारिप्रतिमा गढ़ि मदिरेमदरे ।

त्वं हि दुर्गा दशप्रहरणधारिणी
कमला कमल-दल विहारिणी
वाणी विद्यादायिनी नमामि त्वाम्
नमामि कमला अमला अतुलाम्
सुजला सुफला मातरम्,
वन्दे मातरम् ।

श्यामला सरला सुस्मिता भूषिताम
धरणी भरणी मातरम् ।

● बंकिमचन्द्र चटर्जी

सरस्वती वन्दना

या कुन्देन्दु तुषार हार धवला,
या शुभ्र वस्त्रवृता,
या वीणा-वरदण्ड-मंडित-करा
या श्वेत पद्मासना।
या ब्रह्माऽच्युत शंकर प्रभृतिभिर,
देवैः सदा वंदिता,
सा मा पातु सरस्वती भगवती
निःशेष जाड्यापहा।

ओ मा मेरी

ओ मा मेरी, आज प्यार से, वीणा को झकार दे,
छन्द-निबन्ध-प्रबन्धो वाला वाणी को शृगार दे।
ओ मा मेरी ।

ऐसी ज्योति जगा दे उर मे, जन जन का उद्धार हो
गगाजल की पावनता का रग-रग मे सचार हो।
चारो वेद कण्ठ पर बैठें, वीणा के वरदान से,
पूनम वाला चाद-चादनी बाटे यश के गान से।
शब्द शब्द हो अक्षत चदन, अरिदल को अगार दे,
छन्द निबन्ध-प्रबन्धो वाला वाणी को शृगार दे।
ओ मा मेरी ।

सरगम गाए गीत युद्ध के, अभिनव दीपक राग मे,
'युद्धम् देहि' जगा दे मा तू लोरी और विहाग मे।
तेरे यश की ज्योति डुबो दे, हर दुश्मन के मान को,
रक्तिम् ज्योति उपा मे आए, वीरो के बलिदान को।
अदभुत ज्योति जगा दे मा, तू भावो को सचार दे,
छन्द-निबन्ध-प्रबन्धो वाला वाणी को शृगार दे
ओ मा मेरी ।

हिन्दू-मुस्लिम-सिक्ख-ईसाई, सब भारत मे एक हैं,
सब ही तेरे पुत्र शारदा, सब नीयत के नेक हैं।
सबका कर कल्याण आज तू, सबको शुद्ध विचार दे,
दुश्मन को कपाली बन जा, ओ वरदानी शारदे।
ओ मा मेरी ।

भारती मा, आरती लो !

हीन होकर ताल तुक से,
कौन-सी मैं गत बजाऊ ।
द्वार पर मा, मैं तुम्हारे,
कौन-से स्वर गुनगुनाऊ ।
मा, विवादी स्वर न देखो, भावना लो ।
भारती मा, आरती लो, वदना लो ।

हैं सुमन निज कल्पना के,
विश्व ने तुमको चढाए ।
लोचनो की सीपियो से,
स्नेह के मोती लुटाए ।
मा, प्रभाती के स्वरो मे अचना लो ।
भारती मा, आरती लो, वदना लो ।

अगुलिया थक-सी गई हैं,
हो गई वीणा पुरानी ।
तार टूटे घिस चुके हैं,
हो गई है मौन वाणी ।
मौन मेरी भावना लो, साधना लो ।
भारती मा, आरती लो, वदना लो ।

शारदे, वरदे, कृपा कर,
भक्ति का तुम आज वर दो ।
कण्ठ मे मृदु मीड देकर,
डर तिमिर का दूर कर दो ।
भारती मा, स्नेह-डूबी, मौन कवि की कल्पना लो ।
भारती मां, आरती लो, वदना लो ।

● सुशील मिश्रा

मा शारदे

मा शारदे !
हंसवाहिनी, वीणापाणी, ब्रह्मभामिनी,
कलास्वामिनी जग तार दे, मा शारदे !

हृदय-गगन में, मर्त्य-भवन में,
मुक्त-पवन में, जन-जीवन में,
जन-जीवन में ज्ञान भर दे, मा शारदे !

ज्ञानहीन में, ध्यानहीन में,
बुद्धिहीन, विवेकहीन में,
रश्मि कर दे, मा शारदे, मा शारदे !

मातृ-वन्दना

मा, तू प्रेम सुधा बरसा दे !
बूंद-बूंद से सूखी कलियां, मन की आज खिला दे !

ओत-प्रोत हो जीवन-धारा, तेरे दिव्य मिलन के द्वारा।
पल पल, छिन छिन वत्सलता से, अमृत-रस बरसा दे !

दिव्य कर्म में, दिव्य वचन में, मन-मानस के कुंज-कुंज में।
सौरभ बनकर प्रेममयी मा, एक बार मुसका दे !

स्नेहामृत का पेय पिला दे, जीवन को आनन्द बना दे।
अन्तस्तल की अमर ज्योति में, अपनी छवि दिखला दे !

● स्वामी रामानन्द

वाणी-वन्दना

अर्चना तुम, वन्दना तुम, शब्द तुम, स्वर-साधना तुम !
सरस्वति साहित्य-सौष्ठव की स्वय अभिव्यजना तुम !

विश्वमोहिनि, हसवाहिनि, अखिल जग की साधना तुम,
कमल आसनि, अमल हासिनि, विमल मग की योजना तुम !

साधना-हित तन समर्पित,
योजना हित मन समर्पित,

क्रिया तुम, कर्तव्य तुम, कर्मण्य की कुल-कामना तुम !
नेह अवलबन जगत् का, विश्व धारित भावना पर,
भावना से शब्द औ, स्वर-योग सभव सर्जना पर।

भावना पर स्वप्न अर्पित
योजना पर यत्न अर्पित,

नृत्य का शुभ लास्य हो तुम, गान की सुधि कल्पना तुम।
नाद हो तुम, ताल हो तुम, मद्रमध्यम-तार हो तुम ।
षडज भी, गधार भी तुम, प रि सरस औ, सुखद नी-ध म।

ठाठ हो तुम, तुम्ही सप्तक,
वादि और विवादि रजक,

राग हो सपूर्ण-षाडव, ग्राम हो तुम, मूर्च्छना तुम !

● रवि शुक्ल

वीणावादिनि वर दे

वर दे, वीणावादिनि वर दे।
प्रिय स्वतन्त्र रव अमृत मन्त्र नव,
भारत मे भर दे! वर दे

काट अन्ध उर के बंधन स्तर,
बहा जननि ज्योतिर्मय निर्झर।
कलुष-भेद तम हर, प्रकाश भर,
जगमग जग कर दे! वर दे

नव गति, नव लय, ताल छन्द नव,
नवल कण्ठ नव जलद मन्द्र नव।
नव नभ के नव विहगवृन्द को,
नव पर, नव स्वर दे, वर दे

● सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

मधुमास-गीत

हरी-भरी मेरी धरती पर, फूलो का मधुमास है।
नयी उमर की नयी फसल का, नया-नया विश्वास है।

रोज सवेरे सूरज आकर, नयी किरण चमकाता है,
चन्दा मामा रात-रात-भर, आगन मे मुस्काता है।
गगा-यमुना की धरती पर, हिम मडित कैलाश है।
नयी उमर की नयी फसल का, नया नया विश्वास है।

द्वार-द्वार पर कोयल काली, गीत खुशी के गाती है।
धीमी-धीमी हवा हमारे, तन-मन को छू जाती है।
गौतम-गान्धी की धरती पर, सपनो का मधुमास है।
नयी उमर की नयी फसल का नया-नया विश्वास है।

मधुर सत्य की मोहक लहरी, विजय विभा बन जाती है,
मन्द सुगन्ध-भरी चन्दन-सी, माटी रूप सजाती है।
वीर जवाहर की धरती पर, नव युग की नव-आस है।
नयी उमर की नयी फसल का, नया नया विश्वास है।

● वेदव्यास

लो वसंत आ गया

बागों का फूलों से हो गया सिंगार,
लो वसंत आ गया !

तन को सिहराती-सी, सन्सन्कर वात चले
पीले-से पातों की जमकर बरसात चले।
सरसों के खेत हँसे, चमके जलधार,
लो वसंत आ गया !

नभ की परछाईं अब लहरों पर झूम उठी,
भँवरों की सेना भी, सुमनों पर घूम उठी।
सूरज की किरणों ने ले लिया निखार,
लो वसंत आ गया !

आमों की डार-डार हल्दी सी पियराई,
कण-कण में रंग देख कोयल भी ललचाई।
उमगी जब हूक हुआ कूक में उभार,
लो वसंत आ गया !

तम की चादर उतार, आया है सुखद भोर,
नूतन सा लगता है जग का हर ओर-छोर।
मन के इकतारे पर छा गई बहार,
लो वसंत आ गया !

● महेशकुमार मिश्र

वसन्त-गीत

खेतो की मेड-मेड फूलो से लदे पेड,
जल मे शत कमल भरे आया वसन्त रे।

आमो की पकी बौर, भ्रमर चले दौड दौड।
सुरभी से उठा पवन, चमक उठा नील गगन।
वासन्ती किरन-किरन टोली प्रिय तरल-सघन,
गोरी का गान खिला, देख खडा कन्त रे।

पनघट की छाया रे, कौन खीच लाया रे।
कन कन मे बिखर-बिखर गूज रहा वशी-स्वर।
बोल उठी कोयलिया, झनक उठी पायलिया
किसका जय घोष करें, शत-सहस्र कठ रे।

मूगे से रक्त-बरन कोमल प्रिय धरे चरन।
गीतो के बोल उठे, नभ मे जा लुटे लुटे।
वेणी मे फूल सजा, कहती कुछ लजा-लजा,
धरती से आज विदा लेता हेमन्त रे।

● छैलबिहारी गुप्त

आई वासती वहार

पछी अव चहक उठे,
कली कुसुम महक उठे
वहक उठी भोर की वयार।
दहक उठी किशुक की रतनारी कलिया,
लहक-गहक सरसो की केसरिया डार।
आई वासती बहार।

अलसी पर फूल रहा,
अम्बर आ भूल रहा।
धूल रही विविध रूप धार।
भूल-भूल गूज रहा कुज-कुज भवरा,
कूल कूल किरणो की बध रही कतार।
आई वासती बहार।

अबुआ पर बौर उठे,
सिरसो पर चौर उठे।
मौर उठे महुओ के भार।
भोर उठी शाख शाख, लाख लाख पात उठे,
छोर-छोर छिटकी कचनार।
आई वासती बहार।

प्रेम-रग डारो

फागुनी बयार चली, झूमकर पुकार चली,
धरनी पर रगों की पालकी उतारो।
होली है, होली रे, प्रेम-रग डारो।

द्वेष दम्भ, उग्रता की फूक धरी होली,
कटुता को दूर करो बोल मधुर बोली।
हर कोई अपना हो, रग-भरा सपना हो,
हिल-मिलके रग मलो, देह से पुकारो।
होली है, होली रे, प्रेम-रग डारो।

विविध प्रात, विविध रग, किन्तु एक झोली,
एक हाथ टेसू-रग एक हाथ रोली।
मौसम करता क्रिलोल, फूलो के रग घोल,
समता की पिचकारी रग-भरी मारो।
होली है, होली रे, प्रेम-रग डारो।

योजना की राधा को मेहनत का श्याम दो,
पावो को थिरकन दो, हाथो को काम दो।
आलस की होली हो, रग से ठिठोली हो,
ऐसा कुछ काम करो, देश के दुलारो।
होली है, होली रे, प्रेम-रग डारो।

होठ हो गुलाब से, सपने हो धानी,
फागुन के रग रचे फसलो की धानी।
उम्र पर शबाब हो, आप खुद जवाब हो,
धरती के दुलहन के रूप को निखारो।
होली है, होली रे, प्रेम-रग डारो।

होली आई रे

होली आई रे, आई रे, होली आई रे !
तन-मन मे उमग भर लाई रे !

रग बरस रहा है, रस बरस रहा,
जन-जन का मगन मन हरष रहा,
नव रगो के कलश भर लाई रे !

नवनीत-से गाल, गुलाल-भरे,
गोरी झाक रही खिडकी से परे,
चोरी-चोरी से नजर टकराई रे।

रण-भूमि मे रग बसत का था,
पथ तेरा सिपहिया अनत का था,
तुझे मिली विजय सुखदाई रे।

● मधु

जय हिंदी

जय हिन्दी, जय देवनागरी।

जय कबीर-तुलसी की वाणी,
मीरा की वाणी कल्याणी।
सूरदास के सागर-मन्थन—
की मणिमंडित सुधा गागरी।
जय हिंदी, जय देवनागरी।

जय रहीम-रसखान-रस-भरी,
घनानन्द मकरन्द- मधुकरी।
पदमाकर, मतिराम, देव के—
प्राणों की मधुमय विहाग री।
जय हिन्दी, जय देवनागरी।

भारतेन्दु की विमल चांदनी,
रत्नाकर की रश्मि मादनी।
भक्ति-स्नान और कर्म-क्षेत्र की,
भागीरथी भुवन-उजागरी।
जय हिन्दी, जय देवनागरी।

जय स्वतन्त्र भारत की आशा,
जय स्वतन्त्र भारत की भाषा।
भारत-जननी के मस्तक की—
श्री-शोभा-कुंकुम-सुहाग री।
जय हिन्दी, जय देवनागरी।

● मगन अवस्थी

हिन्दी

भारत-जननी एक हृदय हो!
एक राष्ट्रभाषा हिन्दी मे, कोटि-कोटि जनता की जय हो!

स्नेह-सिक्त मानस की वाणी, गूंजे गिरा यही कल्याणी,
चिर उदार भारत की संस्कृति, सदा अभय हो, सदा अजय हो!

मिटे विषमता, सरसे समता, रहे मूल मे मीठी ममता,
तमस्-कालिमा को विदीर्ण कर जन-जन का पथ ज्योतिर्मय हो!

जाति, धर्म, भाषा, विभिन्न स्वर, एक राग हिन्दी मे सजकर,
झंकृत करें हृदय-तन्त्री को, स्नेह-भाव प्राणो मे लय हो!

● रामेश्वरदयाल दुबे

बापू, तुम्हे प्रणाम

स्वतन्त्रता के अमर पुजारी, सत्य-अहिंसा के व्रतधारी।
बापू, तुम्हें प्रणाम—बापू, तुम्हे प्रणाम।

देश-प्रेम का पाठ पढ़ाने, दुखियों का दुख दर्द मिटाने।
प्राण देश के लिए दे दिए और गए सुर-धाम।
बापू, तुम्हें प्रणाम—बापू, तुम्हे प्रणाम।

लड़ते रहे न्याय के हित में, अपना सुख छोड़ा परहित में।
श्रम-सेवा का दीप तुम्हारा, जले सदा अविराम।
बापू, तुम्हे प्रणाम—बापू, तुम्हे प्रणाम।

पद चिह्नों पर चलें तुम्हारे, हमें शक्ति दो, बापू प्यारे।
कठिनाई से लड़ना सीखें, जानें शीत न घाम।
बापू, तुम्हे प्रणाम—बापू, तुम्हे प्रणाम।

● बाबूलाल शर्मा 'प्रेम

मेरी चिट्ठी तेरे नाम

सुन ले 'बापू' ये पैगाम, मेरी चिट्ठी तेरे नाम।
चिट्ठी मे सबसे पहले लिखता तुझको राम राम।
सुन ले बापू' ये पैगाम!

काला धन, काला व्यापार,
रिश्वत का है गरम बजार।
सत्य-अहिंसा करे पुकार,
टूट गया चरखे का तार।

तेरे अनशन सत्याग्रह के,
बदल गए असली बरताव।
एक नयी विद्या सीखी है,
जिसको कहते हैं 'घेराव'।

तेरी कठिन तपस्या का यह,
कैसा निकला है अजाम!
सुन ले 'बापू' ये पैगाम!

प्रान-प्रात से टकराता है,
भाषा पर भाषा की लात।
मैं पजाबी, तू बगाली,
कौन करे भारत की बात।

तेरी हिन्दी के पावो मे,
अगरेजी ने बाधी डोर।
तेरी लकडी ठगो ने ठग ली,
तेरी बकरी ले गए चोर।

साबरमती सिसकती तेरी,
तड़प रहा है सेवाग्राम ।
सुन ले 'बापू' ये पैगाम ।

'राम-राज्य' की तेरी कल्पना,
उड़ी हवा मे बनके कपूर ।
बच्चे पढ़ना लिखना छोड़,
तोड़-फोड़ मे हैं मगरूर ।

नेता हो गए दल-बदलू,
देश की पगड़ी रहे उछाल ।
तेरे पूत बिगड़ गए 'बापू'
दारूबंदी हुई हलाल ।

तेरे राजघाट पर फिर भी,
फूल चढ़ाते सुबहो-शाम ।
सुन ले 'बापू' ये पैगाम ।

● भरत व्यास

युगावतार

कौन युग की पिपासा लिये चल रहा ?

वज्र-सी अस्थियां पुष्प सा मन लिये,
राष्ट्र की कामना के लिए तन लिये,
त्याग ही के लिए है परम धन लिये,
प्राण तक होम देने को अविचल रहा।

इसके पद-चिह्न पर ही पदासीन हो,
लक्ष्य पाएंगे बस पूर्ण स्वाधीन हो,
हो चुकी है बहुत लुट, चुके दीन हो,
कार्य अन्याय का है, हमें खल रहा।

प्रणयेश शुक्ल

आ गया बच्चो का त्योहार

आ गया बच्चो का त्योहार !

सभी मे छाई नयी उमग, खुशी की उठने लगी तरग,
हो रहे हम आनन्द-विभोर, समाया मन मे हर्ष अपार !
आ गया बच्चो का त्योहार !

करें चाचा नेहरू की याद, जिन्होंने किया देश आजाद,
बढाया हम सबका सम्मान, शाति की देकर नयी पुकार !
आ गया बच्चो का त्योहार !

चले उनके ही पथ पर आज, बनाए स्वर्ग-समान समाज,
न मानें कभी किसी से बैर, बढाए आपस मे ही प्यार !
आ गया बच्चो का त्योहार !

देश-हित दें सब-कुछ ही त्याग, कर भारत मा से अनुराग,
बनाए जन सेवा को ध्येय, करे दुखियो का हम उद्धार !
आ गया बच्चो का त्योहार !

● विनोदचद्र पांडेय 'विनोद'

चाचा नेहरू

चाचा नेहरू, तुम्हें प्रणाम !

तुमने किया स्वदेश स्वतन्त्र, फूंका देश-प्रेम का मन्त्र,
आजादी के दीवानों में पाया पावन यश अभिराम !
चाचा नेहरू, तुम्हें प्रणाम !

सबको दिया हृदय का प्यार, चाहा जन-जन का उद्धार,
भारत माता की सेवा में, समझ लिया आराम हराम !
चाचा नेहरू, तुम्हें प्रणाम !

पंचशील का गाया गान, विश्व-शान्ति की छेड़ी तान,
दुनिया को माना परिवार, बही प्रेम सरिता अविराम !
चाचा नेहरू, तुम्हें प्रणाम !

पाकर तुम-सा अनुपम लाल, हुआ देश का ऊंचा भाल,
भूल नहीं सकते तुमको हम, अमर रहेगा युग युग नाम !
चाचा नेहरू, तुम्हें प्रणाम !

● विनोदचन्द्र पांडेय 'विनोद'

चाचा नेहरू पुरुष महान्

चाचा नेहरू पुरुष महान् !

भारत-मा के गजदुलारे,
थे सबकी आखो के तारे।
किया देश के लिए उन्होंने तन-मन धन बलिदान !

बापू ने जब बिगुल बजाया,
आजादी का मन्त्र सुनाया।
नेहरूजी ने नायक बनकर किया देश कल्याण !

जात-पात का भेद मिटाया,
सबको चलना साथ सिखाया।
हुआ इन्ही के हाथो, भारत का सब नव-निर्माण !

विश्व-शान्ति का सदा पुजारी,
राजनीति का चतुर खिलाडी।
सारी दुनिया मुक्त कठ से करती है गुणगान !

नेहरू चाचा

सब नेताओं से न्यारे तुम, बच्चों को सबसे प्यारे तुम,
कितने ही तूफान आ गए, लेकिन कभी नहीं हारे तुम।
आजादी की लड़ी लड़ाई, बिना तमचा, बिना तमाचा,
नेहरू चाचा!

हम भारत के भाल बनेंगे, वीर जवाहरलाल बनेंगे,
सीखी तुमसे बहादुरी है, हम दुश्मन के काल बनेंगे।
तुमने जो सपने देखे, साकार करें हम, यह अभिलाषा,
नेहरू चाचा!

● देवव्रत जोशी

नेहरू-स्मृति-गीत

जन्म-दिवस पर नेहरू चाचा, याद तुम्हारी आई।

भारत मा के रखवारे थे, हम सब बच्चों के प्यारे थे,
दया-प्रेम मन में धारे थे।
बचपन प्रमुदित हुआ नेह से, जाग उठी तरुणाई।
जन्म दिवस पर नेहरू चाचा, याद तुम्हारी आई।

सारी दुनिया का दुख मन में, रहे सजोए तुम जीवन में,
पूजित हुए तभी जन-जन में।
दिशा दिशा में मनुज-प्रेम की धवल कीर्ति है छाई।
जन्म दिवस पर नेहरू चाचा, याद तुम्हारी आई।

तुम हर एक प्रश्न का हल थे, बड़े सहज थे, बड़े सरल थे,
शान्ति-दूत अविकल अविचल थे।
विश्व-वाटिका के गुलाब थे, सुरभि अलौकिक पाई।
जन्म-दिवस पर नेहरू चाचा, याद तुम्हारी आई।

जदपि हुए तुम प्रभु को प्यारे, किन्तु सदा ही पास हमारे,
सम्मुख हैं आदर्श तुम्हारे।
उन पर चल कर करें देश दुनिया की खूब भलाई।
जन्म दिवस पर नेहरू चाचा, याद तुम्हारी आई।

● प्रेमदा शर्मा

बाल-दिवस

बाल-दिवस है आज साथियो, आओ खेलें खेल ।
जगह-जगह पर मची हुई खुशियो की रेलमपेल ।

बरस-गाठ चाचा नेहरू की फिर आई है आज,
उन जैसे नेता पर सारे भारत का है नाज ।
वह दिल से भोले थे इतने, जितने हम नादान,
बूढे होने पर भी मन से वे थे सदा जवान ।
हम उनसे सीखे मुसकाना, सारे सकट झेल ।

हम-सब मिलकर क्यो न रचाए ऐसा सुख ससार
भाई भाई जहा सभी हो, रहे छलकता प्यार ।
नही घृणा हो किसी हृदय मे, नही द्वेष का वास,
आखो मे आसू न कही हो, हो अधरो पर हास ।
झगडे नही परस्पर कोई, हो आपस म मेल ।

पडे जरूरत अगर, पहन ले हम वीरो का वेश,
प्राणो से भी बढकर प्यारा हमको रहे स्वदेश ।
मातृभूमि की आजादी हित हो जाए बलिदान,
मिट्टी मे मिलकर भी मा की रक्खें ऊची शान ।
दुश्मन के दिल को दहला, द, डाल नाक-नकेल ।
बाल दिवस है आज साथियो, आओ खेलें खेल ।

● मनोहर प्रभाकर

डॉ० मीना अग्रवाल

जन्म 15 दिसंबर 1946 को हाथरस में।

आधुनिक हिंदी गीतिकाव्य में संगीत-तत्त्व विषय पर आगरा विश्वविद्यालय से पी-एच० डी० की उपाधि प्राप्त।

शोध सदन के दो भागों का संपादन किया। अनेक पत्र-पत्रिकाओं में नारी-जागरण से संबंधित कहानियों व लेखों का प्रकाशन। कई सांस्कृतिक व साहित्यिक संस्थाओं से संबद्ध अतएव, अनेक सांगीतिक कार्यक्रमों का संयोजन किया।

संप्रति रानी भाग्यवती देवी महिला महाविद्यालय बिजनौर के स्नातकोत्तर हिंदी विभाग में प्रवक्ता।

पता 16, साहित्य विहार, बिजनौर (उ० प्र०)।